

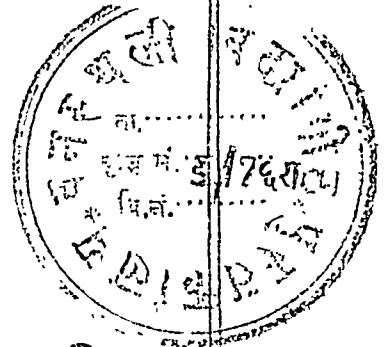
होप्रीन्साथ पुरोहित पुस्तकालय
वनस्थली विद्यापीठ

श्रेणी संख्या 12315

पुस्तक संख्या 12315 (H)

प्राचार्य क्रमांक 12315

सप्तराजस्थान



जिसमें राजपूताने के हालकी
और पिछली तवारीखी और इत्त
जागी हालत बहुत सफाई के साथ
दिखाई गई है

और

उस के इत्तजागों की दुरुस्ती की
बाबत रायें और तजवीजें बताई
गई हैं

विद्याभूषण प्रेस

पुरादावाद में

छपी

सम्बत १९४९

१४९३

Date: Enl

27 MAY 2006

१३९९ - ६५६ ५५ ३५०/१० ३५५ ६५६

श्री श्री देवी उपाध कायस्थ, जोधपुर, जयपुर

DAN:

Accession 12.315

Date of Receipt ✓

जन्तरी सन १८५३	भारवाड का नफा शा
१ जंजीरपंचांग सन १८५३ ई. २ ग्रह प्रज्ञा	ये वह कशा तै चार कर के उम दा का मन पर छापा गया है की-७
३ जन्मपत्री दिखने का कायदा	भारवाड का झूठे ल.
४ सिविल लिस्ट का रवाड	जिन को धर बैठे भारवाड की
५ जोधपुर रेलवे का कायदा टे वि ल मय किरान्या व वक्त	और कद नही वै जकर नम उतल कको मंग वा कर रहे खे मि लाइप
६ मियाद सभा अरु सुकद मातदी वानी राज भारवाड	के हर फो में छापी गई है की मत इसकी ७ है और जो न करे के सा
७ नकशा रसूम दीवानी व इस्था भ्य राज भारवाड	थलेगे तो सिर्फ ७ में ही नो मि ल सके गा -
८ नकशा इस्था भ्य व रायत म सु कात धर रहन नामः चोगला वावलिरवत इजारा व हिदना मायानी व रव शिश नामा	इन्सा फल ग्रह इसमें राजों और बाद शाहों के अच्छे २ इन्सा फल वारी रव की किताबों में से डूब कर लिखे
९ नकशा नम्बर ३ इस्था म्प फुट कर दस्तावेजों का	गये हैं की मत जिलद बंधी हुई किताब की ७ और डाक व्यय ७
१० नकशा नम्बर ४ इस्था म्प आवका री	विद्यार्थी विनोद
११ नकशा तातीलात राज भारवाड	इसमें विद्यार्थी यों के इलम और
१२ भारवाड की रव्यात यानी तवा री खचूंडा जी से दातल जी त	र अकल वदाने के वास्ते अनो रवी रवाते चोज और सभा वातु
१३ मरदुम शुमांरी राज भारवाड के नकशे	री की लिखी गई है की मत ७ और डाक व्यय ७ है -
१४ भारवाड के सायर का महसूल लेने की फहरिस्त	भारवाड के कायून
भारवाड का नकशा जो कि प्रवतक भारवाड का न कशा नही छपा था और लोगों को उसकी बड़ी जरूरत थी इसलि	फौजदारी ७ दीवानी ७ थानेदा री ७ अरवतियारात जागीरदार न ७ जेल खाना ७ कोतेदारा का ७ उगीउकेती के वंदो वस्त का ७ फौ जका ७ खजाने के वंदो वस्त का ७

<p>मारवाड़की रपोटे</p> <p>१ रपोट सालतमामसन १८०३</p> <p>व ८४ जिसमे मारवाड़का सारा</p> <p>हाल दरज है और जिसको देख</p> <p>करना वाकिफ़ आदमी बहुत</p> <p>जल्दी मारवाड़का काम क</p> <p>रनेके लायक होजाता है की</p> <p>मत ५) डाक व्यय ॥</p> <p>२ सन १८०४-०५ की रपोट</p> <p>कीमत १) डाक व्यय ३</p> <p>शुद्धि चित्रावली</p> <p>यह पुस्तक महीनेके महीने</p> <p>३२ पेज छपता है इसमें मशहूर</p> <p>२ राजों और बादशाहोंके इ</p> <p>तिहास तसवीरों समेत छापे</p> <p>जाते हैं और हर एकके पत्रोंका</p> <p>अंक अलग २ रहता है कि जि</p> <p>ससे न्यारी २ किताब हरेक मुल</p> <p>कके राजों और बादशाहोंकी</p> <p>बनसके अबतक इसमें इतना</p> <p>हाल छप चुका है :-</p> <p>१ बाबर हुमायूं और अकबरका</p> <p>२ दिल्लीके बादशाह शेरशा</p> <p>हसूरका हाल और तसवीर</p>	<p>३ ईरानके बादशाह तुहमास</p> <p>काहाल और तसवीर ।</p> <p>४ महाराणा संग्रामसिंघ रत</p> <p>नसिंघ विक्रमाजीत बनबीर</p> <p>उदयसिंघ :-</p> <p>५ जयपुरके राजा पृथ्वीराज</p> <p>शूरणमल जीम रतनसिंघ आ</p> <p>सकरण राजसिंघ नारमल ज</p> <p>गवंतदास सूरसिंघ</p> <p>६ वीकानेरके राव वीकाजी</p> <p>नराजी लवणकरणजीजेतसी</p> <p>कल्याणमलकाहाल, तसवीर</p> <p>७ राजा बीरबलकाहाल और</p> <p>तसवीर ।</p> <p>८ नवाब खानखाना</p> <p>कीमत इस किताबकी ३७-</p> <p>और ३७ ची हैं और अबतक १५</p> <p>किताबें छप चुकी हैं :-</p> <p>पिछली अंतरीयां जिनमें नीज</p> <p>तरी सन १२के आफिक उमदा</p> <p>उमदा बाते हैं</p> <p>१ जल्दरी सन १८८८-८९</p> <p>२ " " " ९०</p> <p>३ " " " ९१</p> <p>कीमत हरेककी ५</p>
--	---

यह अजीब वगरीब रवाब यानी सपने का मजमून जो सो
 येहु ये दिखालों के जगाने के लिये एक चलता हु आ चुट
 का जा है एक दिन हमारे एक बड्डा तकरीर दोस्त ननेता
 बीर (फल) पूछने के वास्ते एक ऐसे जल से में कि जहां हरेक
 इल्म और हरेक हुनर के जानने वाले आदमी मारुद ये व
 यान किया था उन लोगों ने उस को तो यह कह कर कि इस
 सपने से तुमको फायदा पहुंचने के दिवाय्य उस मुल्क का
 भी नला होगा कि जिस पर इसका असर पड़ता है रुख
 सत कर दिया और मुझसे फरमाया कि तू इस सपने को
 लिख कर एक किताब बना ले कि इस से लोगों के बडे र
 मत लब निकलेंगे और यह तकारीब और मुल्की बंदी व
 स्त के बाब में एक बुमदा हिदायत हो जावेगी मुझको अ
 गरचे इतनी लयाकत नहीं कि मैं ऐसे वारीक मजमून
 और नाजुक मान ले पर किताब लिखता मगद पर मेध्वर की
 मदद और उन बुजुर्गों की महरवानी से यह तमाम दिल पसंद
 किस्ता जैसा कि कहने वाले की जवान से सुना था अपनी ज
 वान में लिख लिया पर यह बात जाहिर है कि जो लासीर औ
 र लाकत किसी एक शरीर जवान रीशान खदान शाख्स की
 तकरीर में होती हैं वह तहरीर में नहीं आसवती तो जी जहां त
 क हो सका उस जोश और जोर को कि जो तकरीर के वक्त
 कहने वाले के बयान में था और जिसने तमाम मजलिस
 को दंग कर दिया था हाथ से न जाने दिया चुनाचे तैयार हो जा
 ने के पीछे जब फिर उसी मजलिस में कहने वाले ने सुना

तो पसंद किया और अपने राजा की दीवारों में पढ़ने वालों से घु-
ला चुक के लु धार देने और सज्जनदारों से इस के क पर राय और
रविचन्द्र लिखने का उमेदवार हूँ फ़कतः स. १२ जो जाईसं. १८९

सपना देखने वाला इस तरह कहता हैः-

घोड़ा अरस हूँ और कि मैं एक रात बहुत फ़रागत और
जारा मसे बैठा हुआ तवारीख की किताबों को देख रहा था
और दिल में यह कहता था कि जब यह पंजाब हो जावेगा तो
राजकुल के माफ़िक रिसाले इन्तिजात तम हुन यानी रा-
जनी लिखी किताब को देखूंगा और कई बारी कब लिख
सकूँगी जो अमकल नई सन कामें जाई हैं वे उसके हा-
थिने लिखूंगा और फिर जब उसको फ़रसत पाऊँगा तब
रहस्य छंटा बजेगा तो धर्म धाक् को खोलूंगा और छंटे म-
र तक उसको पढ़ कर अगले छंटे में थका बटूर करके और
रदिल बहलाने के वास्ते अपनी बनाई हुई किताब खुफ-
र रह हानी की तैर करूँगा जिसमें हंसी दिल लगी की ब-
तें सुहल और मजाक की चीजें राधरो के फ़िलवदी है (१)
जरी कों के लती फ़े हकी मों के कौल आलिमों के फ़लाम
जाहिलों के सबाल अकल मंदो के जवाब कुतुमों के त
जकले पंडितों के बचन और विहारी तत सदैव के उमद
होहे कालिदास के अनोखे लौक तुलसीदास के न
जन सूरदास के विष्णु पद अकबर और बीरबल के चटक
लेखुट कुले बहादरो के साके अभीरों की सरदारगी और

(१) फ़िलवदी हा पुरत शेर कह देने को कहते हैं- यानी शीघ्र का चो

दातारंगी के जिस वादशहों के आदल और हुन साफ की नद
 ले दुनिया की अजीब गरीब चीजें और उनके सिवाय वे स
 दवाते कि जो आदमी की आदल और सनभ को जिया
 दा करती हैं बहुत सी किलालों से हुन कर खिरती हैं इसमें ज
 क ११ वज जाये तो कुरसी से उठ कर सैनिके कमरे में चला
 जाऊंगा और हुन छंदर अपने दिल में अच्छे बुरे कामों का हिसा
 ब करके सोरहूंगा मगर अजी तवारी रवका घंटा पूरा नहु अ
 था कि आदली ने बाहर से आकर कहा कि आज के अये हु ये
 लजे अरबदार जो मैं मेज पर रख गया था और वहां से जन
 ने में मंगवा लिये नये थे ये हाजिर हैं हुन होतो अजी पेश क
 संया फजर को हटा खोरी के वक्त लाऊं मैंने ओर शोक के
 वे अरबदार उली वक्त ले लिये उल वक्त वह घंटा उनके
 पढ़ने का नथा तोली वेतवरी से पढ़ने लगा और यहां
 तब पढ़ा किया कि वह मन सूजा जो दिल में बांधा था और वे
 काल कि जिनके वक्त उतर चुके थे सबको चला गया और ११ व
 जगये उस वक्त नींद का ऐसा भों का अना कि वही मेज के या
 स जो शतरंज खेलने की मजहरी बिली थी उस पर लेट गया
 लेटते ही आंख जग गई और नींद ने मेरे और दुनिया के बीच
 में एक छड़ा चारी परदा डाल दिया जिसकी गफलत का पर
 दा कहना चाहियो इतने में क्या देखता हूं कि न वह बाग है और
 न वह मकान है एल इराबने अंगल में पड़ा हूं तले जमीन ऊ
 पर आसमान है बज्र जिधर जानी है कोसो लक मैदान है चारों
 तर फ अंधेरे का काला काला परदा कत पड़ा हु अहं हेरान हूं कि

अकलने ने यह बातें सुन कर कहा कि जो हीलाया वह तो
 हो गया तुम इत्थर का नाम लो और जिधर तुम्हारा मन चले
 उधर चलो कि इस सुनसान जंगल से निकल कर किसी आ
 वादी में तो पहुंचें मैंने कहा चलें तो किधर चलें अंधेरी रात
 है रस्ता मालूम नहीं घर से कभी अंधेरे उजाले में बाहर नहीं
 निकला था बगैर मशाल और रोशनी के चांदनी पर ची
 रुधम नहीं रखा था यहां जंगल बयाबान है दो सोंतक बैराना
 है और बैराने में सौ तरह की आफतें होती हैं शेर और चीते ऐसे
 ही कामों में रहते हैं नृत और घेत का दासा इसी किसम के जंग
 लों में होता है काली बलायें जो मुसाफिरो को बहकाया कर
 ती हैं इन्हीं बयाबानों में फिरा करती हैं -

अकलने ने जबाब दिया कि बे मोत तो कोई नहीं भरता शेर
 और चीते भी जब ही मारते हैं कि जब परमात्मा का हुक्म होता
 है नहीं तो किसी का मकदूर नहीं कि किसी को सतावे और नृ
 त घेत बगैर खयाली खलकत कारवाफ करना निरीना
 दानी और बेवकूफ हैं -

अनी ये बातें हो रहीं थी कि बुरसे हवा के भोंके में आग की
 सी एक चमक दिख जाई दी अकलने ने कहा कि जहां यह आ
 ग चमकती है वहां चलो कुछ न कुछ आवादी होगी मैंने दा
 वा कि इस जंगल बयाबान में आवादी कहां से जाई कहीं को
 ई कौतुक नृत घेतों का न हो -

अकलने ने मुंभ लाकर कहा कि तुमने फिर खयाली ख
 लकत का नाम लिया और औरतों की तरह हिम्मत धारने लगे

और समझें कि फजीला आंसे उरते हैं जिनका जाहिर में कुछ भी बज्र नहीं है और न आज तक उग को किसी ने आंसे से देखा है :-

गरजा कि मैं अकल के कहने से पतंगे की तरह राशनी की तरफ रवाने हुआ अग्ररूपे अंधेरे को दृष्ट करने जो काले नाग की तरह एक काली बजावन कर डराता था रोश के चिराग गुल है गये थे और खयाली खलकाल के खोफ की ऐसी कुछ हवा बंध गई थी कि बदन का साथ ही उस अंधेरी रात में आंसे से छुप गया था मगर मैं अज्ञान के धमकाने से लाचार और उम्मेद के दिग्बदलने से होशियार होकर उस जंगल में कि जो समंदर सा फौसोत फौल हुआ था हात पांर मारता था और बार बार यह और पढ़ता था :-

अंधेरी रात है लहरों का डर है - । और एक बजावन करती चम में पड़ो है - ।
 जल है ताहना तहाल दे लो गन्ना । कि जो दरया से उतर कर किमा नाने
 रेणर पहुंच गये हैं -
 उस फौशनी की हासत में अकल मेरी अगवा थी और आबज
 जो दिल के धड़कने से पैदा होती थी वही गोया मेरे पांर की आह
 टपी राशनी का चिलका नजर तो बहुत ही दूरी पर आता था मग
 र मैं इस तेजी से लपका हूँ उस तक जा पहुँचा कि गोया जमी
 न और आसमान के मालिक ने मेरी बवतः और थकावट पर र
 हस कर जमीन की डोरी खेंच दी या भिरी चाल में बिजली और
 हवा की तेजी रबदी खैर कुछ ही हो जब मैं पास पहुँचा तो रोश
 नी की यह कसरत देखी कि चांद और सूरज को शरमाती थी
 जमीन पर दूर तक ऐसा छिड़काव लगा हुआ था कि उस ऊजड़

जंगल में कलकत्ते की बंजी सड़क कामजा आता था डैरे तंबू दूर तक बराबर रखे थे उनमें भरवमली फरश बिछे थे और बानाती परदे पड़े थे हवामें इतनी खुशबू बसी हुई थी कि मानो खुशबू की हवा बंधी हुई थी मैंने हर तरफ भांफताक कर देखे वामगर आदमी का निशान नाम को भी न पाया तब तो दिल को बड़ा ही खटका हुआ कि यह क्या तिलिस्मा तहै कहीं वही तो नहीं है कि जिसको सुसलमान शाही की मजलिस कहते हैं हिन्दु जुभारों का दरबार मानते हैं या परयों की हाजिरा तहै या धीरों की करामात है या किसीने मसान जगाया है या कोई जिन्नात का बादशाह यहां आया है या जंगली चूतों की कारस्तानी है या छलावों की महमानी है गरज कुछ ही हो और अगर इनमें कुछ भी नहीं तो नसही मगर यह तमाशा फिर भी इज्जत से रखा नहीं है मैं तो पहिले ही कहता था कि ऐसे कमांड में आवादी कहां से आई मगर अकलने नमाना और वह अगर चे अंधेरे में से निकाल कर उजाले में लाई कि न ऐसे डरा नेवाले उजाले से तो वही अंधेरा अच्छा था कि जिसमें ऐसे कौतुक तो नजर नहीं आते थे -

अकलने कहा कि फिर तबे हूदा बातें बकने लगा और फिर खयाली खलकत का जिक्र लाया इतना नहीं जानता कि जो चीज खुद ही वजूद नहीं रखती वह डैरे और खेमे कहां से पैदा कर सकती है तूदी वारसा खड़ा क्या है हवा की तरह हथर उधर चल फिर के देखे शायद किसी -

शरवस के मिल जाने से तेरी यह है रानी दूर हो जावेगी मैंने यह
 सुनकर दिलमजबूत किया और एक बड़े डेरे की तरफ चला कि
 रोब पहुंच कर एक शरवस को देखा जो बड़े घोर काजा मा पहने
 और सुन्हरी चोबहा घमें लिये हुये खड़ा था मैंने उस को देख कर
 रशुकर किया कि आदमी की स्वरत तो नजर आई अब इससे
 सब हाल खुल जावेगा यह खोचकर मैं खुश खुश उसकी तर
 फरवाने हुआ मगर उसने तो मुझको अपनी तरफ आते हुये
 देख कर बुत्ते की सी टंगाली और कहा क्या कुं देना तरा शही जो
 वे शूछे ताछे चला आता है मैं यह कडे बोल सुनकर वही टहर
 गया और १ शेरपहा जिस कामत खब यह है कि

। जो कुत्ता होता है वह चोबयानी लकड़ी से डरता है

। मगर यह सरह कुत्ते नहीं डरते जो कि खुद चोबर रवते हैं -

इसपर वह फिर कडक कर बोला कि चोबदार २ क्या करता
 है चोबदार तो हमको खुदाने बनाया है मैंने बडी नरमी से ज
 वाब दिया कि साहिब मैं तो यह कहता हूं कि चोबदार लोग
 बड़े बेलाग होते हैं जो आधीर और गरीबको एक ही लकड़ी
 से हांकते हैं इस बातसे वह कुछ नरम हुआ और कहा कि
 तुम जहां से आये हो उलटे पैरों फिर जाओ नहीं तो कैद किये
 जाओगे और तुम्हको पहरे वालों ने नहीं फकड़ा जो दो दो
 कोस के गिर दावे में ३६० बैठे हुये हैं -

मैंने कहा जनाब मैंने क्या कसूर किया है कि तुम्हको पह
 रे वालों फकट लेते या अब तुम्हें कैद किया चाहते हो उसने कहा
 तुम्हने कसूर तो कुछ नहीं किया मगर हमको राजाओं का

हुकूम है कि किसी आदर्श को यहाँ मत आने दो और इसी आह
तिया नसे उन्होंने एक रवा समसलहत के लिये इस उज्जड़
में जमा होने का बंदोबस्त किया है :-

मैंने कहा तुम किसी के चरो से मतरहना न कर कार का
गरेज की आड़ लदारी कारहने वाला हूँ किसी राजा का य
हम कदूर नहीं है कि मरी तरफ तेज नजर से देख सके यह
सुनते ही एक राज पूत तलवार लिये हुए बाहर निकल आ
या पहिले इसके कि यह कोई हरफ जमानसे निकाले मैंने
बहुत आदत से भदक कर खला म किया और निजाज पुरानी
के दाद पूछा कि आपकी नसे राज पूत है उसने गुस्से से क
हा कि हा हा हूँ मैंने कहा क्या रब्व हाडों से तो नहा डुरी कौ-
नहार गई है और हाडे अब तक कहीं लड़ाई में नहीं हारे हैं
मुसलमानों के जमाने में तुम ही लोग मजहब के पहले -
और तलवार के लखे रहे हो और चोहानों का नाम तुम्हारी
ही तलवार से रोशन हुआ है -

यह फिर रा सुनकर वह इतना खुश हुआ कि जाधे में श
ला नसमाया और खुभसे पूछने लगा कि तने यह हाल क
होसे मातूम किया मैंने कहा मैं तुम्हारे खानदान की तबारी
रबबूल जानता हूँ अगर मंजूर होतो एक दिन सलंद खुला
सा उसका आयको सुनाऊं हाडा राज इतने कहा कि खून
को पुराने तबारी रदी हालत सुन्ने का बहुत ही शो क दे मग
य आफसोस है कि इस वक्त कुरसत नहीं एक बड़ा काम दर
पेरा हो रहा है ये डरे खेमे जो दूर तक कतार खू कतार देखते

ही राजहूतानेके राजाओंके हैं और वे थोड़ी देरके बाद एक
 खास काममें तरनाह करनेके वास्ते इस भेदानमें जमा
 होंगे जो कि नेदका लुपाना हरे कआदमी को जल रहे और
 रखा स करके राजाओंका हस्त लिखे वन्दोने इस बेराने
 जंगलको जलरी बातचीत करनेके लिये पसंद किया है
 कि कोई कोई आदमी उससे वाकिफ न होवे और हम लोगो
 को हुदु है कि दूर तक पहुरे और जो कियों वैठो कि गेर
 जोग आने ल पावें बुझने गजब किया कि इतने पहुरे वाले
 ली आर देते रवाक डाल कर ठेक तक चले आये और मर दि
 लको अपनी तैक भिजा ली और मीठी बातोंके जालमें फ
 लालिया अदभै इतकिलर में ह कि तुम्को कहां लुपा ऊं-
 कि धरर दाने करुं अउर है कि कहीं कोई पहुरे वाला म पकरले
 मैंने कहा मैं कालों से तो राजहूतोंकी मोहलत और श्रव
 ता लकी नारी फें सुहलके बुना कर ताथा अगर आखों से
 देखने का काम आज ही पडा है अतुम मेरे हकसे अपनी
 मरजाद और कायदेके मा फिक जो लुना सिव समझो वह क
 रो और खातिर जमार कदो कि मै नीकोम से अशरफ ह
 और ऐसा आदमी नही कि कोई फिसाद पैरा करुं अगर तुम
 मुझको अपने राजांके दरवारमें नीले चलोगे तो बहु खुरद
 रुईयां आगे क्यों कि मैं उनको मिजाज और खयालातके मा
 फिक हर एक मुरुदमेमें अच्छी तरह से बातचीत कर सका
 हूं और वडे से वडे मामले में उनके फायदेही राय और स
 लाह दे सका हूं किस लिये कि मैंने बरसो तक राजहूतोंके

हर एक रवान दान की तबारी खदे खकर उनके चाज सजन
रस्म रिवाज आदत और मिजाज से एक उमदा वाकफ़ी ही नहीं
हासिल की है बल्कि उनकी रियासतों और मुल्कों के इन्त-
जाम करने की पूरी लियाकत पैदा कर ली है :-

राजपूतने कहा कि बड़ी मुशकिल है कि वहां तो यह दु-
कम लगा हुआ है कि कोई इस नेद से खबरदार न होवे और
यहां यह सूरत है कि मुल्क मुल्क के आदमी आवेंगे खखत लि-
फ्त वीयतों के लोग जमा होंगे मैं किसी रयासत का खुला
हिब नहीं कामदार नहीं कामदार का चाई खाना नहीं कि
दस बीस आदमी मेरा कहना मने और जो बात बिचलाफ
कहा वके कर बे ठूँज से बरी होने तक मेरा साथ देवें और
दख्खानी बातों में खुदा जाने क्या जाइ है बघाता सी है कि
मेरे दिल को छील लिया है जो यही चाहता है कि अगर ज-
नजी जाती रहै तो वलासे मगर आपको तो जहां तक द-
म में दल है गैरों की आरव से छुपा कर दरवू अबस है मेरा
सिर आप के लिये हाजिर है आप मेरे पीछे चलें आइये
तो आने आपको किसी बजाव की जगह में नै ठा आकं मग
र आप यह इकरार कर ली जिये कि जब तक मैं न कहूं ब-
हांसे इधर उधर न जाना मैंने कबूल किया और उस के
पीछे चलने लगा उसने आया पीछा सोच कर खुभ देवे व
डुडरे के पीछे एक ऐसे कोने में खड़ा कर दिया कि जहां आने
जाने का रास्ता नहीं था और यह जीसम भा दिया कि जो
कोई आदमी यहां आजी निकले और तुमसे पूछे कि को

नहे तो कह देना कि मैं हाड़ा राजपूत का फरीशहूँ मैंने कहा कि कही ऐसा न हो कि फरीशी कबूल करके मेरे वचुरवा ऊँ और चोबसे बांधा जाऊँ क्यों कि मुझको तो रस्सा रेंवचना चीथाह नहीं है :-

राजपूतने कहा यह खातिर जमार कहो कि हमारी रयासतोंमें बड़े इल्मवालों का जी इमतदान नहीं लिया जाता है फरीशीकी बातें पूछने कौन वैठेगा यह कहकर वह तो चला गया और मैं फरीश बन कर डेरे के पीछे मिसल चोबके चुथरवड़ा हो रहा कुछ देर बाद एक बड़ा शोर हुआ और केकड़ोंआदमी इधर उधर से दौड़ते हुवे नजर आये और नकीबों चोबदारोंकी आवाज जोरवमा २ पुकारते थे हर तरफ से सुनेमें आई मैंने जाना कि अब राजोंका आना शुरू हुआ और वे इसी बड़े डेरे में जो सब तरहकी सजावदोंसे सजा हुआ है जमा होंगे मुझको मेरे दोस्त ने रबड़ा तो अच्छी जगह किया और नहोगा तो उनकी बातें तो सुनुंगा कि दे रेंव क्या क्या तजबीजे कर ते है और कोन सी रयास खाते पेश होती है उस वक्त कली कली यह रवया लनी दिल मेथुजर लाया कि अगर आजकी मैं किसी रयासतमें कुछ नी ल गगार रबता होता तो जरूर अपने रईसको राजी करके उस के साथ इस रयास इजलासमें दाखिल हो जाता और जो जो तकरीरें और सलाहें कि इस आलीशान और काबिल अद बजलसे के मुफीद मतलब समझता सब राजोंके हजर में खेरखाही के तौर पर बयान करता और उनकी सावृती में

ऐसी ऐसी अकली और नकली दली लेलाता कि हजरत
 में से कोई भी उनको तोड़ नहीं सकता मगर अब ऐसे मोक्ष
 रक्षा किया जांद कि लिफ्त जान ही किसी तजवीज से ज
 चजाये तो बहुत गनीमत है में दिखये यह वाते का रहा
 था कि मेरा दोस्त राजपूत जिसके जिसमे उस डेरे की सं
 चाल थी दौड़ा हुआ आया और कहने लगा खबरदार अ
 पनी जगह होशियारी से खड़ा रहना में राणाजी की खब
 र लेने को जाता हूं क्यों कि जयपुर, जोधपुर, कोटा, बूंदी,
 और डोंक वगैर के खबर तो आकर अपने २ डेरों में दा
 दिखल होगये और उनकी तदफरने अनी तक कोई चोख
 दारनी खबर लेने को नहीं आया है मैंने इच्छा क्यों साहिन
 राणाजी के सिवाय और नी कोई राजा और रईस आने वा
 ले हैं उसने कहा कि हां किशनगढ़, अलवर, बीकानेर, सिं
 ही, करौली, जयपुर, अजमेर, अहमदाबाद, देवस्थान, प्रतापगढ़, ता
 लवाड़ा, डूंगरपुर, केदारपुर और राजा नी आवेंगे मगर इनस
 वमें राणाजी का आना मुख्य है क्यों कि वे हिन्दू पतिवाद
 शाह और सब राजों के तिरताज हैं मैंने कहा कि ठाकुर
 साहब जिन राजों का तुमने नाम लिया इनमें बाजे तो ऐ
 से हैं कि उनके पीढियों से दुशमनी चली आती है और य
 ह हिसाब किताब है कि उनके बुजुर्गों ने हमारे इतने बुजु
 र्गों को मारा है जिसमें इतनों का तो बदन आगया और स
 लना और लेना बाकी है वे लोग क्यों कर इतने डेरे में जमादों
 गे जैसे राणाजी कहते हैं कि राणा अरसीजी का रतून हूँ ही

वालों से लेना है और जयपुर महारजा को हररोज याद दि
लाई जाती है कि जयपुर की राज्यादर है जिसमें कोट वालों
में जयपुर की फौज को एक बहुत बड़ी शिकस्त दी थी-

उसने जवाब दिया कि राजपूतों को ऐसे ही रवयास्मातने
तो तरकीबों से रोकर पकड़े नहीं तो इस जमाने में हर एक
को मुझे जानने और पर तरकीबों से दुरुस्ती पैदा करनी है
अहमदी करते मगर अब लड़ी रूशी की बात है कि कुछादि
ने से अच्छी तरह से मिलाप हो गया है और जो जो मिले
और शिकस्त आपस के बीच उनके छोड़ देने पर यह आम दर
बार हुआ है और नि सवात की सलाह के लिये इतनी बड़ी को
किया हो रही है वह सब की जलाई और वह तरीकी बात है-

मैंने कहा जलाला खाँ आपने जो मुझ गरीब मुसाफिर
के ऊपर इतनी इनायत और महरबावी की है कि जिसका शु
क्र था उसने मुझसे आदान नहीं गा तो अब जरा यह नी फर
माते जइसे कि ऐसी क्या खास और जरूरी मोहम दरपेश
हुई है कि जिसके लिये हर एक परसने खुद आने की तकली
फ गवारा फरमाई है उसने कहा कि आज कल रयासतों की
अवतरी और बे बंदो बस्ती इतनी बढ गई है कि अंगरेजी
सरकार को उसकी दुरुस्ती और रईसों की फेमायश में दि
कृत उठानी पड़ती है इस लिये रईसों ने रयासतों के बंदो ब
स्त की सलाह मशवरे के वास्ते एक आम जलसे में शरीक
होना मंजूर किया है तो आज जमा होंगे और बाकी प्रहवा
ल फिर कहेंगा "

यह कहकर वह तो चला गया और मैं फिर दिल में उधेड़ चुन
करने लगा कि ऐसी क्या तजबीज है कि जिसके जरिये मैं
नीरुच बड़े जल से मैं पहुंचकर लयाकत जाहिर करूं दरवा
से पहिले मेरा दोस्त हाडा राजपू जो फिर थहां आवेगा तो-
जश्वर हसयु कह मेमें उससे कहना कहूंगा

इतने में फिर एक शोर उठा और लोग पुकारने लगे कि व
ह हिन्दुओं का सरज आया वह हिन्दू प्रतिवाद शाह आया-
वहराजपूतों के सिरका सेहरा आया हरकारे इधर उधर ख-
दर देने को दौड़ने लगे नकीब दलेत और कडकेतों के शोर
से कान पड़ी आवाज सुनाई नहीं देती थी रोशनी का यह
आलम था कि वूटी २ उस जंगल की जगमगार ही थी हवा
के कोंको में तरह तरह की खुशबूएं चली आती थीं नकारों
की धीमी आवाज और राहनाई की सुहानी सुरावट और पिछ
ली रात की ठंडी हवा दिल को ऐसी खुशी बखशती थी कि क
हने में नहीं आती वे सब राजे जो हमारे दोस्त राजपूत के जने
के पहिले और पीछे आ चुके थे घोड़ों पर सवार होकर राणा
जी की पशवाई को गये और उन के साथ उसी आलीशान
उरे में साथे कि जिसके पीछे साथे की तरह मैं खड़ा था राणा
जी के बैठते ही सब रईस अपनी २ जगह बैठ गये उमें महा
राज साहब जयपुर राणा जी के दहने बाजू बैठे थे और महा
राजा साहिब जोधपुर बाई बाजू महाराज साहब जयपुर के
पास घूंड़ी के महाराव राजा और महाराजा साहिब जोधपुर
के करीब महाराव जी कोटे के बैठे थे रईसों के जो करवाकर

सुसाहिवनेलिकर चोबदारतक सबबाहर खड़े थे किसीको
अंदर आने और वहां की बात चीस में दरबल देने का हुक्म
हीं था मगर मेरा दोस्त राजपूत जिसके जिम्मे उस डैरे के सा
मानों की संभाल और रोशनी के भाड फानूसों की देखना
लका काम था एक कोने में चुपचाप बैठा था =

ढैबनेके बाद सब रईसकुछ देर तक चुपचाप बैठे रहे जिस
से देखने वाले को यह अचंजा होता था कि ये आदमी बैठे हैं
थातसबीर रबी हुई है आखिर सणा साहिवनेही स्वामेशी
की मोहर को अपने श्रीमुखसे दूर करके नीचे लिखे माफि
क तक्षीर फरमाई =

कि ऐ मेरे प्यारे दोस्तो और मेरे राजपूत चाईयो आज
मैं तुम सबको एक ऐसे जलसे भे कि जो महा राजपृथ्वी राज
चोहान शाहनशाह दिल्लीके बाद से आज तक कभी नहीं हुआ
था खुशदिली और वे तक छुफीके साथ बैठे हुए आदेखकर
राजी और खुशही नहीं हुए आहूं बल्कि यद्यकीन करता हूं
कि अब राजपूतानेकी किसमत खुली राजपूतोंके दिन अ
च्छे आये खराबी और बदबरवतीकी काली घटायें जो हम
रीतुम्हारी नाइतिफाकी और फूटसे सब जगह छाई हुई
थी घोंडेरी दिनोंमें आपसके एका और इखलासकी तेज
हवासे विरवर कर फट जावेंगी और कौमी तरकी और आ
पसकेमेलमिलापका सूरज आफत और तकलीफकी घ
टा और गहनसे निकल कर राजपूतोंकी शान शेकत और
अदलदनसाफको तमाम दुनियामें रोशन कर देगा और राज

बसे आपसाहि बोंने कौमी चलाई और एक दूसरेकी खेर
 भवाही से मेरी इस एक तदवीर को मंजू फुरमाके इस इरव-
 लास और इतिफाक के जल से जो अपने कदमों से रोना
 बरवरी है अगर इसी तरह और नीबहतरी और सरसव
 जी की तदवीरों को माने गेयार बुद अपनी अकल से फाय
 दा और नेकनामी हा मिल करने की तजवीजे लोचो गे और
 अपनी २ अमलदारियों में रैय्यत की चलाई बहतरी इन
 साफ और इलजाल के काम और कार खाने जारी और
 कायल करने से सरकार अंगरेजी को जो राजपूताने की
 हद से जियादा कटर दान और महरवान है राजी और खुश
 करोगे तो छोडे ही दिनों में तुम्हारी रयास्ते की आबाद हो
 जावेगी और तुम खुद की हिन्दुस्तान में अच्छे इन्तिजाम
 करने वाले और रैय्यते पालने वाले मना हूर हो जाओगे -
 मैंने जो कई महीने की महनत और बकीलों के इधर उ
 धर ने जने और आपसाहि बों की मनशा खे ल और मिला
 पकी मालूम करने से आज आपसाहि बों को इस अजी
 बजल से में जो हमेशा के लिये याद गार रहेगा अनि की-
 त करनी फुदी है उसका सब बकोमी वैवेर घाही और घर फाय
 दे खुल्ल फायदे और राज फायदे की सलाह और पंचायत
 करने के सिवाय और कुछ नहीं है आप खुद जानते हो कि
 मेरा खानदान इदी मसे अपनी कौम के राजों की इज्जत और
 दरू और आज्ञा की कायम रखे और एक राजपूत की और
 रं गाल और चलाई करे में मशा हूर रहा है और मेरे बुजुर्गों ने

हमेशह इन कामों का प्रारंभ करने के दासों बाहर के गनीधों का
 मुकाबिल करके नंकनामी और नामवरी पाई है जैसा कि
 मेरे मोरिस आलावा भूलखुरूप बापारावल और उनके
 आठवें जानशील खुमान रावल और उनके बाद रावल स
 मूरसिंघ राणा लक्ष्मसिंघ राणा भोकरसिंघ राणा कुंजक
 राणा राणा लंगसिंघ अथने देहों पालों और भाई जतीजों
 समेत राजा राजपूतों की चलाई और रवेदरवाही से दुस्त
 रमाओं के साथ हमेशह लड़ते रहे और बजि बाजने लगे इ
 स दिस्त्रकी लड़ाइयों में ऐसे दिस्त्रे जुगते कि जिनका ध्या
 न करने से हमारे कंगटे खड़े हो जाते हैं मगर उसकी परवा
 नकी और अफते इरादे को हाथ से न जाने दिया लबकितै
 पकी ओलादने हिन्दुस्तान की बादशाही ली और रक्षा
 पताहियों के बुजुर्गों ने हमारे बुजुर्गों के बरखिलाफ दु-
 नियादारी और जमाते साजी की राह से उनका बंदगी
 इरादा की और हमारे बुजुर्गों को अपने लाले उदिया लोनी
 उन्होंने अपना काम लोड़ा और सैकड़ों तरह की आफ
 तें उनके सिर पर गुजरी तो चि अफने दावे पर कायम पर
 है उनसे जो कुछ बहादुरी के काम हमारे तैश्न वें-
 दादा महाराणा शत्रुसिंघ जी से राजशतों के नाम और
 रवंश को रोशन करने के जहूर में आये हैं वे ऐसे नहीं हैं कि
 कोई उनको सरसरी नजर से देख कर नती जानिकाले बि
 नानुपहोरे है वे कहते थे और तही कहते थे कि जो सब रा-
 जपूत भाई मेरा साथ देते तो मैं राजपूताने को दरगिज सु

गलों के हाथ में न जाने देता उनके बाद महाराज राजसिंघ
 ने जल्द कि औरंगजेब मारवाड़ का राजदबाया चाहता था
 जैसी कुछ हद तक और मदद की वह मशहूर ही है उस
 वक्त उन्हें ने बहुत चाहा कि सब राजपूत मेवाड़ के सुन्दे
 री भंडे के नीचे जमा हो जावे और एक साथ को शिशक के
 लुगलों के जुलम और सदाती का तदामक और औरंगजेब के
 हिरस की आग को तलवार के पानी से बुभावे मगर किसी
 ने तमाना सिर्फ खड़े उन की तदवीरों के ऊपर चले थे सो
 देखो अपने मुल्क को महाराज के नावा लिंगयानी बाल
 कहने पर नी शेर की डाढ़ से निकाल कर अब तक राजक
 रते हैं इस पूरी वे पर वाई पर नी जब उन्होंने ने देखा कि औरंग
 जेब राजपूतों को चीज जीये के लिये सताने लगा है और
 उस कारैयत को तकलीफ देना और धर्म के कामों में हत
 क करना दिन २ बढ़ता जाता है तो एक ऐसा अच्छान
 सी हत कारवत उस को लिये कि जिसके मजसून को
 हर कौम और हर मजहब और हर मुल्क के सियाने आद
 मी दिलो जान से पसंद करते हैं और उसका तरजुमा हि
 दुस्तों के बाहर के मुल्कों में भी दूर २ पहुंचा है जिस से ह-
 मारे दादा महाराज राजसिंघ की आमन लाई और तयामदु
 निया के नले चाहने की तारीफ होती है जिन्होंने उसमें
 और फायदे मंद बातों के सिवाय यह एक उमदा फिक
 रा नी लिये था; कि

में हिन्दुस्तान के शाहों और मीरों मिरजाओं राव और

राजाओं की खैरखाही में तन मन धन से तैय्यार हूँ ईरान
 तूरान रूस शाम के सरदारों और सारों बिलायतों के
 रहने वालों और दरया और खुशकी में सफ़र करने वालों
 कामें नला चाहने वाला हूँ मेरा यह बयान सूज से लि
 यादारोशन है ॥

और वे इस खत को लिख कर ही चुप नहीं होगये थे
 बल्कि उन्होंने यह ठान ली थी कि जो बादशाह हमारी
 नसीहत न मानेगा और सब राज सूत जो जज़िये के अ
 दा करने से न फ़रत रखते हैं साथ देगे अपनी और उन की
 आज्ञा की लिये एक मैदान की लड़ाई लड़ेंगे मगर उन की
 उमरें अब कानही की और वे जवाब पहुंचने से पहिले बैठें
 उवाशी होगये फिर जब कि औरंगजेब के बेटों और पीतों
 के आपस में लड़ने मरने से युगलों की सलतनत कमजो
 रहो गई थी तब ली कोई हमारे बुजुर्गों का मदद गारन हुआ
 नहीं तो वे कभी लालची मददों का दवाब राज सूताने प
 र नहीं होने देते ॥

ये सब काम जो इस तरह विगडते गये और ऐसे अच्छे
 अच्छे मौके जो हाथ से निकलते रहे उसकी बजह आपस
 की नाइतिफाकी और कूट थी जो हिन्दुस्तान का उमदामे
 वा है और जिससे हुल कर और संधियां निमन चाहा फल पाया-

अब जब से अंगरेजी अमलदारी हुई है तूटमार और ल
 ड़ाई ची ड़ाई का बीज ऐसा मारा गया है कि शायद फिर कभी
 बहुत अरसे तक न उगे और जो हमारे तुम्हारे दुशमन थे

वेवहादुर अंगरेजोंकी तोप बंदूक और संगीनके डरसे ऐ
 से स्वेये गये कि कौं छिनकापता तक न पावे यह अंगरेजों
 का राज जिसेमें उन्होंने इतना असन चैन कर दिया है कि
 रईससे लेकर जंगीतक हर एक अपने घरमें पांदा फेंका कर
 सौता है और अपनी नींद पूरी करके उठता है इस लायक
 दा गिन्तमना अगली सुत्ती चल और सुकसानोंसे जरे
 हुये पिछले जमानेकी व निसबत इसको हजार दरजे क
 हतर और गनीमत समझ कर अपने २ मुल्क माल फोज
 लग कर और ऐयतके बंदोबस्तमें मशगूल हो कर इन
 कामोंमें ऐसी तरकी और नामवरी पैदा करते जो इस मुवा
 रक वक्तके लायक होती मगर अफसोस हममेंसे किसी
 ने ही हल तरफ बिल्कुल ध्यान न किया और न कोई उ
 मदावती जा सरकार अंगरेजीके पसंदके लायक निका
 ला बल्कि बहुत साहितो ऐसे ही है कि उन्होंने कभी
 इस जमानेको पिछले जमानेकी हालतसे मुकादिल
 करके उसका मजा ची न उठाया होगा और वह बात दु
 लमुश्किल नहीं है कि कोई अपनी या अपने बुजुर्गोंकी फे
 डली हालतोंको हालकी हालतसे सुता बिक्र करके नती
 जा पैदान कर सकें द्यो कि इसके सामान और वसी ले हर
 एकर या सतमें श्रे २ मौजूद हैं जब कोई साहिब हल तरफ
 ध्यान करेंगे तो उनको इस उमदा अमलदारीके उमदा हो
 नेवा शकल रहेगा जिसके अच्छेपनकी तफसीलके लिये
 कुछ थोड़ा सा बयान पिछले और शराने जमानोंकी हालत

का करते हैं यह बात आप सब साहिबजी खूब जानते हैंगे
 कि मुसलमानों के आने से हमारे मुल्क मजहब रसम और
 रिवाज में बड़ी रफेर फारदा के हुं हैं और राजपूतों की लिया
 कते उसी वक्त से कम होती गई है जिन दिनों में तुरकों का
 राज था तो वे हफ लो गों से उतनी ही जान पहिचान रखते थे
 कि जितनी हम जाट, लो, नी, और गिरा सियों से रखते
 हैं और उन की फौजों ने हमारे आपस का एक तोड़ने के
 करते हमारे मुल्कों को ऐसा घेर रखा था कि गद्दी का
 हदके ऊपर ली किस्ती को आपने इलाके से बाहर निकल
 ने की हिम्मत नहीं पड़ती थी और इसी सबब से राजपूत-
 लोग उनके मुफाविले के वास्ते बहुत कम जमा हो सकते
 थे जब उनमें कम जोरी आती थी तो उनके दबाव और जो
 रज्जुम से आन बत्त कुछ फुरसत मिलती थी जो छोटे रवा
 दशाहों की चढाईयों के जमाने में प्रकार घजाती थी गरजव
 ह जलाना इस्ततरह की सुसीवतों में गुजरा फिर तैमूर की
 और लादतरवत पर चढी उसने रवातिर और रिस्ते दारी से
 राजपूतों को तोड़ फोड़ कर अपना फायदा उठाया यह मा
 ना कि उस वक्त के राजों को दशगही लडाइयों और
 फतहों में शरी करहने से बड़े फायदे पहुंचते थे कि जिन
 से मुल्क और माल की तरकी होती थी मगर उसमें महत्त
 और तकलीफ और बेआराधीची बहुत थी जैसा कि उ
 म्जर वतन से दूर और बाल बच्चों से अलग रहना पडता
 था मुल्क और माल की हकूमतरव जाने और जना ने की

हिफाजत दूसरों के चरों से पर छेड़नी पड़ती थी हमेशा
 सफ़र दरपेशा करता था लड़ाई सिर पर बड़ी रहती
 थी गोरों के काम में अपना और अपने प्यारे जाई बंदों और
 रण में सब धियों का खून बहा जाता था और उन की रवा
 तिर से कदीमी रिश्तेदारों और मंदगारों से आंख खुवा
 ई जाती थी दूर के सुल्तानों में धर्म कर्म का निबाह नहीं
 हो सकता था अठक से पार उतरने और मलिच्छ देश
 में रहने पर मजबूर होना पड़ता था जैसा कि राजा मा
 नसिंघ कछवाहा और जसवंत सिंघ राठोड़ को काकु
 ल में और मुकंद सिंघ हाड़ा और जगत सिंघ पठाणि
 या (१) को कलख में जाना और रहना पड़ा और घो
 डे से कसूर पर बड़ी बड़ी खफ़गी बठानी पड़ती थी लुना
 चैदाव जमर सिंघ राठोड़ जैसा कसूर का राजपूत नंग के जा
 डे में नारायण और बतन हाड़ा और कसूर सिंघ राठोड़ और
 मानसिंघ कछवाहा जमर चर घरदार और बतन सेवा
 हर रहे और अपने बुजुर्गों के महलों में रहने और अपने
 सुलतानों के रमणों में शिकार खेलने और अपने देसके
 जेलों और तमाशों की सैर देखने और अपने जोरूबच्चों
 को साथ हसने बोलने और अपने जाईसगों और प्यारे दो
 स्तों वगैरः क्लेमिलवे जुलने का कुछनी मजा नखबसके
 और गजे व जैसे दुशाम के बेटों की रवेर खाही में कोटे कं
 (१) यह जगत सिंघ पठानिया नरपुर कांगडे का राजा था यह ज
 हांवा दशाह के जमाने में तख्तान के उजबकों से खूब लड़ा है-

हाड़ा वकी तीन चार पुश्तें गारत हुई बराबर के चार जाई
जो इसरयासत के चार थंन थे सुफत में मारे गये शाहज
हां के बख्सेदों में राजाजीमकी तीन चार पुश्तें काम आ
ई वूदी किरानराह और बीकानेर के जायक ^{रमें} बख्सेदशाह
गरदियों में नाहक जानसे जाते रहे =

इसतरहकी जानकारियोंसे नतीकोई नतीजा मज
हब के वास्ते ही अच्छा निकलता था और न सुलक और
कोक के वास्ते कुछ फायदा होता था अगर कही कि बाद
शाह कदरदानी करता था तो रवाक ऐसी कदरदानी पर कि
महाराजमानसिंघ और भिरजा राजा जयसिंह नमरजर
बादशाही लड़ाइयों में जान मारते रहे जिसका अंजाम यह
हहुआ कि मानसिंघकी जमवा रियदमतों के इनाम देने के
लिये तो अकबरने जहरकी गो रियां बनवाई और भिर
जा राजा को और गजेबने जहर दिलवा कर मारही डाला
और अगर यह कही कि नहीं खिलत मिलते थे खिताब
मिलते थे जागीरें मिलती थीं जैसा कि अकसर रियासते
पहिले बहुत छोटी थीं और फिर हुणखोंकी महरबानी से
बहुत बडी हो गई तो इसमें चीजन हजरतोंकी चालाकी औ
र खुदशाहजी थी मानी वे खाल चदे कर राजपूतोंके मले
कटवाते थे और अगर कोई बाहरका दुखमन ही मिलता
था तो आपसमें ही उनको खडवाते थे और खाली नहीं
छोड़ते थे चुनाचे उनके नडकानेसे जयपुर वाले हमारे बुजु
र्गोंसे और बीकानेर वाले अपने मुरही जो धडरवानोंसे

लड़ते रहें और फिर यह मजा देरवों कि हिन्दू तो मुसलमानों की खेद रवाही में अपने जाई हिन्दुओं से लड़ते थे और मुसलमानों से उनके मारे जाने से खुश होते थे वैसे ही इन के मारे जाने से भी बगलें बजाते थे जैसा कि उनके एक शायर ने कहा है =

जहर तरफ कि शब्द कुशा सुदृश सज्जामु अस्त-
 यानी जिधरसे मारे जायें मुसलमानों का ही फायदा है
 पस निहायत अफसोस है उन राजों और राजपूतों की हा-
 लत पर कि जो इस तरह मुसलमानों की खेद रवाही में जान
 रवो कर दुनिया में बदन्याम और आकवत में समवाहुये अ-
 गर यह सब अपने रजमाने के किसी अपने कौम वाले सर-
 रफा रजासि मिलकर दुशमनों से लड़ते तो जो फते पाते
 तो आजादी के साथ हुकूमत कवले और जी हार जाते तो
 कोई उनको बुझानही कहता फिर जब एक तर
 देवा दजमाने नै करवटली और खुगलों की सलतनत में
 खल्ल पड़ा तो उस के साथ ही हम लोगों में भी कि जब आ-
 पस में मेल मिलाप हो जाने की उम्मीद थी फूट और सुखी दा-
 खिल हुई और जो इतना स और इकरार मारे कड़े दादा रा-
 एग अमर सिंधु जी से जयपुर जोधपुर के महा राजाओं ने
 किया था वह बहुत जलद टूट गया अगर ये तीनों रईस भी
 उस गदर के जमाने में एक रहते तो मरहठे कुछ चीन ही क
 रसकते थे क्योंकि मरहठे ने राजपूताने में जो जो रफ कड़ा
 तर अपनी ही फूट से पकड़ा और फिर तो उन कारे सा द्वाय

हुआ किए कएक दो अलग रदवा कर निबोडा और कि
 सीमेंनी कुछ जानवाकी न छोड़ी थी (१) अगरे अंगरेज व
 हादुर अपनी संवत् १८७४ की बरस ईमें उनको ऐसा सरत
 वे बस कर देते कि जैसे दूसरे ही बरस किसी ने चम्बल
 के इलाका और अरब ली पहलू के उत्तर तरफ मरहे ठों की
 सरत न देसी तो महाराज हमारी तुम्हारी बरबादी और
 बदनसीबी की नोकत अरवीर दरजे तक पहुंच कर नाम और
 रनिशान मिटा देने के पीछे पड़ जाती =

मुसलमानों से पहिले जिस जमाने में कि कुल हिन्दु
 स्तान राजपूत राजों के कब्जे में था उस वक्त भी हमले में
 की आपस की दुश्मनी और नाश्तिका कियों से यही मुसी
 बतें आये रखी रहती थीं और कोई बरस अमन चैन में नहीं
 युजरता था देखो जब दिहनी का तरक्त तुंबरो के कब्जे में
 था और अजमेर में चोहान राज करते थे सढेड़ कजोज में से
 लंरपी युजरात में पंवाद घाले में और यदि हार मार वाड में
 तो उस वक्त अजब २५ गड़े परबड़े रहते थे जिसका नतीजा
 हीनो सरतों यानी हर और जीत में आम राजपूतों की नस
 ल और रवान दान के वास्ते निहायत ही डुरा होता था जैसे
 कि गेहूँ के साथ घुन पिस जाता है वैसे ही छोटे छोटे राजे
 अपने से बड़े राजाओं की आपस की लडाइयों में तबाह
 और बरबाद हो जाते थे खास करके हमारे बुजुर्ग जो बहुत
 (१) मरहूने सब से जियादा मेवाड के राजको बरबाद किया और
 वहां से कई क्रीड़ कप धालिया

ही कम किसी की बंदगी करते थे चुनाचे जब अजमेर के राजा बीसलदेव को हानने गुजरात के राजा पर चढ़ाई की तो हमारे बुजुर्ग रावल तेजपाल को सिपे साजार करने के बहाने से बुलाया और अगरे उस लड़ाई में फते हुई और हमारे बुजुर्ग ने कनाम हुये मगर अजमेर वाले हक नाहक हमारी रयासत को अपने मातहत समझने लगे जिससे बहुत अरसे तक आपसमें लड़ाई होती रही फिर जब बीसलदेव के पड़पोते महाराजा शुद्धीरजने अपने नाना अमंगपाल के गोदनशीन होकर दिह्ली का तदवत पाया और राजपूताने के सब राजे और रावत उनके दरबारमें रहने लगे और हमारे दादा रावल समरसिंह ने यह बात श्रवणिया रलकी तो महाराजाने उनको अपनी चहन देकर रिशतेदारी के कंदे से अपने जाल में फंसाया और फिर अपने कुल राजकाज का बोझ उन के कंधे पर डाल दिया कि जिसकी संचालन के वास्ते उनको ची दिह्ली में रहना पड़ा और आवि रवे अपने साले के साथ तुरकों से लड़कर मैदान जंगमें काम आये उस दिन से राजपूतों की किसमत लोट गई इकबाल ने जवाब दे दिया लिया कत जाती रही कंगाली ने घर घेर लिया तुरक बादशाह बन बैठे जो बादशाह हुआ उसीने राजपूतों पर हाथ साफ किया अहां तक कि एक जमाने में सब जमीन राजपूतों से निकल गई शहरों और किलों को तुरकों ने पसंद किया वे अगरे जंगल काड़ी और पहाड़ों में जान न बचाते तो आ

जके दिन हम तुम इस जल से मेरु नीशक हने होते:

ऐ जाईयो इन सब पेच दर पेच मुसीबतों को जो १०० वर
 ससे लगतार चली आती थी अंगरेजों ने हमारे सिर से इ
 स तरह पर दूर कर दिया कि जैसे कोई दूध में से मक्खन छां
 निकाल कर फेंक देती है और उन की जगह यह आमन और
 आराम कायम किया कि हम तुम फरागत से अपने खुश
 गी की राजधानियों में बैठे हुये राज कर रहे हैं कोई हम से न
 ही कहता कि तुम दिल्ली में नीकरी करने को चलो और नको
 ई यह कहता है कि जजिया दो नहीं तो हिलु नहीं रहने पाओ
 गे और नकोई यहता कीद करता है कि नोरोज का दिन बहु
 त करीब आया है राणियों को जशान नोरोजी में जेजने
 के लिये तैय्यार करो नकोई घोड़ों के दाग लगाने को तका
 जाकर के जी जलाता है नकोई अइदी डोले के लिये धोस
 ले कर आता है नकोई सजावल इकब नकी मोहर के लि
 ये सबारों को लेने आता है और नकोई जशान नोरोजी के दा
 स्तेला खों रुपये की पेशकश मांगता है मअल यह हुकूम है कि
 अटक पार जाकर काबुल की संजाली और अफगानि स्ता
 न का बंदी बख करे अंगरेज सभे उतर करे गितो मनुदख
 छिन जानेगा और नकोई बदमाश यह धमकी दिसकता है
 कि मामला दो नहीं तो तुम्हारे मजनी क मंदिरों को लूट लेंगे
 और नकोई यह उर दिलाने वाला रहा है कि अंगर नाल बंदी
 नदेगे तो तुम्हारी जमीन की घोड़ों की टापों से ऐसी खा
 क उड़ाई जावेगी कि उसका आसमान तक पतान मिलेगा

यह सब तकलीफें दस-बसपे शतर तक मौजूद थीं और उनके देखने वाले लोग हमारी तुम्हारी रयासतों में बहुत मौजूद हैं और खयाल करने से हम जी जान सकते हैं कि हमारी जिंदगी हमारे जुर्गों की व निसबत बड़े आराम और रक्षा ज़ादी के साथ चल रही है अगर हम उन सब उमदाओं के पल्ले में जो हमको सरकार अंगरेजी की बदौलत हासिल हुई है उसकी शुकरगुजारी न करें और उसके हाकिमोंको खुश न करें तो हमारी पूरी नालायकी और नाबुनसफी है यहाँ किम खुशामद करने और जहाँ पनाह करने से खुश नहीं होते हैं सौ-सौ रुपये तो लेकर अतर लगाने और बहराम खां इमरत सैन बेगम और बच्चाग के सुजरे और नाच दिखाने से बरसे इलायत नहीं आते हैं बल्कि बेरयासतों को उमदा इन्तजाम और तरकी की हालत में देखने और बेखाल को अमन चैन और आराम के साथ पाने और शहों की उमदा मदद से शफारवानों और बणि जमोयार की तरकी के असबाबों से सजाहुआ देखने से ऐसे राजी और खुश होते हैं कि हाकिम होकर शुकरया अदा करते हैं और महाशायी साइबको लारी फें लिरवते हैं जिसे एक निहायत बड़ी और पकीनेक नामी हासिल होती है :-

हमने इस कामों में बेशक गफलत की है और हम अपनी गतर्ज में ठके राजी रखने से बहुत पीछे रह गये हैं हमारी गफलतों से मुल्क और माल में जो अबतरी बाके हो रही है उसने हमको बदनाम कर रखा है हमारे हाकिम हमसे

दिलमें खुश नहीं अगरचे वे हमारी खातिर करते हैं और
 कोई शिकायत मुंहके ऊपर नहीं लाते मगर कहते तक
 आदिवर एक न एक दिन सब रयासतों का वही हाल
 होने वाला है जैसा कि अलवर का हुआ और आजक
 ल के ठिकाण रहा है इस सूतमें हम सबको यहिले ही से
 इसकी फिक्र करना चाहिये कि फिर शं मिदा होना न पड़े-
 और कोई नाला एक न कहै परमें सरने हमको नीतो वही
 जरये और वसीले दिये हैं कि जिनसे मुल्कों का इन्तजा
 भव खुशी हो सकता है अंगरेज नीतो आदमी
 हैं और वही डील डोल थाकल सूरत आकल और होश ह
 वास रखते हैं अगर हममें और उनमें कुछ फाव सौह
 तो यह है कि वे महनती इलमी होशयार और मुश कि-
 ल कामोंमें पड़ने वाले होते हैं कि जिससे उन्होंने अपनी
 इतनी बड़ी अमलदारी का ऐसा इन्तजाम कर रखा है
 कि सब काम दुस्ती से बक्त पर हुये चले जाते हैं जिनसे
 उनको इस कदर बेफिकरी और फुरसत रहती है कि दूस
 रोंके घरका बंदोबस्त करने को तैयार हैं और हम बरिब
 लाफ उनके ऐसे आराम आलस और गफलत से ऐसे
 मुस्त हो रहे हैं कि अपने घरका ही बंदोबस्त नहीं कर स-
 केते और अपनी आमदनी और खर्चकी तादाद और फा
 जिल बाकी के सबब अच्छी तरह नहीं जान सकते जैसा क
 सदार कह देता है और जिस तौर पर सब जानकी सम भादि
 ला है उसको मंजूर कर लेते हैं आराम तलबी का यह हाल है

कि हम में से किसी ने नीकनी अपनी स्यासत में इस सिरे
 से उस सिरे तक दोरान किया होगा वे से सेर और शिका
 रके लिये तो गर्मियों के चिल्ले में जब कि चील अंडा छोड़
 ती है जंगलों में बहुत दफे दोड़ते फिरें होंगे मगर यह कभी
 नहुआ होगा कि किसी दरवात की छांव में बैठकर जमीदा
 रों से पूछा हो कि तुम्हारे गांव की क्या हालत है हमारे अ
 हलकार और हाकिम तुम्हारे साथ के सासुर लूक कमते हैं
 और बदाहास मिल लेते हैं शेर और सूर की तलाश में तो अ
 पने मुल्क के ऊपर जंगलों में नजर दे डाल कर शहर पर
 गौर से देखा होगा मगर यह कभी नहुआ होगा कि उन
 जंगलों में कहीं से पानी लाने की तरकीब करके घास
 पत्त की जगह जव और गेहूं के सरस खेतों से आ
 रों को उड़ा कर ले लें और तजारी के शौकसे तो बहुत मर
 तने गलियों और दाजगों में धन बन कर निकले होंगे म
 गर वे से कभी रैयत के दुरवसुर की खबर लेने को मह
 लों के बाहिर कदम चीनरकता हों डों मूडाही रंडी और अड
 वों को तो हमेशा रोबरु बुलवा कर र-र और ७-४ परत
 क उनका नाच और मुजर देखा होगा मगर कभी दरवार
 आग में दे द कर रैयत की फरयाद हो घड़ी चीन सुनी हो
 गी यों तो फालतू आदमीयों को लारव २ रुपै तक सुफल
 दिडालें होंगे मगर अपने मरीब जाई बेटों नाहार रैयत
 कदीनी इकदारों और रेवर रहा हना करों और पूरे व्यसि
 मोहतजों की खबर हजार पान सौ रुपै से चीनली होनी

पसहमारी रियासतों के कम आबाद कम पैदावार और अब
 लवी की हालतों में होने के उधदा वजुहात हमारे ही नाकि
 २४ सतरी के हैं जिनकी इसलाह करना जरूर और मुनासि
 बहै और जब तक इन्तजाम के छोटे और बड़े कामों की हू
 री रफिकरन की जावेगी और हर रयासत का बंदोबस्त ए
 क उमदान होने पर न होगा तब तक कोई सूदने कना
 ली और हाकिमों के खुश होने की मनिकलेगी और न
 इस मुलाक़ात का पूरा रफायदा हासिल होगा अब मु
 भको तो जो कुछ कहना था वह मैं कह चुका आये जो
 आपसाहिबों की राय में आवे सो बिरबट के फरमावे :-
 २५ राणाजी के चुप हो जाने पर बूंदी के महारावराजा सा
 हिब जो उनकी बालों को पसंद और कबूल करते जाते थे
 फरमाने लगे कि राणाजी ने जो कुछ फरमाया वह ऐसा
 है कि अगर हम सब लोग एका कर के उस पर अमल क
 रने को तैय्यार हो जावे और खुद महनत करके अपनी र
 रयासतों का इन्तजाम करना शुरू कर देवे तो एक बरस
 के अंदर रही विसब इन्तजाम जो इन्तजाम पसंद लोग
 राजपूतों के ऊपर लगाया करते हैं दूर हो जावे और आ
 यदाके लिये ऐयंतकी आसूदगी जमाकी तरकी और
 हर किसमकी बहतरी की उम्मेदन जर आने लगे इन बा
 तों से साहिबान अंगरेज जो हमारी रियासतों को बहतरी
 की हालत में देखना चाहते हैं हमसे फकत राजी ही नहीं
 होंगे बल्कि बहुत सी बातों में हमको मदद भी देंगे

३६

यह सुनकर अलवरके रावराजासाहिबबोल उठे कि साहिबो अंगर हम इन्तजाम करेगे तो अपने वास्ते और न करेगे तो अपने वास्ते अंगरेजोंको हथारा इन्तजाम देरवकर खुश और अबतरी देरवकरमा खुशकों होना चाहिये किसलिये कि अहदनामोंकी रू से उनको यह अरिह पार नहीं है कि हमसे हमारी बद इन्तजामी और गफलतकी छूछलाछ कर सकें -

३७

कोटेके महारावजीबोले कि रावराजासाहिब सब फरमाते हैं हमसे और सरकारसे जो अहदनामा हुआ है उसमें साफलिकवा है कि सरकार अंगरेजी रियासतकोटेके खानगी इन्तजामोंमें देरवलन देगी और यकीन है कि ऐसा ही सब रईसोंको लिरव दिया है और फिर अब ये लोग बद अहदी किया चाहते हैं जो कि अकलमंद हैं और जाहिरमें अहदनामे तोड़नेकी बदनामीको गवारा करना पसंद नहीं करते इसलिये रईसोंको माजूज और वे दरवलन करनेकी गरजसे यह फिकरा देते हैं कि तुम अपनी रियासतका इन्तजाम कितने दिनोंमें कर लोगे या तुमको इस कदर मोहलत दी जाती है अंगर उसमें इन्तजाम नहुआ तो सरकारको दसतंदाजी करनी पड़ेगी या कभी किसीको अपनी और सरकारकी नाराजीको जाहिर करनेसे घबराहटमें डालकर इस किसमकी दरखास्त गुजराने पर मजबूर करते हैं कि सरकार हमारी रियासतका इन्तजाम करे ताकि कोई यह न कह सके कि सरकारने अज

खुदफजानी रयासत के कामोंमें सरकारकी सहकारवाई-
 जो अब अकसर होने लगी है अहदनामों के खिलनाफ है या
 ३८ नहीं जो धपुरके महाराजने फरमाया कि हम यह तो नहीं क
 हसक्ते कि सरकार अंगरेज अपने कौल और करार पर का
 यम नहीं मगर यह सब जानते हैं कि जो बरताव सरकारका
 रयासतों के साथ हुआ अमलदारी में था अब उसमें बहु
 तसी उलट फेर हो गई है और दिन दिन होती जाती है देखो
 हमारे बैकुंठबाप्पी दादा मान सिंहजीने अहदनामों पर दस्त
 खत हो जाने के बाद अपने शलाके के बड़तसे बागी ठाकुर
 रोंको मार डाला था और बाकी रहै दुओंको बाद जबती जा
 गीरके जलावतन कर दिया था उस वक्तके अंगरेजी हाकि
 मोंमें से किसीने भी इस अमरकी बाजपुरस नहीं की थी ब
 लकि जब उन सरदारोंने कई बरस तक बराब होने के बाद
 सरकारमें हिफाजतकी दरखास्त पेश की थी तो बहुत दि
 नों तक सरकारने उसको मंजूर नहीं किया और जब उन
 की जियादालाचारी करने और तकलीफ देनेसे एक दो
 बार उनके मुकद्दमेंमें दोस्ताना तहरीर चेजी तो उसका
 जवाब दादासाहिबमों सूफने यही दिया कि बागी सरदारों
 ने माफी के लायक तो कसूर नहीं किये थे मगर सरकारकी
 खातिर और सिफारशमें उनकी परवरिश मंजूर कर के
 लिखा जाता है कि अगर सरदारान मजूर हमसे अपनी त
 कसीरोंकी माफी मांगेंगे तो उनकी दरखास्त पर लिहाज कि
 या जावेगा आरि बर ऐसा ही हुआ और हमारे बापसे भी इस

किसमकेकईमामलेहुयेमगरकोईबड़ाभवारिवजाउन
सेकनीनहींहुआअबकोईजरासीबेशतदानीकरे
तोसहीसरकारसेकिसकदरखफगीउसकेऊपरहोहै

३६
दोंककेनवाबसाहिबनेकहासाहिबोहमतोयहजा
नतेहैंकिजोरईसअंगरेजोंकोअपनीताबेदारीसेरा
जीरदेगाउसकीबातबनीरहेगीऔरजोजरासीसरक
शीकरेगावहराबहोगादेखोमेरेबापकोजोबातबा
तमेंअंगरेजोंकेसुकाबिलेमेंबडबड़ाकरतेथेकिसआ
सानीऔरहिकारतकेसाथगद्दीसेउतारदियाऔरब
नारसमेंजावेडायामगरसचपूछोतोराजपूतानाज
वहीसेआरवोंमेंहलकाहोगयाहैऔरवहफिकराक्या
किसीकोयादनहोगाजोसरकारनेउनकीमानजूतीके
इशतिहारमेंलिखाथाकिनह्याबगावरनरजनरखब
हादुरथकीनकरतेहैंकिजोतजबीजनह्याबटोंकेकेलि
येहुईहैवहराजपूतानिमेंध्वरतपैदाकियेवगेरनरहेगी:

४०
जयपुरकेमहाराजासाहिबनेफरमायाकिहआरेबुजु
मीनेराजकाजकेलियेजोकायदेबांधेहैंअगरउनकापू
राधराबतावकियाजावेतोहालकीसबशिकायतेदूर
होसक्तीहैंमगरक्याकीजियेकिउनकेअसूलऔरहैंऔ
रसरकारअंगरेजकीअमलदारीकेअसूलऔरहैंअगर
हयलोगअपनेकदीमीदस्तुरोंकेमाफिकनीखुदमह
नहकरकेबंदोबस्तकरंतोनीअंगरेजोंकीनजरोंमेंकुछ
लियाकतऔरऐतबारपैदानकरसकेगेइससेबहतरथहां

कि अब जहां तक लो सके इन्तजाम में अंगरेजी टिंग बरता जावे और जो रईस ऐसे सा करने लगे है और अब तक इन्तजाम उनका सरकार की मन शाके लायक हु आभी नहीं है तो नी अंगरेज उनकी तारीफ ही किया करते है जैसे कि हमारे मातहत खेत डी के राजाने दो चार मदरसे शफारवाने और सड़कों के बनाने और दीवानी फोज दारी अदालत सुकर करने के सिवाय और कोई ऐसी बात नहीं की थी जो रईस्यत के हक में फायदे मंद हो मगर अंगरेजों में उसकी ऐसी हवा चंध गई थी कि लार्ड लारन्स साहिब गवरनर जनरल हिन्दुस्तानने आंगरेके दरबारमें हमसे बरईसों के सबूत उसकी तारीफ की थी

४९

बूंदी के महाराज साहिब बोलें मतलब तो इन्तजामसे है और वह चाहै किसी तौर पर हो मगर जब तक हम अपनी कदीमी मरजाद और धर्म शास्त्र के असूल पर अच्छी तरह से बंदोबस्त और इनसाफ कर सकें तो कुछ जरूर नहीं है कि गैरों की दिखादे रवी करे और जिस जवान के लफजों और महावसों से वाकिफ नहों सिर्फ २-४ लफज उसके जैसे यस सर नो वेल् बगर: बोलने लगे और अपनी कदीमी और उमदा पोशाक के बदले कोट पतलून पहन कर नई किल्ले के मसरखरे बन जावे और फिर कुरसी में जलगा कर बैठने और कुरी कांटे से रंगानारवाने की आदत डाल कर अंगरेजों के दांत चिड़ाने लगे अंगरेज दुनिया भर का अच्छा पन अंगरेजों के ही पीछे पीछे चलने में है

तब तो एक दिन धर्म की ची छोट ना पड़ेगा जो हमारे न
जदीक जान देते तो जीजिया दास रख काम है :-

हमारे आचार्य हमारे शास्त्रों में सब कुछ निरवग^{ये} हैं
और हमारी किताबों में सब किसके इन्तजामों की
तदबीरों में जूट हैं अगर हम सब लोग धर्म शास्त्र और रा
जनीतिके बमूजिदरियासत और सियासतके कायदे जा
री करे तो कौन मने कर सकता है बल्कि इसमें एक यह ची
फायदा है कि संसूतके इल्म की तरफ़ी होगी जिसको ब
हुत से अंगरेज ची दिलो जान से चाहते हैं :-

४२

पाटणके राजराणासाहिब बोले कि आपने बहुत रइ
ब फरमाया मगर मेरी रायमें इस किसम का इन्तजाम जा
री होना मुशकिल होता है और अगर जारी ची होगया तो
उसका कायम रहना मुशकिल है क्यों कि जब कोई र
ईस बेओलाद मरजा वेगा या उसका वारिस ना बालि
ग रह जावेगा तो उस सूरतमें सरकारको अपने कायदे
के माफ़िक उसकी रयासत का बंदोबस्त बतौर कोरट आ
फ वारडिसके करना पड़ेगा और यह बंदोबस्त उसी तौ
र पर किया जावेगा जैसा कि अंगरेजों का बंदोबस्त हो
ता है और इस बंदोबस्त से वह बंदोबस्त कि जिसका
जिक्र हो रहा है बिल्कुल टूट जावेगा फिर इस तरह रफ
ते र एक जमाने में उसका फतात कनी बाकी न रहेगा इ
स सूरतमें लाजिम है कि अब जो बंदोबस्त किया जावे
वह ऐसा हो कि इलाके कोरट होने पर ची उसमें कुछ खल

जन आये और बहुत मुद्दत तक बना रहे =

सिरोही के रावजी बोले कि ऐसा इन्तजाम तो बही है कि जिनको बूंदी के महाराज राजा साहिब पसंद नही करते हाना कि उनका बली अर्द्ध रज्ज्नी बहुत छोटा है और उनकी उमर पक गई है मेरी राय से तो यह आता है कि कुल राजपूताने में सरकार अंगरेज के कायदे और कानून के नबूते पर इन्तजाम का काम शुरू किया जावे जिससे सरकार नी खुश होवे और हमारे पीछे लीच सभे को ईबदी खराबी न पडे.

किशनगढ के महाराज बोले कि अगर हम सब लो गस्तुस्ती और गफलत छोड़ देवे और महनत करने और छोटे छोटे कामों के समात्तने की आदत करें तो हमारा इन्तजाम बुरा नही है हम बली के बसील से सरकार को खुश कर सकते हैं और यह बात अकल के जीवर दिवला फहै कि गैर मुल्को के कायदे कि जिनका हमको अच्छी तरह तजरुबानही है अपनी रयासतों में जारी करें और अपने आजमाये हुये खंदा को तोड़ देवे =

४५

यह सुनकर एक रईसने कहा कि नारियो हम अंगरेजों की जारवदेखा देखी करेंगे मगर उन्होंने जो हमारा दिवला ब अधिक चरार ख छोड़ा है वह कमी मोरुफ न करेंगे और हमारी महनतों और खिया कतों को कमी इन साफ की न कर से न देखेंगे जैसा कि पिछली साल की रषोट में कर नेल बुरूक साहिब अजंट गवरनर जनरल राजपूताना

ने बावजूदे कि हिन्दुस्तानी रयास्तों का इन्तजाम अगले
वक्तों से अच्छा थारईसों की शानमें तो फिर नीय ही कि
करा लिरवा कि रईस चाहे कैसे ही हों मगर सुल्क ने डुरु
स्ती दानाई और आवादी दिन २ बढती हुई मात्र मही
ती है इससे पाया गया कि रईस तो कुछ लायक नही है
मगर हमारी होशयारी और खबरदासे इतनी बति हुई

४६

एक दूसरे राजा साहिब बोलने कि हमारा इन्तजाम यहि
लेनी बुरानही था और अब नी बुरानही है अरब बार बातों
ने नाहक अपने मत लबके वास्ते बदनाम कर रक्खा है
जितनी खोट हमारे इन्तजामों में निकालते हैं हम उस
से नी बहुत जियादा अंगरेजों के कामों में निकाल स
कते हैं और अंगरेज जो हमारे कामों में दरखल देने लगे
हैं वह बेज है क्यों कि वे जब अबल हमको खुद सुरखल
रठेरा चुके हैं तो फिर उनको हमारे बनने और बिगड
नेसे क्या काम रहावे अपनी रिवरनी और फोज खर
चलेने से मलखन बरखेवें और हमारा बुरानना हम
जाने अंगरेजों के खुशामदी तवारीख लिखने वा
ले हुमायूं बादशाह पर तो यह इलजाम लगाते हैं कि
उसने ईरानियों से कंधार बे सबब छीन लिया जि
सको वह कुछ अरसे पहिले उनको मदद के बदले में
दे चुका था और अकबर का वजीर अबुल फजल हुमा
यूंको इस इलजाम से बचाने के लिये यों लिखता है
कि जब ईरानी कंधार में जुलम करने लगे और हुमायूंको

उनका जुल्म करना देखियत के ऊपर पसंद नही आया तो लाचार हो कर कंधार ईरानियों से बापस ले लिया लेकिन ताजुब है कि जब हुमायूँ मदर के बदले में ईरानियों को कंधार दे चुका था तो फिर उसको उनके जुल्म और इनसाफ पर खयाल करना जरूर न था,,

हमको अफसोस है कि वे खुशगमदी तवारीख लिखने वाले बहादुर अंगरेजों को यह नहीं समझाते कि जब आप यह इक़रार कर चुके हैं कि राजपूताने के खानगी मामलों में दस्त अंदाजी नहीं करेंगे तो फिर आपको राजपूतर ईसों की नलाई बुराई हूँदना और उनके जुल्म और इनसाफ पर नुकता चीनी करके उनकी गथास्तों में दर्ज करना क्या जरूर है =

४७

यहत करीर अकसर रईसों को पसंद आई जिन्होंने उसको सुन कर भरदन दिलाई और यह हाल हुआ कि सब कामता एक होने की जगह हरेक अपनी र कहानी ले बैठा जिसमें ज्यादातर शिकायत अंगरेजों की बेजा दस्त अंदाजी करने की थी जिनको सुन कर महाराजा साहिब बहुत तंग हुये और लूंदी के महाराज राजाजी से फरमाने लगे कि अगर हम जानते कि यहां ऐसी बातें होंगी तो किसी कानूनी और वाकिफ कार आदमी को अंगरेजों की तरफ से जबाब देने के लिये लेते आते महाराज राजाजी बोले बेशक यह बात हमारे जहन में ची नही गुजरी थी कि इस जल से में ऐ से भगडे पेश होंगे बल्कि यह यकीन

४८

था कि जिन जिन बातों के लिये यह जनसा ऐसी पोशीद-
गी से जमा किया गया है किर या सतों के बकीलों की ची-
कि जो अंगरेजी कानूनों से रबू बवा किफ और अंगरेजों-
की मनशाओं के अच्छे ने दू हो ते हैं इस अहवाल से इतिहा
नहीं दी गई है वे अब लही गु फुत गू में सब सा हिबों की रा
यके एक हो जाने से तै हो जावेंगी अगर इन मुखत लिफुख
यालों और तरहर की तकरीरों की पहिले से रबबर होती तै
एक दो बकीलों को चुन कर पोशीदा तौर पर इस खास अ
मर में गु फु क करने के लिये बुलवा लेते और अब इन सा
हिबों को सरकार अंगरेज की तरफ से तसल्ली करना वहु
त ज रूर होगया कि जब तक इनके दिलों से शक दूर नहों
गे तब तक आपकी इस मुनसफाने और बेगरज को शि
शका असर उनके दिलों में नहोगा और न इतने राजों के
एकर का समज लिस में जमा होने का जो अब तक क
ची नहु ये थे कोई एसान तीजा निकलेगा जो आपरा
ज हूताने को फायदा पहुंचा सके

यह सुन कर महाराणा साहिब ने फरमाया कि फिर अ
ब क्या करना चाहिये और इस औ के पर ऐसा शरबूस कहां
से आवेगा कि जो पंचवनक हमारे और सरकार के हक
क कालिहाजर रबके ऐसा फेरना करदे कि हमारे चाई
यों में से जिन २ सा हिबों को सरकार अंगरेज की वार
रवाई की नि सबत बेजावतगी के शक हो रहे हैं वे उन
के दिलों से जाते रहें और जो नतीजा हमको इस खास

४६

जलसे के करने से मंजूर स्वातिरंहे कहनी हासिल होजावे-
 यह सुनकर जयपुर जोधपुर और बूंदी के राजा साहि
 बड़ी गौर और फिर के साथ सोचने लगे कि अब इस अ
 मर का क्या इन्तजाय करे उस वक्त मेरे दास्त हाडाराज
 इतने हाथ जोडकर अरज की कि अगार जानकी अमान
 भाजंतो कुं अरज करूं राणाजी और सब राजोने फरमा
 या कितुम को अरज करने की इजाजत है मगर कोई बेह
 दा अरज माल करना उसने अरज की कि जबमें इस डेर
 को सजा कर यह देरव रहा था कि इसकी सजा वटमें को
 ईवात लोदाकी नहीं रह गई है उस वक्त मैंने सुना कि
 डेर के बाहर चौबदार किसी आदमी से तकरार करतों है मैं
 जो बाहर निकला तो एक अजनबी आदमी को देखा जो
 बड़ी लायकी से चौबदार के साथ बातचीत कर रहा था -
 और उसके चहरे से लयाकत और कार गुजारी पाई जाती
 थी दरया फल करने से भातूम हुआ कि कोई सुसा फिर
 आदमी है जो रात के अंधेरे में रस्ता चूल कर इधर चला
 आया था उसकी बातों के ढंग से पाया गया कि वह अंग
 रेजी अमलदारी कारहने वाला है और हिन्दी फारसी के
 सिवाय राजपूतों की तवारीख वचन जानता है जैसा कि
 उसने मुझसे पूछा कितुम कौन सरदार हो जब मैंने क
 हा कि हाडहूं तो उसने कौम हाडों की तवारीख उसी व
 क्त बडी वमदगी से बयान की और कहा कि मैं इसी तर
 ह राजपूतों के हरे करवान दान की तवारीख जानता हूं

और उनके आपसके मुकदमों और मामलों में अच्छी तरह से रामदे सक्ता हूँ मैंने इस पर चीजों को पकड़ा और इस डेरे के पीछे कैद कर के चाहता था कि कोई चौकीदार मिल जावे तो उसके साथ यहाँ से चालान कर दूँ इस अरसे में आप सब साहिब त शरीफ ले आये और मैं यहाँ के कामों में मशगूल होगया वह शरवस डेरे के पीछे खड़ा है अगर हुकम हो तो इस जल से मैं निसफरी तोर पर गुफत गू करने के लिये उसको हाज़िर करूँ वह देरवने में समकदार कानूनी और तकरीरी मानूम होता है बल्कि उसने कैद करने के वक्त शुभ से कहा नी था कि तुम मुझको अपने राजों के हज़ूर में ले चलोगे तो, सरफराज़ी पाओगे :-

राजाजी ने फरमाया अच्छा तुम उसको लाओ तो मैं ही अगर बात करने के लायक समझेंगे तो उससे बातें करेंगे नहीं तो रुखसत कर देंगे वह राजपूत मेरे पास दोगा हुआ आया और कहा लो चलो राजाजी और सब वईस तुमको याद करते हैं मैंने दूर अदेशी कर के कहा कि मुझे चलने में तो उजर नहीं मैं खुद चाहता था कि कि सी तरह इस उमदा जल से मैं पहुँचूँ मगर राजपूत सरदारों के खुद पसंद यानी आप थापी होने और कायम मिजाज होने का खयाल आता है सो तुम एक दफे और जाकर उनसे यकावट कर आओ कि पूरी तसल्ली हो जावे उसने कहा कि बहुत अच्छा और दरबार में जाकर-

अरजकी कि वह यूँ कहता है कि मैंने सिवाय इसके और
 कोई कसूर नहीं किया है कि अजान इधर आ गया अ
 व अगर राणाजी का मत लब मुझे बुलवाने से इस जुर
 मकी सजा देने का है जब तो रोबरू बुलवाना कुछ जरू
 र नहीं गैर हाजरी मैं भी हुकम दे सकते हैं और अगर और
 किसी काम के लिये याद फरमाते हैं तो मेरी तसल्ली क
 र दी जावे कि मेरे साथ इनायत और महर बानी से पेश
 आदिंगे क्यों कि मैं अहल कलम हूँ को न से धरी कहूँ या
 नी कायस्थ हूँ और मेरे बाप दादे राजों बादशाहों और र
 ईसों के सरकार दरबार में इज्जत पाते रहे हैं यह बातें सुन
 कर राणाजी ने फरमाया कि तुम खुद जानते हो कि हम
 उसको कुछ लायक समझ कर सलाह करने के लिये
 बुलाते हैं उसको कसूर और सजा का खोफ नाहक है
 और जो उसने इज्जत और खातिर करने के लिये अप
 नी जात पांत और अहल कलम होना जित लाया है से
 दुरुस्त है हम मिसल अहल कलम के उसकी ताजीम
 और खातिर करेंगे तुम सब तरहे से उसको तसल्ली दे क
 र ले आओ:-

५०

वह दोस्त फिर आया और अब मुझको उसके सा
 थ जाना पड़ा जब मैं उस डेरे के दरवाजे पर पहुँचा तो मु
 झको तकलीफ दी गई कि अपना बूट उतार दो मैंने ब
 हुत कहा कि यह बूट तो अंगरेजों के कीमती फरशों पर नी
 जा सकता है और मैं उसके बदले अपनी संबूरी उतारता हूँ

मगर किसी ने न माना लान्चार में जूला उतार कर अंदर गया
 और रईसों को गद्दी तक या लगाये बड़े ढस्से से बैठा देखा
 जिनमें राणाजी की गद्दी कुछ ऊंची थी मैंने करीब जाकर
 रकहा जय कृष्ण नाथजी की और सबको कुकभुककर
 पुजरा किया हरेक ने सलाम का जवाब दिया और फर
 माया कि आओजी नव्याजी ययजी मुनरीजी हमारा
 इरादा तो इस जल से मैं किसी गैर को बुलाने का नहीं था
 मगर तुम किस मत के जोर से आये और ऐसे आये कि हम
 म सबको तुम्हें बुलाने की जरूरत पड़ी मैंने अरज की
 कि आप मुझको गैर ख्याल न फरमावें क्यों कि मैं जी
 से सब आपसा हिनों के राजसूता के कारण खेर खाहूँ
 बूंदी के महाराज राजाजीने फरमाया कि जब तक हम
 को यह यकीन न हो जाय कि तुम हमारी रीत रसम
 से बखूबी वाकिफ हो और सरकार अंगरेज के कानूनों
 को बखूबी जानते हो तब तक हम अपना चेद तुम्हारे आगे
 जाहेर न करेंगे मैंने कहा बहुत बहतर है आप मेरा इम
 तिहान लीजिये अगर उसमें आपके नजदीक पास हो
 जाऊं तो आप अपनी मुसाद बयान करीजिये नहीं तो आ
 पको अरिहयार है तब उन्होंने कहा कि सबसे अतल ह
 नको हमारे खानदानों की वाकफ़ी दरकार है मैंने कहा
 कि अगर हुक्म हो तो राजसूतों के आमहालात के अरज
 करने पर कि फायत करूं या हरेक रईसके खानदान का
 कुछ रहाल मुदानुदा अरज करूं उन्होंने फरमाया कि

ऐसा कौन राजा है कि जिसको अपने बुतुर्गों का अहवाल प्यार न हो तुम तो हम सबकी जोहाजिर हैं तबारीख अगर जानते हो तो थोड़ी बखान करो कि जिससे हर एक राजी हो जावे:-

५२

मैंने अखिल सूरजवंसी राजाओं की तबारीख जिनमें जयपुर जोधपुर और उदयपुर के राजाओं का सिलसिला मिलता है शुरू करके जहाँ से कि यह तीनों खानदान अलहदा हुये हैं वहाँ तीन दफे कायम किये पहिले दफे में उदयपुर वालों के हालत उनके मोरिस आलायानी मूल पुरुष से लेकर अब तक मये कुछ अहवाल लिया सतजुगरपुर बांसवाड़ा देवलिया परतापगढ और राहपुरे के सिलसिले वार बखान कर दिये दूसरे दफे में बाँधों का हालत जबसे कि वे सूरजवंसियों से जुदा हो कर कन्नोज के राजा हुये और वहाँ से मारवाड़ में आकर समुद्र के किनारे तक फैल गये मध्य हालत तथा सत किशनगढ और दीकानेर के मुफस्सल कह दिये तीसरे दफे में कछवाहों की हकीकत उनके मोरिस आलायानी से लेकर महाराजा हालत तक मयत्रक सखन की सारों और खास करके राजा अलवर के तफसील वार बखान किये जिनको सुन कर महाराजा साहिब जयपुर ने बखान किया कि ऐसे साफ और रोशन हालत इन खानदानों के तुमको कैसे मालूम हुये अरज की गई कि सरकार अंगरेजी के तुफल से:-

फिर चोहानों की तवारीख शुरू की क्योंकि बूंदी और को
 टे के राजा जो हाड़ा कहलाते हैं और सिरोही के रावजी जो
 देवड़े मशहूर हैं चोहानों से निकले हैं जो कि महाराव राजा
 साहिब ने फरमाइश की थी कि दिल्ली के बादशाह पृथ्वीरा
 ज और किले राणथंभोर के मालिक हमीर चोहान के हा
 लात नी बयान किये जावें इस लिये इन दोनों मशहूर
 और बहादुर राजाओं के खानदान का हाल मथुरा नखा
 सरवास बातों के नीम राणे की रियासत के कायम होने
 तक बयान किया जो अब रयासत अलवर में शामिल
 है और वहां का ठाकुर खुद को रवास पोला पृथ्वीराज का स
 मझकर अलवरवालों की चाकरी नहीं करता है इसके बा
 द हाड़ों की वंसावली अस्थिपाल हाड़ा को मचोहान से ले
 कर महाराव राजा साहिब बूंदी तक मथुरा सरकै फि
 यत रयासत को टे के जो सम्बत १६५५ में बूंदी से अलह
 दा हुई थी सुनाई महाराव राजा साहिब बूंदी ने पूछा
 कि तुमने हमारे चरण सूरजमल से नी कत्ती मुलाका
 त की थी मैंने कहा कि मुलाकात तो नहीं की मगर उन
 की बन गई हुई तवारीख वंशशाशकर में अलबत्ता अ
 कसर नुक्ता चीनी की है :-

फिर करोली और जैसलमेर के राजों की तवारीख
 शुरू करने के लिये चंद्रवंशी राजाओं का दफतर खो
 ला उसमें जहां से जदुवंश की रगरव अलहदा हुई है उ
 सका बयान श्रीहणजी के अंतरधान होने और द्वाकों

कोड़वजानेतक और वहांसे वह फुट कर अहवाल जो नाटी
 यों और जाड़े और करोली वालों के जुदा होने तक वाके
 हुआ है थोड़ा थोड़ा अरज किया और वहांसे जेसलमेर के
 नाटियों और करोली के राजाओं का जुदा जुदा अहवाल
 आज तक कह सुनाया अगर तीसरी शहर जाड़े चाथानी
 कच्छ के राजा साहिब जी उस जलसे में होते तो उसका
 हाल ही कह देता =

फिर भाजावाड इलाके गुजरात की तवादी रवशुक्त
 करके रयासत हलवद के हालात बयान किये जिससे
 राजराणा जालमसिंध की पीढी या मिलती हैं और जा
 लमसिंध की जिंदगी का अजीब गरीब अहवाल और
 उनके कानून कायदे और इन्तजामों के जिंक और दोश
 यारी खबरदारी खेती बाड़ी और बणजव्योपार की तर
 ह्नी और जमाने लशकर गरदी भरहटामे रयासत कोटे
 की हिफाजत और दूसरी रयासतों की सलाह मसल
 तमें शामिल रहने के तफसीलवार हालात से दरबार वा
 लों को ऐसी हैरत में डाला कि अगर पाटण के राजराणा
 साहिब मेरे बयानों की तसदीक न फरमाते तो सब रई
 समुझको भूटा घसकी ठहाते और जालमसिंध के बा
 द का अहवाल जिसका एक बड़ा हिस्सा कोटे की रयास
 तसे १३०००० का मुलक राजराणा जालमसिंध की उम
 दाकार गुजारीयों में उनके पेटे को मिले जाने का है मय
 उसके असली सबबों और ब्यूहात के हाल के राजराणा

साहिब तक कहा जिसको सुन सु कर कोटे के महाराज
जी दिल में बे मजे होते थे :- " " " " " " "

अब यह गये नवाब साहिबों के सो उनके रवानदा
नकी तबारी खजी कि जिसमें नवाब मीर खां की बहादुरी
और सुल्तानी और नवाब खजीर मुहम्मद खां की
उधर हकूमत और नवाब मुहम्मद अली खां की सरद
त का दरवाई रइयत को तकलीफ वगेर देने और सरका
र अंगरेजी को हाकिमों को खुश न रखने वगैरे की कैफि
यत नवाब साहिब बहादुर हाल की मसनद नशीनी और
खजानकी नरम और सुलायम हुकूम रानी तक कह सुना
इसमें नवाब मुहम्मद अली खां के गद्दी से उतारने और
इस मामले में सरकार अंगरेजी की मुनसिफाने कार
रवाई के हालात ऐसी ही और साफ बयान हुये कि सब र
इसो ने एक जवाब हो कर फरमाया कि हमने इस मुकद्द
में को ऐसी करीन कयास त फत्तील के साथ अब तक
कजी नहीं सुनाया :- " " " " " " "

यह तबारी देवे जो इस तरह बयान की गई और जिनका
हवाला सिर्फ यहां दिया गया भा फिकपुराणी किताबों
और कहावतों के थीं और दुर्दुर्दुस्ती इनकी हालत की तहकी
कात से हु है जूका निज़ इस लिये न किया कि कहीं राज
इतर इस जो अपनी कदीमी पाबंदी को बहुत पसंद करते
हैं अब लही यु फतू में नाराज हो कर मुझको महफिल
से न उठा देवें :- " " " " " " "

सुभको और खरने से मालूम हुआ कि छंदयपुर और इंदी के रहस्य तो अपने दरवानों की तवारीखों से खूब वादियाँ और महाराजा जोधपुर और किशनगढ़ उनसे वल और जयपुर के महाराजा साहिब राजपूतों के सब दरवानों की तवारीखों और खरने और खरने जों की आमतवारीखों बहुत खूब जानते थे इंदी और किशनगढ़ के राजा साहिब तारीखदानी के खरने इतने मशहूरत में ऐसी ताकत रखते थे कि उसमें बहुत सफाई के साथ बातें करते थे खरने के रहस्य खरने और फारसी में खूब गुफत गूफत करते थे और बीकानेर के शाहपुर के राजा तालिब दरखीबी हालत में थे और जैसे जैसे खरने के खरने सब हकी अपनी खुल्की तवारीख और सिंध और बलूचिस्तान के हालात के अच्छी बाकफाई रखते थे और दो एक रहस्य बिलकुल अनपढ़ थे जिन्होंने कभी पर अपने साथियों को बाहबाह कहते हुये देखते थे अपनी बाहबाह कहने लगते थे नहीं तो चुप रहते थे :

इंदी के महाराज साहिब ने फरमाया कि हमको निश्चयतलब में सलाह करनी है उसमें बातचीत करने के लिये सिर्फ तवारीख का जानना काफी नहीं है बल्कि खरने जीकानून और धर्मशास्त्र की बाकफाई यतनी दरकार है ताकि कोई राय खिल्लाफत के न दी जावे मैंने खरने की कि मैं परमेस्वर के फजल और आप १० के शकबाल से धर्मशास्त्र और खरने की कानूनों के खरने असल्य शरी मोहम

धुल्क खुद खुद खतार ... धुल्क गैर ...

धुल्क नफ बूज का हाल जिसकी आमदनी सरकार में आती है आगे बयान की जावेगा

धुल्क मह फूज है दरा बाद गालवे की और आपसाहि बों की रया सतो से खुसद है जिसकी हि काजत बमूजिव अ हदनामों के सरकार के जिम्मे है सरकार इन सब रया सतों से खिरनी और फोज खबर लेती है और उसके अजंत उस जिम्मे चारी के जाने कामों की खबर खने और सरह दी भगडों वरबेडों का फौसला कइने और गैर इलाके के चोरो और धाडे तियों के पकडने और पता लगाने के वा स्ते रहते है उनको रया सत के अंदरूनी मामलों और वा नगी बातों में दस्त अंदाजी का अखिरियार नहीं होता इस किरम के कई कई अजंतों पर एक अफसर आला होता है जिसको रजी डंट कहते है जैसे राज हुताने की रया सतों का वजी डंट भावू के पहाड पर और से डे लइ नु या की रया स तों का रजी डंट इंदोर में और युज रात की रया सतों र जी डंट बडोदे माही कांटे और राजकोट वगैरामें और है दरा बाद वारजी डंट सिकंदराबादमें और बुंदेलखंड कारीवा में और कश्मीर का म्मी नगर में रहता है

धुल्क खुद खुद खतार वह है कि जो न सरकार को खिर नी देता है और न फोज खबर जैसे नै पालका राज और चीयान की रया सतें अगरे वहां की सरकारी रजी डंट और अरु रहते है मगर नलमें और ऊपर खिर वे हुं

रजीउठोंमें बड़ा फरक है :-

एल्कगैरजुनकईलाकोंसे सुवाद है कि जो सबंद
रके निारोंपर फरासी सपुर्तगेज और उचवालोंके स
ब्लेमें हैं उनमें कानून कथदे उन्हीं सजतनतोंके जारी हैं
जिनसे वे इडा क्रादवदते हैं सरकार को तो दगरी केशि
दाय उनमें और किसी किसमका हकहासिल नहीं है :-

मुल्कमकबूज हिन्दुस्तानके उसबड़े हिस्सेसे सुवाद
है जिसमें सरकार अंगरेजकारवाल सा है और उसके सू
बोंमें बड़े बड़े अंगरेजी हाकिम मिसल, नवाब सफटेन्द
गवरनर बंगाल और नवाब लफटेन्द गवरनर कुमालि
कमगरबी और शिमाली और नवाब लफटेन्द गवर
नर पंजाब और नवाब गवरनर बम्बई और नवाब गव
रनर मंदरास और चीफ कमिशनर नागपुर और चीफ
कमिशनर आसाम और चीफ कमिशनर अवध और
चीफ कमिशनर सिंध सरकारके जारी किये हुये कानूनोंके
आफिक हकमत करते हैं इन सब हाकिमों और कुल रजी
उन्धोंका हाकिम बालाजो गवरनर जनरल कहलाता
है मय अपनी कोबलके कलकते में रहता है उसको
मलिकामहाराणी साहिबकी तरफसे हिन्दुस्तानके मु
लकी और जंगी हकमतका पूरा अरिथयार है यहाँ क
कि किसी छोटेसे जिलेमें जीबगैर उसकी भन्जरीके कि
सी किसमका नया कानूनया कोई नया हुक्म जारी नहीं हो
सकता और इतना उरूज अरिथयार होनेपर बहती -

सरकारी कानूनों और हुकों का ऐसा पाबंद होना है कि कोई काम कानून के खिलाफ नहीं कर सकता सरकार अंगरेज यहां तक मुन सिफ और रहम दिल है कि उस ने अपनी रईयत को पूरी आजादी दे रखी है और अगर कभी कोई काम खिलाफ दस्तूर सरकार के किसी हिस्से के हा किम आला चीफ कमिशनर से लेकर खुद नवाब गवरनर जनरल तक हो जावे तो रईयत उस पर एतराज कर सकती है आपकी रयासतों का सा दस्तूर नहीं है कि राजने जो चाहा सो किया उसमें चाहे किसी का बुरा हो या न तार रईयत में से किसी को चूँ करने का प्रवित्तियार नहीं अगर भूट ची कहते कि फत्ताना आदमी राजके हुकों को बुरा कहता है तो फोरन उसकी खबर ले डालते हैं ..

सरकारी हर जिले या किसमत में दो दो हा किम आला रहते हैं जिनको साहिब कलकटर और साहिब कमिशनर कहते हैं कलकटर के ता ह्युक तहसील खजाना और मुकदमात जमींदारी और मालके फेसले का प्रवित्तियार है और कमिशनर दीवानी फौजदारी का काम करता है इसी तरह उनके कानून भी जुदे जुदे होते हैं :-

सरकारी हकूमत का यह मुखसिर जिक्कर के मालके कानूनों से हिदायत नामा मालयुजारी और दीवानी कानूनों में से एकट १४ और फौजदारी कानूनों में से एकट २५ सन १८६१ ई. और एकट ४५ सन १८६० का कुछ न

खुलासा अपनी याददास्त के माफिक पढ़ कर सुनाया जिसको सुनकर मजलिसवालों ने एक जवान हो कर अगरेजी की दानाई अकल मंदी हो शायरी और खबरदारी की बहुत तारीफ की जिनमें से बाजों ने एक ट ४५ यानी मजमूरे ताजी रात हिंद मेके ईजाले है सियत उरफी यानी हतक इज्जत के दफों और उसकी मुसत सनिया त यानी साधारणी छूट को दुबारा सुना और उनमें बड़ी गौर की जिसका सबब उस वक्त मेरे खयाल में यह आया कि आजकल जो अकसर अरब बार वाले बंद इन्तजामी की खबरों में राजपूताने के रईसों की बुराई छाप दिया करते हैं और बाजे वक्त यह बुराई सिर्फ अदावत की नजर से जो बाजे अरब बार नबीसों को किसी रईस से उसका अरब बार नः लेने या वापस कर देने से हो जाती है इसी सबब से शायद यह लोग इजाले है सियत उरफी के दफों पर गौर करते होंगे कि हम उन सूरतों में अरब बार वालों पर नालिश कर सकते हैं यानही

५६ चूंकि नवाब साहिबदोंक उस जल से में अहल इसलाम और सुन्नी मुसलमान थे इसलिये मैंने अगरेजी का तूनों का खुलासा बयान करने के बाद शेर मोहम्मदी के अस्ल बयान किये अगरे नवाब साहिब मिसल राजपूतराजों के अपने इलमफिका यावी धर्मशास्त्र को दिल लगा कर सुनते तो मैं और चीजियादा उसका बयान करता लेकिन फिर चीराजपूत सरदारों के बुश होने मुझको

शरिफोहंमदी के असूल बधान करने का फल मिल गया जिन्होंने तो हीद, जकात, और तकसीमंतर का अपनी अस्तिकर्षने दान पुन्य दायजागके मसलों को बहुत पसंद किया और महाराजराजा साहिब बूंदी ने मुसलमानोंके इलम तसबुफयानी वेदान्तके मसलों और मनसूर व गेरे सूफियोंके अहवाल को दिल लगा कर जुना और पसंद किया =

५७

गरज कि अंगरेजी और मजहबी कानूनों के खुलासों को सुनकर राणाजी और महाराजराजा साहिब बूंदी ने फरमाया कि हम तुम्हारी लियाकत और कामोंकी बाकफी से खुश होकर चरोसा करते हैं कि हमने जिस कामके लिये तुमको बुलाया है तुम उसमें अच्छी तरह से बातचीत कर सकोगे नवाब साहिब टोंकने फरमाया बातचीत करना कैसा अगर इनसे किसी काममें मदद मांगी जायगी तो अपने इलम और अकलकी ताकत से उमदा तौर पर दे सकेंगे

५८

मैंने इस सरदारगी और महर बानी का शुकरया प्रदा करके अरजकी कि मैं यह तो नहीं कह सकता कि हर एक सलाह और मशवरे मैं उमदा ही राय दूंगा या हर काममें पेशाने जाऊंगा मगर यह जरूर है कि जिस अमर में मुझसे पूछा जायगा मैं अपने मकदूर और लियाकतके माफिक जो सलाह मुनासिब और फायदा मंद लायक ऐसी बड़ी कचेहरी दे दोगी और जिससे आप साहिबों

की बहुत ही और नामवरी भय कायदे आम रईयत के वैसा
होगी और जकरंगा

६

जहसुनकर राणा साहिबने फरमाया कि मेरी सम
भमें राजपूताने का इन्तजाम दिन रविगडताजाता है
यहां तक कि वाजीवाजी रयासतों की अबतरी और
वेबंदेवल्ली की शिकायत अंगरेजी सरकार तक प
हुंची और सरकार को उन की हालत पर अफसोस है औ
र अंगरेजी अखबार नवीस राजपूतों को राजकाजमें
विलकुल कच्चा ठहराते हैं मैं जानता हूं कि इस गफल
त और बेपरवाही कानती जाजो आज कल मेरे बहुत
से भाइयों से जहूर में आ रही है एक दिन ऐसा बुरा अ
सर पैदा करेगा कि सरकार को हममें से किसी एक को ज
फदनी चरोसा न रहेगा और अखीर पर यह होगा कि सर
कार फेहु क्म से अलवर और कोटे का सा इन्तजाम सब र
यासतों में नारी होजावेगा और कुल रईय मुंह देर बने ही
रह जावेंगे इसलिये मैं चाहता हूं कि हम सब मिलकर र
यासतों के इन्तजाम के वास्ते कुछ ऐसे कायदे सुकर र
कर लेंवें कि जिनसे कुल राजपूताने का इन्तजाम एक ही
नमूने पर बहुत जलदी और आसानी के साथ होजावे
और उसके जरये अंगरेजी सरकार जो हमारी शिकायतों
को सुनते र थक गई है हमसे खुश और राजी होकर इनाय
त और महरबानी फरमावे इन सब भाइयों को एक जल
सेमें जमां करने से मेरी सिर्फ यही गरज थी और मैं अपने

रानी ले करती है या किसी गाफिल और ऐयाश रईस को राजकाज से बिलकुल बेखबर रहने और सरकारी ह्रा किमों की दोसता जानसी हतों और सलाहमशवरोके कबूलन करने से दिक होकर किसी एक शखस को उसी रयासतके और देदारोंमें से या अजंट को ही इन्तजाम र यासतके लिये सुकरे कर देती है तो इसमें क्या बुराई है और कौन ऐसी बात है जो आषकी आज्ञा दी खुद मुखता ही या अहदनामोंकी शरतोंमें खलल डाले या उससे आपके मुल्क और मालका कुछ नुकसान हो बल्कि जो मुनसिफी करी तो हरसूरतसे फायदा ही है

देरवो अलवरमें अगले राजा साहिबके मरने पर जो पांचबरसके करीब अजंटी रही तो वहांका इन्तजाम कै सा दुखस्त हो गया था और जब यह खबर राजा साहिब बालिग हुये और अजंटी बरखास्त हुई तो १४ या १५ लाख रुपये जो अजंटने खजानेमें जमा किये थे वे सब इनको मिले इसी तरह जयपुर, भरतपुर, उदयपुर, और टोक, वगैरे के रईसोंके होशसंचालने तक अजंटीका अरिहियार रहा है फिर कौन कह तो दे कि उससे रईस या रईसको कुछ नुकसान पहुंचा या कोई बेजादस्तंदाजी ऐसी हुई कि जिससे बाजे साहिबोंकी इस बेजा शिकायतकी तसदीक हो सके और यह तजवीज नी सरकारने जब जारी की थी कि किसीकी तरफसे उसके होनेमें इनकार और रणराजी नहीं पाई बल्कि इसकी बुनयाद सिर्फ रयासतों

६४

की तरफ से दरवास्त युजरने पर कायम हुई जैसा कि
 जयपुर की तबारीख से जाहिर होता है कि जब यह महाराजा साहिब बच्चे थे और राज के ओहदेदार और आई
 वेंटे अपने फायदे के लिये राज को अपने काबू में करने
 के वास्ते आपस में भगड़ते थे और माजी साहिब कहते
 क्व नहीं मानते थे तो उन्होंने नेतंग हो कर सरकार में श्या
 सत की निगरानी की दरवास्त युजरानी और वह
 मौका जी ऐसा ही था कि अगर अजंटी न हो जाती तो व
 हं रयासत के अरिख या रात को हासिल करने के लिये
 कड़े रक गड़े और बरे वेड़े उठ रवड़े होते और यह १००००
 रस कारखानदान बहुत कम और हो जाता क्यों कि ओहदे
 दार अगले राजा को तो जवान हो जाने के जुर्म में मार ही
 चुके थे अब खुद सुरवतारी की चाठ से इन महाराजा
 साहिब को जी जवान नहीं होने देते वहां के बंदोबस्त
 और काम संचालने में जैसी कुछ मुशकिलें और दिक्
 लें अजंटी को आगे आई है वे किसी दूसरी रयासत में
 कमपेश आई होंगी आखिर अजंटी का इन्तजाम का
 मयावी के साथ कायम हुआ और उससे रयासत ज
 यपुर को तरह २ के फायदे पहुंचे उनमें से एक यह है
 कि अहदना में अजंटी यह शर्त दरज हुई थी कि रया
 सत जयपुर सरकार को ४००००० सालिखाना कर दिया
 करेगी और जब उसकी आमदनी ४००००० साल से
 बढ़ जावेगी तब ४००००० के सिवाय बेशी खानी बढ़ती

के १६ हिस्सों में से ५ हिस्से और ची देने पड़ेगे :-
 अजंटी के जमाने में साहबान अजंटी की महनत और
 रको शिस से ऊपर लिरवी हुई शर्तकी मोक्ष फी के बाद
 ४०००००० सा लियाना अथ ४००००००० बाकी के माफ हो कर
 सिर्फ ४००००००० हमेशा के लिये रयासत के जिम्मे रह गये
 अगर वह शर्त मनसूर बन होती तो आज महाराजा सा
 हिब बहादुर को १२५००००० सरकार में देने पड़ते क्यों कि अ
 ब उनकी रयासत में ५०००००००० रुपये बँटते हैं इसी तरह अ
 लवे और बहुत सी तरकियों के रयासतों की आमदनी
 जी उसी वक्त से बढ़ना शुरु हुई है जैसा किसन १८३८
 ई में जब मेजर रास अजंटी हो कर बहा गये थे तो रया-
 सत की कुल आमदनी २३५००००० के करीब थी और जब सन
 १८५१ ई में महाराजा साहिब को अरिजियार दिया गया
 तो ३२५०००००० रुपये तहसील होने लगे थे :-

६५

पस इसी तरह से दूसरी रयासतों के लिये नी सर
 कारी तौर से इन्तजाम के फायदे रब बाल किये जा स
 कते हैं और जो कि अकसर साहिबों ने यह फरमाया है
 कि अंगरेज अहदनामों के रिबलना फकार रवाई कर चले
 हैं जिनमें उन्होंने अपनी दीवानी और फोजदारी के इ
 न्तजामों को रियासतों में दा रिबल न करने का इकबार
 कर लिया है इस लिये मैं उन साहिबों को कि जिनकी र
 यासतों में कई कई बरस तक अजंटी का इन्तजाम रह रहा है
 यह सब बाल कर ताहुं कि अजंटी के जमाने तुम्हारी रयासतों

की आज्ञा मन्त्री से एक कोड़ी की कमी सरकार के खजाने में दारिद्र्य लहु है या कमी कोई हुकूम या दीवानी फौजदारी या सींगे मान का सरकार के किसी कानून की कसै फेस लहु है या तुम्हारी रयासतों में नवाबग वर नर जनर ल वहादुर ने कमी कोई हुकूम या कानून लाया या किसी किसम का सरकुलर अपने मकबूजा-मुल्कों के माफिक जारी किया है :-

६६

इसके जवाब में सबसे पहिले राणाजी ने फरमाया कि नहीं और फिर जयपुर के महाराजा साहिब ने भी इनकार किया और रावराजा साहिब अलवर चुप हो रहे मगर नवाब साहिबों को फरमाया कि हमारी रयासत में शर सतक अजंटी रही लेकिन कोई हुकूम अजंटी ने खिलफ हमारी शेर और खानदानी रिवाज के जारी नहीं किया और सरकार हमारे बाप को गद्दी से उतारने के बाद हमारी रयासत के इलाजाम के लिये अजंटी मुकर्रन करती तो हम को बड़ी मुशकिल पड़ती क्यों कि उस वक़्त अकसर हमारे खानदान वाले खुद सुरित्तयार हो जाने को तैयार हो गये थे :-

६७

फिर मैंने कहा कि यह जो अलवर के राजा साहिब फरमाते हैं कि अगर हम इन्तजाअ करेंगे तो अपने वास्ते और न करेंगे तो अपने वास्ते अंगरेजों को क्यों उसकी पूछताछ करनी चाहिये कि इनको अहद नामों की रू से यह अरित्तयार नहीं है :-

परमेश्वर

इसका जवाब यह है कि परमेश्वर महाराज ने जो हिंदुस्तान की हुकमत हिंदुस्तानियों से छीन कर अंगरेजों को दी है कि वे इनसाफ करें और रईयत को जूट मारें और जुल्म के सदमों से बचाकर अमन में रखें वे कुछ इसनास्ते नहीं दी है कि तुम्हारी रयासत में तो गरीबों पर तरह तरह का जुल्म हुआ करे और वे अहदनामों की पाबंदी से बूझे चीनहीं वाह आपकी क्या अच्छी समझ है अंगरेजी सरकार जो मिसल अगले बादशाहों के आप लोगों से कुछ काम खिदमत नहीं लेती है तो क्या यह इस तरह का कच्ची नहीं रखती कि हाकिम आला होकर दोस्ताना नसीहत चीनकरे या तुम्हारी बेजाकार चार्ज और नाइनसाफियों का तुमसे जवाब न लूँ अरिंदर उसे ची तो बड़े हाकिम थानी परमेश्वर को जवाब देना है जैसे तुम अपने खुद सुरिखियार जागीरदारों मिसल नीमराणे वगैरः पर हुकमत का हक रखते हो वे से ही वह तुम पर ची रखती है अगर तुम ऐसे काम न करते कि जिससे तुम्हारी बदनामी हुई और रईयत और नाई बेटे तुमसे फिर गये तो सरकार क्यों तुम्हारी रयासत में अजंट को दस्तंदाजी का हुक्म देती उसको तुमसे अहवत थी राजा साहिब इस हालत में ची तुमको सरकार का शुक्र करना चाहिये कि तुम्हारी जान बच गई नहीं तो चार्ज बेटों को खुद तुमने ची और अपने लुच्चे खुसलमान मुसाहिबों से ची ऐसा तंग और बेईजात करवाया था कि अगर सरकार अंगरेजी का डर नहीं तो

६६

तो दूर न था कि उन लोगों में से कोई और लदार शरव स अप
नी जान पर खेल कर तुम्हारी खबर लेना जता में इस बा
त को सबूत के लिये बहुत सी मिसालें दे झुलता हूँ :-
बूंदी के राव राजा साहिब ने फरमाया कि मैं जिस रा
ज हूँ तो की है और वह सनी उन्हीं के मामला त में हो रही
है अगर तुम उसमें किसी गैर कौम की तवारीख की मि
साल दोगे या दलील लाओगे तो सुनी न जायगी मैंने
कहा कि आपने बहुत अच्छी बात फरमाई मुझे नी प
हिले से इसका खयाल था अब आप दूर न जाईये अप
नी ही तवारीख में देख लीजिये कि जब राव सूरज मल
के बेटे राव सुरताय ने आपने जाई बेटों को तरह रखे स
ताया तो उन्होंने ने राव मजहर को जला बतन करके सुर
ज मजी को ची तोड़ से लाकर गद्दी पर बैठाया या नहीं उन्हे
ने कहा हाँ सच है और जाई बेटे मिल कर जिस बात के बास
ते जिद्द करते हैं वह हो कर रहती है नहीं तो बड़ा फसाद उठ
खड़ा होता है और सरकार की तरफ से ची हर रईस को ग
द्दी नहीं नी कै वक्त यही ताकीद की जाती है कि तुम अप
नी रईयत फौज और खानदान को खुश रखना जिस
से तुम्हारी क्या सत मजबूत हो कर तरही को पहुंचे :-
मैंने कहा कि सिपाह खानदान और रईयत ये ती
नों जब ही नाराज होते हैं कि रईस उनके साथ बदसलू
की करता है अगर राव राजा साहिब अलवर अपने जाई
बेटों की नाहक दिल शिकनी नहीं करते तो वे काहे को

बिगड़ कर सरकार में फरयाद करते और क्यों वह नो बत प
हुंचती बडे लोगोने कहा है कि आदमी अपने दोस्त औ
र दुश्मन आपही पैदा करते है और फिर आपही उन
की बुराईये और शिकायतें करने लगता है :-

६६

और यह जो कोटे के महाराजजी फरमाते है कि सरका
र ने हमारे अहदनामों में लिख दिया है कि रयासत कोटे के
अहदनामों में कमी दस्तदाजी नहीं होगी औ
र अब बरखिलाफ इस्तेरईसों को गद्दी से उतारने
की नीयत से इन्तजाम रयासत काजा करके इस बात
पर मजबूर करती है कि वे खुद सरकार में अपने राज का
बंदो बस्त करने की दरखास्त युज राने से महाराजजी
की इस्तकरीर से पाया जाता है कि वे सरकार की इस्त
खुदाखलत को जो उसने एक हिन्दु स्तानी आफसर
को मुकरर करने से रयासत कोटे में की है बरखिला
फ अहदनामों के विषय लिखते है पर यह हर गिज रिज
लाफ अहदनामों के नहीं हो सकती है और इस काज बा
ब में अखल दे चुका है और यह समझना कि सरकार
का इरादा इस सुदारिखलत से रईसों को वे दरवल और
मौजूफ करने का है सरासर वे समझी है क्यों कि अखल
तो सरकार खुद खुरदतार रयासतों में जब तक कि उन
का इन्तजाम दुस्त रई दरवल देती ही नहीं है बल्कि अब
तरी और वे इन्तजामी पड जाने पर जीवत दिनों तक
हर गुजर कर के रईस को समझाती रहती है कि अपनी

रयासत के इन्तजाम से गाफिल न रहे मगर जब देखा
 ती है कि कोई उसकी फेमायशन ही मानता और अ
 बतरी रयासत की रफते रफते हद को पहुंच गई तब
 लाचार मुल की मसलिहत और फायदे आम की न
 जरसे उस रयासत की सिर्फे निगरानी अपने जिम्मे
 ले लेती है ताकि अबतरी का बंदोबस्त हो कर आयदा
 के लिये दिल चाहा बंदोबस्त हो जाय और यह कमी-
 नहुआ कि सरकार ने इस किसम की निगरानी में
 अपने आदिन का नुत और रसम रिवाज को उस मुलक
 के अंदर दखिल किया हो और रईसों के बे दरबलक
 रनेकी शिकायत भी वाजिब नहीं है क्यों कि उसने
 सिवाय मोहम्मद अली खां साहिब रईस ठोंक के
 अबतक किसी रईस को गद्दी से नहीं उतारा है राव
 राजा साहिब अजवर ने खुद ही जिद करके एजट के
 इत्फाक से काम करना मंजूर नहीं किया और हा
 थ खेच कर बैठ गये नहीं तो सरकार से ऐसा हुक्म
 ही है और न कोटे के महाराज की माजूल और बेद
 खल किया है अगर वे अपनी मामूली तुस्ती से अल
 ग हो कर बैठ जावें तो यह बात ही दूसरी है नहीं तो ये उ
 स अफसर से भिखल अपने लुसाहिव के काम लेने
 का अरिहदार रख लें -

महाराजजी ने कहा वह अफसर हमारा कहना क्या
 मानेगा जो आपको सरका आदमी समझ कर हमसे ब

बराबरी का दावा रखता है और सरकार को हमारा खयाल
 नहीं अगर खयाल न होता तो क्यों ऐसा करती मैंने कहा
 सरकार को जैसा आपका खयाल है वैसा किसी रईस
 का नहीं क्यों कि आपकी रयासत में एक छुटत ले बंद इंत
 जामी बंद ती जाती थी और आप उसका बंदो बस्त सरका
 रकी बार बार फेमायुश और नसीहत करने पर भी मुसत
 द हो कर नहीं करते थे और फिर जब यह नो बत हुंची कि आ
 पकी रयासत की आमदनी घटते घटते सिर्फ १८०००००
 रुपैके करी बरह गई और करजा १००००००० के करी बहोग
 या जिस का बंदो बस्त आपसे और आपके ओहदेदारों
 से न हो सका तब सरकार ने यह समझ कर कि अगर यही
 हालत दो चार बरस और रहेगी तो रयासत को टा बिल दु
 ल्ज बरवाद हो जावेगी एक शरबस के इन्तजाम के लिये मु
 करर कर दिया अब उसके इन्तजाम और सरकार की जि
 गरानी से जिस कदर करजा अदा होगा उससे आ
 प ही हलत के होंगे और आमदनी में अगर एक पैसा भी बढे
 गा तो आप ही के रजनि में जमा होगा यस इसमें बरात
 कसान कुशा और क्यों कर आपने कहा कि सरकार को हम
 रा खयाल नहीं है अगर खयाल न होता तो क्यों आपकी
 रयासत को संभालती और नी बिगाडने देती दूसरे बस्त
 अफसर के मुकरर होने से आपके हक और जिया रातराज
 गी में किस सरकार जिसकी जिम्मेवार अहदनाओं की रूसे
 है क्या फरक पड़ा यह सुन कर महाराव साहिब चुप हो गये

मगर मैंने फिर कहा कि आपाके दिलमें और नीकोई शक
सरकारकी तरफ से रह गया होवे तो फिर माइये और आप
ने आपको हर गिज बे दरबल नयम किये कि आप हर गि
ज हर गिज बे दरबल नहीं हैं अगर इसमें कुछ राक हो तो
सुभकी अंगरेजी हाकिमोंके सबक नेज दीजिये मैं उन
से इस बारेमें बखूबी खुफ़रत करके आपकी तरफ़ी
कर दूंगा-

७९

महाराजजी ने इसका जवाब तो न दिया मगर यह फ़र
माया कि सरकारने पाटण के जुदा करने में मेहय बल्लु
लम किया नहीं और अब पाटण वालोंको जानशीनी
के लिये गोद लेनेकी इजाजत बरखिलाफ़ अहदनामों
के देकर हमारी हक़त लफ़ीकी है जानही मैंने कहा कि
राटणके अख़हेदा होनेकी जो शिकायत है वह तो अब
कुछ नतीजा पैदा नहीं कर सकती मगर महाराजा पाटण
को गोद लेनेकी इजाजत देलेमें आपका गिह्ना अलवता
वाजिब और काबिल गौर करने सरकारके है लेकिन इस
बारेमें आपकी तरफ़से उजरदारी जसी वक़्त होनी चाहि
ये थी जब पहिले सरकारने महाराजा पाटणको सनद
गोद लेनेकी दी थी यह चाल आपसे बहुत बड़ी रह गई-
और फिर जब महाराजा ने दूसरी दफ़े गोद लेनेके मुकद
मेको छेड़ा तो उस वक़्तनी आपकी तरफ़से उजरदारी
तो हुई मगर उसकी माइल पे रवी न हो सकी अगर आ
प इस मुकदमेमें सवाल जवाब करनेके लिये किसी

जब दरवाजा का न जानने वाले और हाजिर जवाब वकील को सुकरे करते तो यह सुकदमां लक्ष्मण पकड़ कर महाराजा को इस कदर जलदी के साथ कामयाब न होने देता और शाब्द कि कामयाबी न होती =

७२

यह सुनकर महाराजा साहिब पाटलने फरमाया कि आप इस सुकदमे में क्या दलील रखते हैं और कोन सी वजुहात से सरकार के फैसले को गैर वाजिब ठहराते हैं मैंने कहा कि इसकी बहुत दलीलें हैं मगर अब उनके ज़ाहिर करने का मौक़ा नही रहा फरमाया कि जब मौक़ा था उस वक़्त क्यों नहीं महाराज जी की खेर खाही की मैंने कहा कि अब तब तो मैं महाराज जी से कुछ वास्तानही रखता दूसरे इस सुकदमे का हाल सुभ को उस वक़्त मालुम हुआ कि सरकार के हुक्म आखीर की नकल मेरे पास पहुंची अगर गीहले से कुछ मालूम होता या महाराज जी की तरफ से कुछ तहरीक मेरे नि सबत होती तो जरूर मैं इसमें उनको काफ़िसलाह देता और अब नी अगर हो मग वरन में टमें अभील कि वाचा है तो उसमें गुफ़तयू की बहुत कुछ गुंजावणी है

महाराजा पाटलने कहा अच्छा अपनी दलीलों की कुछ बयान करो मैंने कहा असल यह है कि यह मामलों की ख़से पाटल की बिरासत आपड़े गोद लीन को नहीं पहुंच सकती उन्होंने फरमाया अफ़सोस है कि तुम राजपूतों की तवारीख और दस्तूरों से वाकिफ़ हो कर चीरे सा कहते हो कि गोद लिये हुये लड़के को रखा तब नहीं

पहुंच सकती मैंने कहा कि आप गोद बैठने वाले को नहीं

खुद सबकी उन्होंने कहा कि हमारे गोदलिये हुये लडके ने
 स्वाकिलर किया है और न्यावर रिवलाफ कानून राजपू
 तके है मैंने कहा कानून राजपूतके तो रिवलाफ नहीं मग
 इस प्रहदनामि के रिवलाफ अलबता है जो बर वक्त
 अलहेदा हीने न्यायकी रयासत के हुआ था और जिस
 में यह शर्त थी कि यह मुल्क राजराणा मदनसिंघ और
 उनकी औलाद को दिया जाता है जो राजराणा जालम
 सिंघ की नसल से ही महाराजा पाटन ने कहा कि जा
 लम सिंघ की नसल की कैद महारावजी ने कब लगी
 ई थी मैंने कहा अगर महारावजी ने नहीं लगाई थी तो
 सरकार अंगरेजी ने तो लगाई थी जैसा कि प्रहदनामि
 १० अक्टोबर सन १८३८ ई. की कलम २ में जो आपके वा
 पके और सरकार अंगरेजी के दरमियान हुआ था सा
 फ लिखा है कि सरकार अंगरेजी कोटे के महाराव राम
 सिंघ की मजूरी हासिल कर के राजराणा मदनसिंघ
 और उसके वारिस और जानशीनों को जो राजपूताने
 की रीत रिवाज के मुवाफिक जालमसिंघ की औला
 द से ही रयासत कोटे से एक अलहेदार रयासत जिस
 के पगनों की तफसील फरद में अलहेदा लिखी है इना
 यत करती है

हमने यह माना कि राजपूतों के कानून में गोदलि
 या हुआ बेटा विरासत और हकदारी में मिसूल अस्त
 ली बेटे के होता है मगर यहां जालमसिंघ की औलाद

की कैद लगा देना आपके गोद लिये हुये लड़के को र
 आसत पाटण की विरासत से रोकने वाला है महारा
 जाने फरमाया कि जब यह शर्त हमसे सरकार ने की थी
 तो अब सरकार ने ही हमको गोद लेने की इजाजत दे क
 रहमारे को विरासत और जानशीनी के हक इनायत फर
 मा दिये है मैंने कहा सरकार ने जो शर्त की थी तो आज
 व नहीं कि उस वक्त रयासत को टे से इस वोर में कुछ
 न कुछ युक्त बू हुई होगी क्या हुआ अगर महाराव
 जी ने अपने अहदनाम में उसका जिक्र नहीं किया म
 गर उनको यह हक पहुंचता है कि जब सरकार ने
 उस रयासत की विरासत जो सिर्फ जालमसिंध की
 श्रीलाद के ही वास्ते थी आपके गोद नशीन को जो जा
 लमसिंध की नसल से नहीं है इनायत फरमाई तो उ
 सब वक्त महारावजी की मंजूरी हासिल करना जरूर
 थी क्यों कि जैसे उसने यह सुल्करयासत को टे से अ
 लहदा करके महारावजी की मंजूरी से आपके बाप
 को उपर खिरे वहुय अहदनाम की कलम २ के माफिक
 कैद लगा कर दिया था तो ऐसे ही उस कैद के तोड़ने पर
 नी महारावजी की मंजूरी लेना चाहिये या क्यों कि अ
 गर सरकार उस शर्त की पाबंदी से हठ करके आपको इजा
 जत गोद लेने की नहीं देती तो आपके बाद आपकी श्री
 गोद नरहने की सूरत में यह हिस्सा रयासत का महाराव
 जी का हक हो ता था नहीं सरकार को तो उन्होने नहीं दि

थाथा दिया तो जालिम सिंघ की ही औलाद को थाशत
 उसकी चाहे सरकार की तरफ से हुई चाहे महाराज की
 तरफ से और अब लतो आपकी विरासत जो सरकार ने
 व मुजिव तितं म्मे अहदना मे सन १८१७ ई. के रयासत
 कोटे में कायम की जाया है क्योंकि वोकर चाहे कित
 जी ही नमक हलाती करे मगर वह हर गिज रैसे मुसल
 किलहक विरासत का हकदार नहीं होता अगर उसकी
 यही वजह थी कि राजा जालिम सिंघ ने अपने हुसुन
 इन्तजाम से रयासत कोटे को आला दरजे की तरफ कीये
 पर पहुंचा कर हर तरफ की आफतों से उस मरे सागर दी
 के जमाने में बचा थाथा और उसके बदले में जालिम सिंघ
 घने रयासत मजूर की कुल मुरवतारी के ओहदे को
 अपनी नसल में मोरूसी करा देले की दरखास्त की थी
 तो सरकार को उसमें किफायत (जामनी) देना नहीं चा
 हिये था महाराज की मुरवतार थे और अगर यह वजह थी
 कि जालिम सिंघ ने पिंडारों पर लशकर कशी के जमा
 ने में सरकार को फोज और रसद बगेरे और अपनी तज
 रुबेकारी और उमदा सलनाह माशने से बहे सियत मु
 रवतार कार होने रयासत कोटे के निहायत बहतार और
 हुसुन किलमददी थी और सरकार ने जी उससे खुश
 होकर उन रिबदमतों का यह इनाम इनायत फरमाया
 कि उनको ऊपर लिखे हुये तितं म्मे अहदना मे के मु
 जिब रयासत कोटे की विरासत में दारिवल करके

आखिर तीसरा हिस्सा उनके पोते को दिलवा दिया तो इस
 सूरत में नी यह बरबशिषा वैजायी क्योंकि यह इनाम सर
 कार पर बाजिवधा नरयासत पर अगर कहिये कि सरका
 रने तो उन रिबदमतों के इनाम में पिडारों का फिसाद मिटा
 देने के बाद ४ परगने देकर यह इरादा किया था कि उनका
 बरबशिषा नामा जालिमसिंघ के नाम लिखा जावे मग
 रु उन्होंने ने मंजूर न करके वे चारों परगने रयासत में शमि
 ल कर दिये तो इस का जवाब यह है कि बस सरकार अप
 ने फर्ज से अदा हो चुकी थी और जालिमसिंघ अपने फ
 र्ज से, ओहदे की विरयसत की किफ़ालत देना सरकार को
 कुछ जरूर नहीं था जिससे रयासत को टेमें इस कदर
 (१) खराबियां पैदा हुई और वहां के रईसों को सरकार
 से हमेशा के लिये शिकायत रह गई :: " " "

७३

इस तकरीर का जवाब महाराजा पाटणने कुछ न दि
 या और न उससे कुछ नाराज हुये =

फिर मैंने कहा कि जो साहिब रयासतों के मौजूद इ
 न्तजास को फसंद करते हैं उनको चाहिये कि इन्तजा
 स रयासत कोटे की तारीफ और पैरवी करें जिसकी आ
 मदनी ३०००००० से कम होते होते सिर्फ १६८७ लारव
 के करीब रह गई है और करज १०००००० के करीब होगा

(१) देखो उन लउर्दियों को जो इसी शर्त के ऊपर महाराज कि सोर
 सिंघ और जालिमसिंघ के आपस में हुई और जिनका हालत वा
 रीखटाड राजस्तान और सरउलम हात शम में हालत रयास
 त कोटा के साथ मुफसिल दरज है =

यह है सिपाह के १८-१८ महीने चढ गये हैं और अहलका
 रर इयत और गरीबों को लूट खसोट कर अपना काम
 चलाते हैं बाकी लोग चूरबे चूरबे पुकारते फिरते हैं महा
 रावजी के ओहदेदारों और सलाहकारों को खिलत और
 और शाबाशी देना चाहिये जिन्होंने अपने प्रकृत फायदे
 के लिये सच्ची बात को और इन साफ को योशीदार क्व
 है और जब कभी किसी अमर की हकीकत महारावजी
 ने उनसे दरी प्राप्त की उन्होंने बहाना बाजी से उनको
 समझा दिया जैसा कि सन १८७२ में करने लजी, सी, बु
 रूक साहब बहादुर रज़ी उंट राजपूताना ने रयासत को
 टेकी बद इन्तजामियों से नारुश होकर महारावजी को
 लिखवाया कि आपकी रयासत करजदारी और तरह
 तरह की अवतरियों से मिसूल उस टूटी हुई नाव के होर
 ही है जो जंवर के करीब पहुंच गई हो अगर उस के बचा
 ने की कुछ तद्बीर नः करै तो खूब जावे इसी तरह अगर
 आप अपनी रयासत के कामों को नः संचालेंगे तो व
 ह बिलकुल विगड जावेगी कोटे के ओहदेदारों ने इ
 सरवरीते काम जखून महारावजी को इस तरह पर
 समझा दिया कि अजी करने लसाहिब जो कोटे
 में आये थे तो उनकी नाव मछ्राहों की गफलत से
 चंवर में पड गई थी जो कि अंगरेज लोग बेसुबधत होते
 हैं और जलदी से खफा हो जाते हैं इस लिये साहिब
 बहादुर मोस्फने इतनी जरा सी बात का गिह्राह जर

को निकवा है सो इस्तकामवा बयह है कि जब कभी
फिरसाहि बबहादुर मोसूफ को टेको त शरीफ ला
वेंगे तो उनके लिये बहुत उमदा नाव तेज दी जावे
गी और मन्नाहों को ताकी द कर देंगे कि उनको व
डी हो शायरी से चं व जतार देवें थई सुकर मन्ना रावजी
ने फरमाया बहुत अच्छा -

इस बात से तमाम लोग महफिल के रव्व हंक्षेने क
हाहंसी की बात नहीं है राज इताने में हमेशा ऐसा ही होता
है और रईस लोग जो सरदारी के घमंड से खुद काम कर
ने को ऐब समझते हैं अपने और देदारों के दबाव में रह
ते हैं राज इताने के कामदारों को धूरे धूरे अरिजियार कदी
मसे मिलते आये हैं मगर जब कभी कोई हो शायर और
सथाना रईस हुआ तो कामदार ने अपनी हद से जियादा
पांच न फेलाये और खास २ काम वगेर उसकी इजाजत के
न किये और जो ऐसान हुआ तो जाहिर है कि वजीर बाद
शाह बन जाता है और बाद शाह मिसल बाद शाह शतरंज
के उसके हाथ में हो जाता है कि जिधर चाहा उधर रासते
परतगा दिया यह जरूर है कि सब कामदार एक से नहीं
होते बज्जे ईमानदार खेर रबाह और लायक ची निकल
आते हैं मगर बहुत थोड़े जैसे पंडित शिव दीन मुसाहिब
राज जयपुर और राज राणा जालिम सिंध मुरिजियार
रया सत कोटा महाराजा साहिब पाटण के दादा (९) जिन
की हो शायरी और खबरदारी और खुश इन्तजामी की तारी

(९) इन दोनों नामों मुसाहिबों की कारवाई यों से हमको पूरी वाकफ है

फैतवारीरव राजपूतानेमें बहुत कुछ खिरबी हुई हैं और साह
 बजादे उबेदुखारवां साहिब नायबरया सतवोंक, और
 कोई कोई अइसकार ऐसे ची होतै हैं कि दगा फरेब और
 लोमलाल चसे अपने मालिक का घर उजाड देतै हैं जे
 साकि जैसे लमेर के पिछले कामदार जालिम सिंघने
 किया था कि रावल मूल राज के चाई और बैठे ची उस के
 मुलम से नहीं बचेये और खु रावल को उस ने नजर बंद
 कर रखा था :-

राजपूतानेमें नायब को इस कदर अरिख्यार मिलजा
 ने के कई सबब हैं जिनमें से १ यह है कि जिसको किसी र
 यासत की नायबी मिलती है उसको उसके साथ ही तमा
 म छोटे बड़े काम करने का अरिख्यार मिलजाता है और
 उसका हुकम ईयत सिपाही और ईसके घराने पर चल
 ने लगता है जिससे सब लोग उस के ताबेदार होजाते हैं
 अगर कोई हुकम अदुली करे ची तो सजा पावे और जोर
 ईस से उसकी बेजाबतगीयों की शिकायत करे तो वहां
 किसको ध्यान और ऐश अराराम से कहा इतनी फुरस
 त कि उन बातों को सुने और समझे और तहकी कात कर

और उसके वसीले से हम कह सकते हैं कि जातकीयां उनके इन्तजा
 मी १० जयपुर और कोटे में हुई वैसी कज़ी नही हुई थी चूनाचे जयपुर
 रकी जमा पंडितजी के वक्त में ३३०००० से ५००००० तक बढ़ गई थी
 और कोटे में जामा सिंघले ५०००० की तहसील ४५०००० की कर
 दी थी इससे जयादा और क्या सबूत उनके इस इन्तजामी का होगा :-
 (१) साहबजादे अबदुखारवां साहब चंद जपेशतर टोंक में नायबरया
 सतथे उनके अहदमें बहुत सी दुरस्ती और तरकी हुई और रयासत
 की आमदनी में भी कीसी ल ३५००० सात्ताना अकरीब इजाफा हुआ (१)

(१) यह साहिब अब फिर टोंक का काम करते हैं.

के तदारक करे जिससे नायब को कान हो जावे और वह आकांक्षी दिलवाही हुकूमत न करे ऐसे शारबसों पर रदगी रबराबी आती है और वे नायब के दुशमन समझे जाकर जान और माल से जाते रहते हैं :-

इसरी वजह रईसों की बेइतमी और गफलत है कि रात और दिन बेफायदा कामों में लग रहते हैं और जो अजकल होशियार रईस कहलाये जाते हैं वे इतने ही होशियार हैं कि जब वक्त अपनी नाजुक तबीअत पर कवाब डालकर पहर छः घड़ी के लिये दरबार में बैठ जाते हैं और जो हिसाब किताब अहल कार सुनाते हैं सुन लेते हैं या किसी मुकदमें की मिसाल पढकर हुक्म अरबी या फेरसने के लिये जैसा कुछ पढा दिया जाता है वैसा ही बेची फरमाने लगते हैं कि इस मुकदमें में ऐसा कर दो और फिर उनके कहने से कलम जुदा कर उन कामों पर कुछ छल कीरे कर देते हैं जिनको श्री भिती या दस्तखत कहते हैं अगर किसी रईस में बहुत ही बहुत दखल दिया तो यह किया कि रबासरवास और बडे बडे काम अपनी मंजूरी पर ररव कर छोटे कामों को अपनी तनदिही के लायक न समझकर अहल कारों की राय पर छोड़ दिया जिनमें बेजावतगी और आवतरी पडते पडते बडे बडे कामों में भी पड गई :-

आज कल वाजीरयासतों में अंगरेजी सरकार की देखा देखी को नसल और पंचायत में भी देखा कल करी

काररवाई होने लगी है मगर उसमें नी जब तक कि खुद
 रईस दिल लगाकर रात दिन उनके हालात और कार
 रवाई को देखता न है तब तक उसको जैसा कि चा
 हिये इन्तजाम का फायदा नहीं हो सकता बल्कि कई श
 हा किमों के होने में और भी ज्यादा खराबी है जैसा कि
 जयपुर के लोग बहुरायल कौन सल के सुकरर हो ✓
 निके बाद से कहने लगे हैं कि पहिले तो एक ही बुरी गार
 को देने से काम हो जाता था और अब आठ बुरी गा
 रों को देते हैं और जब भी पूरा नहीं पड़ता =

यह सुन कर कई राजाओं ने फरमाया अच्छा सा
 दिव हम बुदे हमगा फिल हमारा इन्तजाम बुरा हम
 री काररवाई बुरी जो कुछ तुमने कहा वह सब सही
 मगर यह भी तो कहो कि तुम्हारी सभक में हमारी
 रया सतो का इन्तजाम कौन से तरीके से हो सा है ^{सु} ~~हो~~
 है कि जो हमारे और हमारी रईयत के हक में नी फा
 यदा मंद हो और सरकार अंगरेजी नी पसंद करे =

७६

मैंने कहा कि रया सतो का इन्तजाम बेशक दुरु
 स्त होने के लायक है क्यों कि वह तरह तरह की उल
 ट पुलट हो जाने से बिगड गया है उसके कायदे अपने
 ढंग पर नहीं रहे उसकी जड़ पोली हो गई है और मुरतनि
 क मुल्कों के तरीके उसमें मिल गये हैं चुनाचे जब हम मो
 जदा इन्तजाम को उस इन्तजाम से मिलते हैं कि जो मु
 सलमानों के अने से पहिले था और जिसका जिक्र तब

रीखमें है तो आसमान का तफावत पाले हैं जैसे मुसल
 मानों का आना यहां की और सब बातों को बुकसान दे
 ने वाला हुआ जैसे ही इन्तजाम के हक में ली रखल लडा
 लने वाला था चुनाचे तुरकों के जमाने में राजपूतों पर
 बड़ी मुसीबत थी उनके शहर और मकान सब छीने ग
 ये थे मुहत्तों की मुफलिसी मुसीबत और जंगलों और
 पहाड़ों में रहने से उनके इल्म और उनकी लिया कतों
 पर पानी फिर गया था यह बे इल्मी और बेतहजीजी जो
 ७७ आजकल राजपूतों में देरवी जाती है उसी नाम वाफिक
 जमाने की निशानी है नहीं तो अगले राजपूत लायक हो
 तैथे चंद्राट की किताबों में अकसर उनकी इल्मी लि
 याक त का बयान आया है उनमें से एक रावल समर सिं
 घ की ही मुफलरू इन्तजाम और राजकाज के बाबत से
 सी है कि बड़े बड़े लायक अफसर उसकी तारीफ करते
 हैं मगर क्या कीजिये कि जब उनको मुसीबतों ने आकर
 ऐसा घेरा कि जान बचाने के ही लाले पड़ गये थे तो वे इ
 न्तजाम को क्यों कर कायम रख सकते थे आखिर को
 वह बिलकुल बिगड गया और उसी हालत में उसके अं
 ७८ दर कुछ कुछ बातें मुसलमानी इन्तजाम और कायदे
 की नीदा खिल होगई फिर जब मुगलों के वक्त में रा
 जपूतों की कदर हुई और वे उनके दरबारों में रहने लगे
 तो उन्होंने ने खुशगमद से याहकी कत में बहतर समझ
 कर अकसर बातों में उनकी देरवा देरवी अमल किया

खास करके मुल्क और अदालत के कामों में तो उन
 के कदम पर कदम रखवा सिपाहियों और सरदारों
 के दरजे उनके तरीके पर मुकर्रि किये ओहदे दारों
 के नाम फारसी में बदल दिये इतर की लिखाव
 त बादशाही कागजों के नमूने पर कवी चुनचि यह सब
 बातें आज तक हर एक रयासत में कुछ न कुछ पाई जाही
 हे मुगलों के बाद मरहदोने अपना जाल फैलाया उन
 के बरताव और काररवाई ने जी राजपूतों के खानगी का
 मोमें थोड़ा बहुत असर किया फिर अंगरेजों का कदम
 ७६ आया और वे उनके कायदों पर अमल करने लगे मगर
 अंगरेजों की देखादेखी जितनी फोजी कामों में हुई उ
 तनी मुल्की कामों में नहीं हुई तो खयाल कीजिये कि
 चार सुरत लिफ अमलदारियों के तरीके राजपूतों के
 ७७ मुल्की कामों में दगरि बल हुये और वे बदलते बदलते ऐ
 से बिगड़ गये कि अब किसी ढंग पर नहीं हैं ढंग का तो ना
 म लोगों की जबान पर रह गया नहीं तो सब काररवाई
 बिढंगी होती है मगर हम यह कभी नहीं कहेंगे कि यह सब
 बरबराबी सिर्फ ऊपर लिखी हुई उलट फेर से हुई है क्यों
 ७९ कि इसके सबब और ची हैं उनमें सबसे बड़ा यह है कि र
 ईसों को इन्तजाम की परवानही वे बचपन ही से ऐश में पड
 कर आलसी और निकमे हो जाते हैं उनकी तारनी मज
 न के दरजे के लायक नहीं होती उनको इल्म बहु^त कम हो
 ता है और जब इल्म नहीं तो होसला कहां फिर अगर रया

सतकावो भूउठावें तो किस की ताकत से उठावें और कौ-
 दर उसकी मुद्या किलोंको आसान करें अगर इल्म हो तो
 सब कुछ हो सके इल्म की ताकत हकीकत में एसी ही हो
 ती है और अकल जो आधी करामात कह जाती है इल्म
 की एक चलती हुई कल है सब राजोंको जल्द है कि इल्म
 पढ़ें और क्या सतकी हिकमत सीखें और उसमें इमति-
 हान दें कि जिसमें हर तरह की स्त्रिया कल पैदा कर के राज
 करनेके वासते तसल्लीके लायक हो जावें और इसका
 मने फिर किसी का धोका नरवावें :-

८२

दूसरे इसके बाद इन्तजाम की दुइस्ती कामदार ओह
 देदारोंके लायक होने पर है यहां ओह देदारनी अकसर
 वैसे ही बे इल्म और नातजरुबे कर होते हैं और उनके
 रईसों की तरफसे इल्म और स्त्रिया कल का इमतिहा
 न होकर ओह दे दिये जाते हैं बल्कि अकसर तो ऐसा
 होता है कि बड़े बड़े ओह दे नालायक लोगोंको सिर्फ
 महरबानीसे मिल जाते हैं और जबतक उनके ऊपर
 महरबानीकी मजर रहती है चाहे वे कितने ही काम बिगा
 डते रहें मोकूफ नही किये जाते बल्कि जैसे वे होते हैं वैसे
 ही उनके साथहत कामोंमें भरती हो जाते हैं जिससे अज
 ब गडबड भाला हो जाता है और कोई किसीकी नहीं सु
 नता जो जीमें आता है वही करता है ऐसे ओखे बे स्त्रिया
 कत और हीमायती ओह देदारों से जैसे कुछ इल्म और
 सितम रईयत पर होते हैं और क्या सतके काम बिगड़ते हैं

सोजा हिर है और उनकी मिसालें हर एक रयासत में मो
जूद हैं और इस मौके पर उनका जिक्र करना शायद कि
सी साहिब को नागवार हो -

अरु सररयासतों में यह ची वस्तु है कि अहलकहों
को तनखाह में जागीर दी जाती है और जागीर जेवे ओहदे
उनके खानदान में मोजूती हो जाते हैं और जागीरदारों
की ओलाद का अन्न पद रहना और खराब होना एक ज
रूरी बात है क्यों कि जब वे देखते हैं कि बापदादों की जा
गीर बहाल और ओहदा बद्रूद कायम है अ पदते लिखते
हैं और न किसी तरह की लिखाकत और पाक फी हासिल
करते हैं बल्कि आरामतलब हो कर दोचार घड़ी दरबार में
जा बैठते हैं इस सुस्ती से उनके मातहत था और लोग उ
नके काम में और उनके बोहरे उनकी जागीर में शरीक
हो जाते हैं राज वाले कदीमी खानदानों की परवरिश
कारबखाल करके उनका पुरालदारु कनहीं करते पस
स तरह होते होते राज का काम नी बिगड़ता रहता है औ
र बेखुदनी बिगड़ते बिगड़ते नादार हो जाते हैं इस सू
रत में अगर हर रयासत में रईयत को पदाने के लिये मु
सते दी के साथ तालीम का सरिस्ता जारी किया जावे
और राज की नौकरी लिखाकत की सनद हासिल कर
ने पर मिलना करे और मोजूली ओहदे वालों को जब ल
क कि मरुने में फटकर अच्छा इव लिहान न दें काम न
पिले और बडे बडे ओहदे लिखाकत और कार गुजारी

देखकर दिये जावें और सिफारिश और महरबानी को
नालायक और बे हफदार लोगों से उबार कर दी जावे तो मु
मकिन है कि बद इन्तजामी की सब शिकायतें जाती रहें
और रईस व अहल कारों के लायक होने से सारी कार
रवाई असूल इन साफ के ऊपर हुआ करे :-

तीसरी वजह यह है कि अकसर रयासतों रबास कर के
जागीरदारों की सरकारों में राजका काम महाजनों को
सिर्फ इस खयाल से दिया जाता है कि यह लोग जिया
दा अरिजियारपाने और दोलत में दहो जाने पर राजका
दावा नहीं करते बल्कि राज नव चाहे आसानी से उन
की कमाई को छीन सकता है जैसा कि इस कार रवाई के
बाबत कदीम से यहां यह मसल मशहूर चली आती
है कि "धुत सही रईयत को लूटे राजा मुत सही को लू
टे" इस किसम की कार रवाई में रईयत पर सरासर जु
ल्म होता है क्योंकि बनियों का कायदा है कि वे हरत
रह से रुपये समेटते हैं और जब तक अपना मतलब
नहीं देख लेते किसी की बात नहीं सुनते मसल उन की
कार रवाई कुल बे कायदा और बे कानून होती है सि
वाय इसके जिस राज में महाजन कामदार होते हैं
वहां अकसर कंजूसपने और किफायत का बाजार
गर्म रहता है और ऐसे काम कम होते हैं कि जिनसे
रयासत की रोनक और नाम वरी बटे :-

चौथी वजह यह है कि अकसर रयासतों मिसल

मारवाड़ बगैरामें तहसील दारी कारकुनी और खजान
ची के आहदे नीलाम होते हैं जो बढकर नजराना दे लाहे-
उसीको मिलजाते हैं वहां लियाफत और इलमियत नहीं
देखी जाती रुपये को बड़ी चीज समझते हैं इस किसमके
ओहदेदार अपने इलाके में जाते ही रईयतको लूटना शु
रू कर देते हैं क्योंकि अबलतो उनको यह तलबों से लगी
होती जितने रुपये राजमें दिये गये हैं वसूल करने दूसरे उ
नको यह यकीन नहीं होता कि देरिये कलची हम रहते
हैं या नहीं और यह खयाल उनका सही होता है किसवा
सते कि वरस छः महीनेके बाद ही रईयत की नालिश
होने या दूसरे शरवसके जियादा नजराना देने पर वह
काम उनसे छिना जाता है और बेफिर आसते क हिसा
व समझाने बगैर की खेचारे खेचमे फसे रहते हैं :-

पांचवे रिशवतने राजधृतानेके इत्तजामको खरस
व कर रक्कव है रयासतोमें रिशवतकोई वडा जुरम नहीं
है ला ख पचास हजाररुपेके दावेया लूर और खूनके
मुकदमेमें तो खुद वई सलोगनी रिशवत लेले हैं छुं दे-
ओहदेदारोंकी तो गिन्ती ही क्या है वेतो दो दोपैसे लेकर-
गरीबोंका काम बिगाड़ डालते हैं अकसर रयासतोमिस
ल जयपुर बगैरमें तो यह रिशवत ऐसी आम हो रही है-
कि कचहरियोंमें हरेक शरवस मुकदमेवालोंसे अपना
हक ठहरालेता है और हाकिमलोग दोचार ऐसे आद-
मियोंको लगावरवते हैं जो बालार सुदई और सुदयते

से मामला देखा करता है दीये बगैर कोई काम नहीं होता और जिसके पास कुछ देने को नहीं होता वही मारा जाता है किस लिये कि जो बढ कर चादी की जूती मारता है उसी का तूती बोलता है :-

८९

जयपुर बगेर में ओह देसों को रिशवत अकसर पूजन के बक्ष दी जाती है उस बक्ष लोगों को आने की सदर परवानगी होती है मुकदमे वाले बधा करतें हैं कि रोजी माधुप की पुडियों में छुहरे रख कर ले जाते हैं दिन को आगे बढ कर झल फजों के साथ कि यह चीज मैंने आपके पूजन के लिये दूर से मंगवाई है उनको हात में देते हैं जानने वाले उसी बक्ष ताड़ जाते हैं और आपस में इशारे करतें हैं मगर रिशवत देने वाले और लेने वाले का कुछ नहीं कर सकते कहते हैं कि जयपुर में पहिले रिशवत नहीं ली जाती थी बल्कि सिंगी भूत्ताराम तो रिशवत की सजायें हात कटवा डालता था मगर जब रावलजी का दोरु आ रिशवत ने बड़ी तरकी पाई और रावल को नसल के मुकरर होने से तो वह कुमाल को पडुं च गई हरेक शरवस को १० आदमियों की पुही गर्भ करनी पडती है तब कहीं उसकी मिसल बढी जाती है फलजहां यह लालच होवहां सच्चाई कहां जो राजकाज का एक बहुत बड़ा अतूल है :-

९०

छूटे जो आज आला दरजे की स्यासतें रवयाल की गत हैं जैसे जयपुर उदयपुर और अलवर बगेर उन के देस बस्त की अजब के फियत है कि वहां दफतर तो फा

फारसी है और हाकिम लोग धुरीसी हिंदी चीपटे हुये नहीं
 हैं और जो दफतर वाले हैं वे अकसर परदेसी हैं वे न तो अ
 च्छी तरह से वहां की बोली को समझते हैं और न मुलक
 की रीत रिवाज को जानते हैं पर ऐसे लोगों से बंदोबस्त
 बनता नहीं बल्कि और बिगड़ता है अब खयाल कि जिये
 कि वे दफतर और ये दफतर वाले हाकिम और रईयत के वी
 च्छे में एक बड़ी चारी आड हो रही है क्योंकि रईयत का अस
 ली इजहार हाकिम तक नहीं पहुंचता रईयत अपनी जवा
 न में कहती है दफतर वाले दूसरी जवान में लिखते हैं—
 और जब वह हाकिम को सुनाया जाता है तो उस वक्त न
 हाकिम उसको अच्छी तरह समझ सकता है और न
 इजहार देने वाले को यह यकीन होता है कि मैंने यही कहा
 था बल्कि बाजे वक्त तो यह होने लगता है कि
 हाकिम कहता है कि क्या कहा और वह कहता है कि मैंने तो
 यह नहीं कहा था दफतर वाले दोनों को ही धूर ख ठहराते
 हैं और मुकदमे के लोट जाने पर रईयत हाकिम पर नास
 मझी का इलजाम लगाती है और हाकिम रईयत को
 नासमझ ठहराता है यह कोई नहीं कहता कि अमले वा
 ले यह बड़े झड़ते हैं अगर ये लोग न हों और रईयत और
 हाकिम ही पर चारे बातचीत कर लेवें या उनके इजहार उन
 की जवान में लिखे जाया करें तो कुछ ची दिक्कत न हो मगर
 वहां तो फारसी उर्दू की धजियां उड़ती हैं बदरवती और ग
 लत नवीसी के जो हरदिर^{वा} ये जाते हैं ७ अक नूर सनहाल

१७ कबूतर से जाल पटा जाता है और आलूबुरवारा उलू
 विचारा पढनेमें आता है सिदाकत और सदअफत एक
 तरह फिक बादे और फुक बादे एक सूरत से लिखा जा-
 ता है नलावे बैचारे ठाकुर कि जिन्के बाप और दादे ने भी
 फारसी नहीं पढा और उनके गुरु ने भी ऐसी तहरीर नहीं
 लिखी वे इन बातों को क्या जानें या तो उनको अफस
 रही करना नहीं चाहिये या उनका दफतर उनकी जबा
 नमें होना चाहिये कि उनकी फाररवाई तो किसी ढंग पर
 हो यह कुछ अच्छी बात है कि वे तो बैठे हुये लोगों की सू-
 रत देर बरहे हैं और सरिशतेदार है कि फरफर पढ रहा है औ-
 र जहान ही पढा जाता है सतर की सतर उडा जाता है खुद्ई
 खुद्ई जले सुन खडे हुये खेर मनारहे हैं कि कहीं ठाकुर सा-
 हबकी जवान से कोई हुक्म सुकर मे का बिगाडने वाला
 न निकल जावे और ठाकुर साहिब का यह हाल है कि गों-
 ही सरिशतेदार चुपहुआ और उन्होने हुक्म दिया कि
 जो परम परासे होती आई है वह कर दो फिर तो जो सरि-
 शतेदार के खयाल में आया वह उसने हुक्म अरवीर लि-
 ख दिया और ठाकुर साहिब ने मोहर कर दी :-

८६

८७

८८

ठाकुर लखधीर सिंघ सुरवतार रयासत अलवर मोह
 करने के वक्त सरिशतेदार से कहा करते थे कि हम तो
 छीपे हैं तेरी आरसी फारसी में नहीं सम्भते तू जानते
 रायाम जाने ले यह मोहर मेरी जी छापदे इसी तरह से ठा-
 कुर सम्भदर करण नटवाडे वाले जो कोन्सल जयपुर के

मेंबर है कहा करते हैं कि हम लोग रामजी दासजी (१) के बेल हैं जिधर वे जोत देते हैं जुत जाते हैं जयपुर ही का जिद्ध है कि एक दफे सरिशातेदार ने धानिदार की रपो दहाकिमको झलफजों में सुनाई कि सुहायलेको हर चंदतलाश किया मगर वह नही मिला आपने फरमा या अच्छा धानेदारको लिखदो कि वह हचंदको ही पकड़के चजदे यह सुनकर अमलेवालों ने बड़ी मुशकिलसे उनको समझाया कि हरचंद किसी आदमीका नाम नही है बल्कि फारसी बोलचालका एक लफज है ऐसेही एक ठाकुर साहब ने उनचे का लफज सुनकर कहा कि काई अवार चनाछै—

६३

महाजा साहब जयपुर को चाहिये कि या तो दफतरोंको हिंदीमें बदले या ऐसे लोगोंको हाकिमकरें जो उर्दूफारसीजबान जानतेहों और आधातीतर आधा बटेरहानेसे तो सरासर खराबी है हमारी दानिस्तमें तो हिंदीका दफतर हो जाना वह तर है कि जिससे रईयत नी सरिशातेकी तहरीरको अच्छी तरह से समझसके मगर वे पढेहाकिम और ओहदेदारोंको फिरची बदलदेना चाहिये कि कारगुजारी और मामलेकी समझबगैर इल्म के नही आती डिग्गीके ठाकुरकी नकल मशहूर है कि कपतान जान लडतू साहब ने उनको जयपुरकी मुसाहबतदेनके लिये बुलवाया था जबवे साहबके पास आकर बैठे तो साहबने पूछा कि ठाकुरसाहब आपका धि

६४

(१) रामजी दासजी महाजा जयपुर के भीर मुनशी हैं—

६५

जाज अच्छा है उन्होंने जवाब दिया कि डिग्गी यहां से १२ को
 स है साहिब ने फरमाया कि हम डिग्गी को नहीं पूछते तुम्हारे
 रामिजाज अच्छे हैं कहा मिजाज तो काकाजी मरजाद सिं
 घजी जाने साहिब ने दिक् हो कर उनको उन्नी वक्त करव
 सत कर दिया - ऐसी साहिब अजंट मारवाड़ ने जो धुपु
 रके एक हाकिम से पूछा कि तुम्हारे परगने में फसल कै
 सी है कहा मेरी जात प्रीकरण ब्राह्मण है साहिब ने यह स
 मझा कि इसने फसल के मायने नहीं समझे मारवाड़ी बो
 ली मैं कहा कि हम जात को नहीं पूछते सारबको पूछते हैं क
 हा मेरी साख क हवा है तब साहिब ने खेत की तरफ इशारा
 राकरके कहा कि हम इसकी बाबत पूछते हैं कहा यह जमी
 न धोजे भोगड़े की है वह साहिब ने तीन सवाल उर्दू और
 मारवाड़ी जवान में किये और तीनों रवाली गये =

यह राणा साहिब मोजद है इनसे पूछिये कि इन्होंने क्यों
 फारसी दफतर को हिन्दी में बदल डाला महाराणा साहि
 बने कहा हां सन १८७२ ई की बात है कि मैंने अहल कारों
 के धोका देने से एक ऐसे कागज पर दस्तखत कर दिये थे कि
 जिसमें लिखा तो कुछ था और मुझको सुनाया कुछ था -
 जब मैं उस गलती से वाकिफ हुआ तो मैंने कोरन फारसी
 की तहरीर मोहफ कर दी और हमारे बुजुर्गाने अंगरेजों से
 खत किताबत हिन्दी में इसी मतलब से जारी रक्की है कि
 उसमें कोई धोका न हो जाय जो आज तक साहिब लोग
 की तरफ से हमारे नाम हिन्दी रवरीते आते हैं और मैंने सु

नाहै कि अंगरेजी सरकारने जी हिन्दी दफतर अकसर
 तुलना में कर दिये हैं और यह बड़े फायदे की बात है कि अ
 दालतों की काररवाई रईयत की जवान में हुआ करे क्योंकि
 अदालतों सिर्फ रईयत की दादसी के वास्ते होती हैं :-

मैंने कहा हूं सरकारने हालमें ही सूबे बिहारमें फारसी
 की तहरीर मौजूफ कर दी है और हर जिले में सरकारी दफ
 तर उसी जिले की जवान में हैं जैसे बंगाले में बंगाली बि
 हार में कैथी उड़ीसे में उड़िया गुजरात में गुजराती दक्षि
 णों में मरहठी मंदरास में तिलंगी जवाने बोली और लि
 री जाती है राजपूताने में उर्दू और फारसी कारिवाज इ
 म सब बसे हो गया कि शुरू अंगरेजी अमलदारी में य
 ह मुल्क दिहवी की रजी डंटी के शामिल था अगर अबरा
 जपूताने के सरकारी दफतरों में नागरी तहरीर जारी क
 र देने के वास्ते अकसर राये दी जाती है अगर करने ल
 किटींग साहब अब तक राजपूताने के रजी डन्टर होते
 तो कमी के हिन्दी दफतर होगये होते और अब करने ल
 गेली साहिब जी इसी फिकर में हैं अगर आप सब रईस
 लोग मिलकर इस अमर की दरखास्त करें तो बहुत ज
 लदी इसका जारी होना हो सकता है यह बात सब राजा
 ओं ने मंजूर की और मैंने फिर अपना रेव्यू वावत इन्त
 जाम्मोजू दे राजपूताने के शुरू किया :-

सातवें बाजी रयासतों में अंगरेजों की देखा देरवी
 का नूननी बनाये जाते हैं और उनके ऊपर बहुत कुछ

धमंड पी किया जाता है मगर यह ची वाहियात है क्यों कि प
 हिले तो वे कानून अंगरेजी कानूनों की हवारात को काट कू
 ट कर बनाये हैं दूसरे हमने यह कभी नहीं सुना कि किसी
 रयासत में वकील या हाकिम या और किसी ओहदेवा
 रको कानून का इमतिहान लेकर जरती करते हैं या वे लो
 ग कानून के ऊपर चलते हैं और हद काम में उनकी मन
 शा के भाफिक पूरी पूरी काररवाई होती है या रईयतको
 यह अरबतियार है कि खिलाफ कानून काम करने की
 सूरत में वह हाकिमों से भगड सके यस यह कानून
 सिर्फ नाम ही ले लेने के हैं या ताक में धरे रहने के बनवाने
 और छपवाने में नाहक वक्त और इजारों रुपया खर
 चकीया गया है कोटे और जयपुर के कानून में ने जी दे
 रवे हैं और खन रयासतों में उनकी मनशा के मुजिब अ
 मल दरामद होने की चीतहकी कातकी है मगर यह ही
 साबित हुआ है कि यह कानून न रईयत के हक में कुछ
 फायदे मंद हैं और सब हा उनकी तामील होती है

कानून ऐसा होना चाहिये कि जो राज और रईयत दो
 नों के हक में फायदा मंद होवे और उनके बनाने में रई
 यत या उसके बकीलों को जी शामिल करना चाहिये
 और रईतको आजादी देना चाहिये कि जिससे वह अपने
 पने और राज के हक के बाबत आजादी से युक्त गुरू
 रसके यह क्या कि कई बंगालियों या हिन्दू स्तानियों
 को नोकर रखवलिषा और उन्होंने अपने अंगरेजी जान

नैके धर्मों में जैसा चाहा वैसा एक भजसूत्रा अंगरेजी का चूनों से कतर बोंत करके बना लिया और उसका नाम काबूल रखा सतर सव दिया न उसको रईयत ने समझा और न राजने जाँचा न उसके बाबत दैसी बड़े बड़े आदमियों की राय ली गई जारी करने में यह जल्द ही की कि भटपट उसको छपवा डाला एक एक नकल हर सारे हिन्दुओं में भेज दी कि उसके बसूजिब अमल करें मगर अमल कौन करता है नहमी एक फजूल चीज की तरह सदियाते में फड़ार रहता है बहुत दुआतों कभी किसी सुकदमे में दफ्ता वगैरे कायम करने के वास्ते लबा कर दे रख लिया नहीं तो खेर :-

काबूल का बयान तो हो चुका अब बंदो बस्त का हलालु निधे कितना मरयासतों में जियादातर रवाम तहसील है यानी लाटा कूता होता है जिसको रईस और रईयत दोनों कदीबसे पसंद करते चले आये हैं धर्मशास्त्र में भी अकसर इसी किसम के बंदो बस्त का जिक्र है और इसमें शक नहीं कि अगर ब्यान्त और ईमानदारी से तहसील की जावे तो बटाई से बहतर तहसील का और कोई कायदा राज और रईयत के हक में सुफीद नही है लेकिन लोगों ने बेईमानी से इस तरीके को ऐसा खराब कर दिया है कि रईयत के वास्ते निहायत दुरेब देने वाला हो गया है चुनाचे बूदी के (१) सिबायत माम रयासतों में जमींदारों से

(१) हूदी में जमींदारों की बड़ी आयत की जाती है अब लतो की बीछे उनको दो विसवकी छूट जमीन में दी जाती है - दूसरे लउईनी नर

आधावल्कि आधेसेनी कुछजियादा हिस्सालेतेहैंज
मीदरलोगपटवारियोंकेपेचदरपेचहिस्साबकिताब-
औरतहसीलकरनेवालोंऔरइजारदारोंकीसखतीऔर
रकमासेवायमलबाबगेर:सेऐसेलूटेजातेहैंकिन:
उनकेतबपरकपड़ासावितरहताहैऔरन:पेटकोअ
च्छीतरहरोटीमिलतीहैजबदेरवोजबमरेमरेपुकारतेहैं
मिवाजइसकेवेठवेगारऔरराजकादंडउनपरऐसा
लगाहोताहैकिजिससेउनकोनदिनचैनमिलताहै-
औररातकोऔरजबराजकेऊपरकोईगैरमाभूलीख
रचआफरताहैतोवहजमीदारोंऔरकाश्तकारोंसेव
सूलकरलियाजाताहैऔरइसपरजीजमीदारऔरका
श्तकारकीविरसियतयानीबापोहीजमीनकेऊपरकु
छनहींहैराजकोअस्वतियारहैचाहैजमीदारयाकाश्त
कारकोखेतीकरनेदेऔरचाहेनकरनेदेजमीदारकोवि
रासतकाहकजरानहींपहुंचता =

१०१

बाजीबाजीरयासतोंमेंसुखताबंदोबस्तनीहोचलाहै
मगरजोकिअजीकिसीजगहवहपारनहींपड़ाहैइसवा
सतेअजकीनिसकतकोईरायनहींदीजासकतीमगर-
मीकेसाथहोतीहैकिरीसरेहिस्सेकेजियादानहींलेते-तीसरेमहारावरा
जासाहिबकाआमहुकमहैकिअगरखेतीकमजोरदेखोतोसरकारीहि
स्साजीकमलो-दोथेसीवायकीरकममेंबहुतरकमजमीदारोंसेलीजा
तीहैं-छठेजमीदारोंकेबरवादहोजानेकेखयालकेगांवकोठिकेन
हीदेते-नतीजाइनसबवातोंकायहदेखनेमेंआताहैकिबूंदीकेज
मीदारबहुतआसूदाहैऔरअपनेराजकीशुकरगुजारीइन्तफजों
सेकरतेहैंकिहमबहुतचैनमेंहैंऔररावराजाजीसाहिबहमारेद
रदबुखकोफोरनसुनलेतेहैंऔरहमारीआसूदमीपरजयउर
लाडोतीदेक,औरउदयपुरकेजमीदारोंकोअफसोसहै-

वह जल्द रहे कि अगर मयादी या रक्तकारी सुरक्षा बंधन
 हो जायगा पर शरत यह है कि वह नेक नीयती
 के साथ हो तो रईयत बेशक अमल में हो जावेगी और
 जो सवती के साथ हुआ तो वह सवाम तहसील
 यानी जवाई बवाई कहल रहे कि अगर जमीदार खेती
 करेगा तो राज को भी हासिल देगा नहीं तो खैर उस
 की खेती गई राज का हासिल गया और सुरक्षा बंधे
 वस्तु में ऐसा नहीं हो सक्ता =

१०२

अब रईयत के इन साफ काहल सुनिये कि रईस
 लोग तो खुद खुद सुहाय ले कोरो बरु बुलवा कर उन
 के सुकद मे की तहकी कात करते नहीं हैं अहल कारों की
 अरिजियार होता है कि वे अपने तौर पर उन का फैसला
 कर दें अहल कारों ने अगर किसी पर जुल्म किया और उ
 सकी बहुत ही बहुत दुकार दुर्हतो खुद बरो लतने भी उस
 की किसल मंगवा कर सुनली फिर जो कुछ उन के मंहसे नि
 कला वह गोया तक दीरी हुकम है कि उसकी फिर कहीं अ
 पील नहीं हो सक्ती अजद लोग भी कहते हैं कि रईस
 के पास जाओ =

१०३

जबसे अंगरेजी अमल शरी हुई है अकसर स्यासतो
 में पीवानी फोजदारी की कचेदरियां जो कायम हो गई हैं
 रक्षणा के जात में पुलिस और थानेदारी का इन्तजाम
 जारी हो गया है लेकिन कार्रवाई का कहीं भी क
 नहीं होती क्यों कि अहल तो रईसों का इस तरफ कुछ

ध्यान नहीं होता दोयम रिशवत झुटे को सच्चा और सच्चे को
 झुटा कर देती है कचे हरियो में रजहार नवीन से ले कर हा
 किमतक और सुफसला तमें चपरासी से ले कर थाने
 दार तक सब को रिशवत की चाट लगी होती है और सिवा
 य इस्के रयायत और सिफा रिशकाची रया सतों में
 हुत कुछ रिवाज है कि जिस मुकदमे में एक फरीक अमी
 रहो तो फिर अमीर की सुनते हुये गरीब की कोई नहीं सुन
 ता है यादत गरी रया सतों में अकसर हुआ करती है और
 गारत गरीब का या तो इतत सब बसे दि उनको उसी इतना
 के में कही हिमायत या पनाह मिल जाती है या फोज दा
 रों वालों की गफलत से कि देव कत पर गारत गरीब का पी
 छान ही करते हैं या राज में ही मिला वट बरवने से जैसा कि
 बाजे लोगों का रुचयाल है अकसर पतान ही लगता औ
 र अगर कोई मुजरिम पकडा ची जाता है तो उसको रुच
 ये ले कर छोड़ देते हैं कौद की सजा नहीं देते कि जिस से दूरा
 रे मुजरिमों को हवरत हो कर इन्सिद्दत वास्तत फातव
 बहो चोरी की दारदातों में अकसर ऐसा होता है कि दलेत
 वाल और थानेदार लोग किसी न किसी तदवीर से उसी च
 ववस को कि जिसके चोरी हो जाती है मुलजिम करार दे कर
 राजी नामा लिखवा लेते हैं और चोरों के पकडने और पं
 री के माल को पैदा करने के वास्ते बहुत कम दे ड धूप की
 हैं अगर इतल लोग खुद महनत करके मइकमे वालों वा
 र गुजारी देरवा करें और उनका अपील खुना करें और रज

ले काररवाई हो जाने का जवाब पूछा करें तो हर एक अबतरी
 घरी घरी बंद हो जावे और मातहत हाकिम डर कर का-
 म किया करें :-

और यह जो आपने पूछा कि हमारी रखासतों को रिसा
 इन्तजाम जो हमारे और हमारी रईयत के वास्ते फायदे
 पंदे हो क्यों कर हो सकता है तो इसकी कई सूरतें हैं मगर मैं
 सब जानता हूँ कि वाजी तो आपसे न हो सकेंगी और वा-
 जी आपकी रईयत से और शायद आप लोग खुद न क-
 रोगे उन्हें ले कहवे कौन कौन हैं मैंने कहा इन्तजाम दो
 तरह का होता है एक शरवसी और एक जमहूरी शरवसी
 वह है कि रईयत छोटे और बड़े कामों को खुद दिल लगा
 कर करे और जमहूरी यह है कि रईयत इन्तजाम और ह-
 कूमत के लिये अपनी तरफ से हाकिम और अफसर मुक-
 रर कर दे जैसा कि एमरीका और इंगलिस्थान में हो र-
 हो है मगर यहां दोनों सूरतों का होना मुशकिल है अग-
 रचे आप लोग कदीम से शरवसी हकूमतर रखते हैं मग-
 र बहुत कम उसको घरी घरी कर सकते हैं क्यों कि अब
 लतो खुद आपसाहिबों को कमी खबरदारी और हो-
 शायरी से काम करते नहीं देखा और दूसरे आपके ओह-
 ददार जियादा अरबतियार पाजाने की वजह से कामों
 में आपका हाथ रोक देते हैं

और जिस शर्त की निमत मैंने शायद बंजर बन कर
 नेकाल फजल रखा है वह यह है कि आप सब साहिबगिरी

कर सक दर खास्त इत्तमज्जमूनकी सरकारमें गुजराने कि
 सरकार बतौर कोरट आप वारडिस के जब तक कि हम
 को मंजूर हों हमारी रयासतों का बंदोबस्त करे और यह
 बात आपके खुद खुदवतारी के खयालों जैजाहिरमें ब
 हुतदूर मालूम होती है मगर जो गोर से दे खोतो इत्तमें आ
 प का कोई हरज नहीं है थोड़े ही दिनोंमें आप ची बरद वा
 न, काशी, और विजयानगर के महाराजाओं के साफिक
 दोलत में दे जाओगे इस मिसाल से कहीं यह मत
 समझ लेना कि मिसल उन के फौजदारी और कलक
 टरी के अखतियार आपके हाथ से नीजाते रहेंगे क्योंकि
 आप खुद खुदवतार ही और वे नहीं है जैसा कि मैं पहिले
 ची कह चुका हूँ और सरकारी तौर पर खुस्रि टिकल इत
 जास होने में आपके इत अखतियारों में कनी फारक
 न आवेगा मैं इसकी मिसालें देख चुका हूँ और इस बात
 को आप रूख या दरखो कि अगर हिन्दुस्तानी रयासतों
 में कोई बरस और ची यही वे इत्तजामी रही तो एक नए
 दिन सरकार को इसमें हाथ डालना पड़ेगा किसलिये
 कि राजकाजमें आज कल आप साहिबों की तंदही न
 करनेसे इस किरम की रायें बहुत सी दी जाती हैं कि सर
 कार हिन्दुस्तानी रईसोंसे फौजदारी के अखतियार लेले =
 १०१ उन्हें ने कहा कि यह तो कबीरजी कह गये हैं तुम क्या क
 होंगे तुमसे पूछने का तो मत लव यह है कि कोई ऐसी सू
 रत बयान करो कि जो इन सब से अलग हो भेने कहा वह

वह है कि अगर आप खुद अपनी खासती के कामों को पूरा
 पूरा नहीं संभाल सकते हो और तुम्हारे अहल कारनी ऐसे
 ही हैं तो अब दुना सिव यह है कि देसी या परदेसी शरवसों
 में से कई लायक और मूल्य वाले आर नियों को पसंद
 करके सरकार अंगरेजी की किफालत यानी दरमदान
 गी पर अपनी खासतों में दीवान और सुसाहब मुकररेक
 नदी और दी तीन वरस तक उनकी काररवाईयों को गीत
 से देखते रहे अगर इस अरसे में जैसा कि चाहिये वैसा श
 त्त जाय हो जाये तो वह तरहे नहीं तो उनको भी झूफ कर
 के दूसरे शरवसों को जो उनसे नी जियादा अकलम
 द और समझदार हो अपना काम सोसो :-

१२२ राव राजा का हिब बूंदी ने पूछा कि अंगरेजों की किफा
 लत में क्या हिकमत है मैंने अरज की कि अंगरेजों की कि
 फालत से आपका काम अच्छी तरह से अंजाम पायगा
 क्यों कि मुसाहब जब देखेगा कि मुफेरईस और अजंड
 दोनों को जवाब देना है तो वह बहुत बयाल करके का
 म करेगा :-

दूसरा फायदा यह है कि वह आपका खकसान नःक
 रसकेगा और गवन करके नः जगिगा जैसा कि आपसा
 हिबों को परदेसी शरवसों की निरवत इत किसमकी
 शिकायत रहती है क्यों कि जब सरकारी किफालत या
 नी जिम्मेवारी हुई तो वह जैसा आपका कसूर वारहु
 आयेगा ही सरकार करहु आजहां जायगा सरकार उस

को गिरफ्तार करके आपके पास भेज देगी :-
तीसरा फायदा यह है कि आप तो आयुद्वय से कालि
दाना जमा रक्कत का हिसाब समझने और सुस्ती और
बेपरवाई से काम करने की पुछताछ करने में एकदफेद
रगुजरनी कर जावेंगे और अजंट कमी न करेगा जिस
से वह जोर में जाने न पायगा :-

चौथे असली गरज इन्तजाम और सरकार के रगु
शा करने से है जब अजंट लोग बीच में होंगे तो वह शरवस
ऐसी को शिष्ट करेगा कि जिससे आपकी रथासतों की अ
नाद और सरसबज होवे और सरकार नी खुश हो :-

पांचवें इन्तजाम में अजंट की किफालत होने से आपकी
सरकश रईयत और जाई वेंटे की किसी बाल में सरकशी और
रअदुलहु कमी की गुरअतन कर सकेंगे हर काम सहूलिय
- और आपसानी के साथ होता चला जायगा :-

११२

यह तुनकर राया नाहिबने इच्छा कि अच्छा इन्तजाम
किस तौर पर होना चाहिये मैंने कहा कि इन्तजाम जिस तौ
र पर चाहो हो सकता है मगर जो कि अब लमाम हिन्दु
स्तान में अमलदावी सरकार अंगरेज की है और आप
पकी ची उनसे हर हाल में ताहनु कहै इस लिये वह सर
यह है कि राज पूताने की रथासतों का इन्तजाम नी उ
न्हीं कायदों पर होना चाहिये जो कि अंगरेजों के मुल
की इन्तजाम के कायदे हैं इसमें नी कई कायदे हैं रकते
आपका इन्तजाम सरकार के इन्तजाम से गैर न मालूम

दिगा क्यों कियह वस्त्र है कि जो वस्त्र का वादशाह हो
 ता है वह अपने गारहों की उन्नताओं को बहुत कम
 परसंद करतौ जो उसके अन्त नाम और वस्त्रता वस्त्रे गैर
 हों दूसरे जव वस्त्रे अजंत या रज्जि उन्न या खुद गवर्नर
 नवल बहा दुर्ही आपकी क्या कतों में आकर आपके म
 हक्यों और कारवालों को देखना चाहेंगे तो उनकी
 कारवाणियों को मिसल अपने वरताव को देखकर
 बहुत जलदी उनको समझ देंगे और खुशाली होंगे

१०३

अभी यह गुणत गुणत मनहने पार्श्वी कि एक रा
 जासा हिन्दुने करमाया कि अच्छा तुम हमारी रियास
 त का अन्त नाम करसकोगे मैंने कहा हां मगर उस हा
 तसे कि जो मैं अभी अरज कर चुका हूं तब एक दूसरे र
 र्जने कहा कि क्यों साहिब कुल राजपूताने काली ए
 क साथ अन्त नाम करसक्ते हो जो कियह बात उन्होंने
 तानिसे कही थी इतलिते मैंने भी कह दिया कि हां
 करसकता हूं और अगु र मयाद पूछो तो मयाद नी
 कता सकता हूं

१०४

राजाजी ने कहा शाबाश है इतलितलपर मगर य
 ह बहुत सुझा किलजात है कि एक आदमी इतनी बहु
 तरयासती का काम अंजाम देसके कि जिनकी रीतर
 सज और जवान एक दूसरे से अलग ही हो मैंने कहा
 कि अन्त नामके गुर और कायदे सिर्फ दरस बां दही है
 कि जो कोई उनको ठीक ठीक तौरसे काम में लाकर एक

चोटीसी रयास्ततका हरा हरा इत्तजाम करले तो ब
 जी से बड़ी सलतनत का बंदोवस्त जी करसकेगा जै
 रजी कोई कड़ी सलतनत का या लिक हो कर अस्तून
 की पातंदी नरवेगा तो उससे एक होटीसी जागीर ली
 न संचलन केगी राणाजी ने पूछा कि वे अस्तून या
 नी गुरव का है मैंने कहा कि वे इकंत में अरज करने के ली
 यक है मगर मैं उनको आपकी खातिर से जल से में वया
 न करता हूं - सुनिये :-

इत्तजाम और इत्तसाफ के बड़े बड़े अस्तून गिनती के
 ही हैं जिन्की सारवा औंका शुमार नहीं और वे यह हैं :-

१ जहां तक हो सके ऐसीको शिर्श कर कि खरच आम ल
 नी से हर गिज बढने न पावे :-

२ रईयत से रिवानी इतनी लेवे कि उसकी हकदार
 फी न होने पावे :-

३ इत्तसाफ के वक्त इस बात को फरज समझे कि खुजरी
 मके किसीकी रआयत या सिपा दिशाय किसी किसमके
 डरया ला लिच से न छोडे और वे कसूर को हर गिज सजानदे

४ किसी हकदार का हक मारान जानि देवे :-

५ सिपाही की तनरवा महीने की महीने चुका देवे कि जि
 तसे वे लडाई के वक्त जान देने को उजर न कर सके और
 जब वह लडाई हो चुके तो उसकी जां फिशानियों की
 पूरी कदर करे कि जिससे आंयदा को उसका हो सलत
 और जी बढे :-

६ दोस्त को दुःशामन से खेर खाह को बंद खाह से महनती को
आलसी हूँ निकाले

७ शमीरों और बजीरों को उमेद और डर की हालत में लगा
हुआ रखे कि जिस से वे अपनी हद से बाहर कदम न रख सकें =

८ दुःशामन से मुकाबिला पड़े जब उसके बार को तो बचा-
जावे और अपनी बार ऐसी जगह करे कि जहां कारगर हो
जावे और इसमें दुनियां के बहुत से मामलों की कारर
बारीकालरी का शामिल है =

९ अपनी ब्यासत के छोटे और बड़े हालों और अपनी
रईयत के कामों से ऐसा बाकिफ रहै कि हर आदमी उसको
अपना साथी समझे =

१० फसादियो को फौरन गिरफ्तार करे नहीं तो जियादा-
ताकत पाकर जियादा कुब्रत चाहेंगे =

११ जो काम करे वह इनसाफ से और सब लोगों की चला
इंते खाली नही =

१२ जब तक कि खूबतह को क न कर ले किसी मुकदमे
में कोई राय न देवे नहीं तो जुल्म हो जाने का अहत माल है =

११५

वेरा दोस्त राजपूत जो दूर खड़ा हुआ यह सब बातें सु-
न रहा था और जब कली भिरे आंख से लड़ जाती थी
तो खुसकुरा कर स्तिरहला देता था करीब आकर राणाजी
के पुरज करने लगा कि हजूर रात बहुत थोड़ी रह गई वा
राणाजी ने दूसरे राजाओं की तरफ देख कर फरमाया वे
साहिबों अब क्या करना चाहिये और आप के खयाल में कोई

११६ बातची आई जिसपर हसर की याजावे तब एक साहिब बो-
 ले कि हम तो अपनी रयासत का इन्तजाम मुर्वर रव राज सू-
 ताना (अह खिताब राजा अने मुभ को दिया था यानी राज
 ११७ सूताने की तवारीख जानने वाले) को देते हैं बहुत दिनों
 से ऐसे शरब सकी तलाश थी आज खुद ही रस्ते चलते मि-
 लगया राणाजीने फरमाया हम यह चाहते हैं कि इनको
 कुल ही राज सूताने का सुन्त जिम क सर दिया जावे और
 ये कुछ कुछ अरसे हर एक रयासत में रह कर वहां के का-
 मों की हुकस्ती किया करें राव राजा साहिब बूंदी और म-
 हाराजा साहिब जयपुरने कहा कि यह तजबीज बहुत सबू-
 ब है और जब तक अपने ही कौम मजहब और मुल्क के आ-
 दमी मिल सकें गैर मजहब गैर कौम और गैर मुल्क के लो-
 गों को अपने कामों में दाखिल करना सुना सिक नही फिर
 मुजसे पूछा कि क्यों तुम जी इस काम के वास्ते तईयार हो स-
 क्ते हो मैंने कहा हां अगर साहिब रजीउंट राज सूताने की
 किफालत हो जावे तो मैं आप साहिबों की खिदमत युजरी
 को मुस्तेदहू किशनगढ और पाटन के राजा साहिब ने फर-
 माया कि जब तुम हम लोगों को खुद मुखतार बयान क-
 रते हो तो फिर सरकार की किफालत की कौन जरूरत है मैं-
 ने कहा इस किफालत से आपकी खुद मुखतारी में कौ-
 न साखल्ल पडता है अगर आपको यह शक हो कि यह
 सरकार की किफालत इस लिये चाहता है कि हम इसको
 मोहफन कर सकें या कोई कसर हो जाय तो उसके तद

रुकमिरे आयल करनी कडे तो आप इत खयाल को अपने
 दिल से निकाल डाले क्यों कि जैसे अब आप मुझको नौ
 कर दरवनेके खुरबतारहे वैसेही मोहफची जवजी चाहिए क
 वल कते है रहा कसूर का तदाकफ को आप खुद जानते है
 गे कि अंगरेजी सग काम हिन्दुस्तानी रया सतोंकी वनि
 सबत मुजरियोंकी जादातर दुशान है वल्कि आप तो व
 ही बड़ी कताओं पर दरगुजर ची कर सकते हो और वह
 छोटे छोटे मुरमों पर नहीं करती वन्होंने कहा फिर तुमको
 कि फालतसे क्या फायदा मैंने कहा फायदा यह है कि स
 रकार अंगरेज आज हमारे वतन और वक्तकी बादशाह
 है और वक्तके बादशाहके हजूरमें हर एक शरवस इजा
 त और आवरूपैदा किया चाहता है कि जिससे वह दुनि
 यामें मजहूर हो जावे पर मैंनी यही चाहता हूं कि आप
 साहबोंकी रया सतोंको बहतरी और इन्तजायकी हाल
 तमें ला कर खुद ची करकारकी महरबानी हासिल कर
 और आपसाहिवोंकी चीनेकनामी और खुश इन्तजा
 मीका चरचा हिन्दुस्तानसे लंदन तक पहुंचादूं आरिवर
 सब राजाओंने इसपर इत्तिफाक किया कि इस बारे में
 साहिब रजी इंट राजपूतानाकी सलाह लेवें और उसी
 वक्त हुकमनेज कर कई भोतवर आदमियोंको बुलाया औ
 र मेरे साथ करके हकी कतहालनसे इतिलादी और साहब
 रजी इंट नहरपुरके भासरबाने फरमाया हमारे रवाने होते
 ही वह दरबार बरवास्त हो गया और राजा लोग दिनभिक

नेसे पहिले पहिले सारोंकी छां बजे अपने अपने दुल्कोंको
 ११९ खाने हेगये हैं उनकी सवारी और खानगीकी धूमधा-
 मसे चोंक पड़ा और उसी नींदकी हालतमें करवट बदली
 और यह अजीब तमाशा कुछ देरके लिये मेरी आंखोंसे
 गायब हो गया: फकत: ...

१२०

ख़ातमा

इस किताबके बनानेवाले का मतलब अपने नाम और
 रलियाकृतको मशहूर करनेका नहीं है और शक्ती सबब
 से उसने अपना नाम नहीं लिखा वह चाहता है कि जो रू-
 रावियां राजपूतानेके इन्तजाममें पड़ी हुई हैं वे दूर हों और
 उनकी जगह हर एक बयासतमें दुकुरती बहारी और सजा
 ईफले यह किताब राजपूतानेके इन्तजामके वाकत है इस
 में अकसर पुलिटिकल मामलोंके ऊपर बहसकी गई
 है रईसोंके बयालाल और उनके चालचलनके हालत
 मौकेमौकेसे बयान किये गये हैं वे तबारीख और इन्तजाम
 मुल्कके दावमें बहुतसी बातोंके वास्ते आईना आनी
 दरपन हैं इसके बनानेवालेकी कोई अपनी गरज नहीं
 है वल्कि तमाम हालत जैसे उसको मालूम थे वैसेनेक
 निचलीसे लिखे हैं इसपर नीजोकोई बात गणतलिखी
 गई है उसके वाकत मुनसिफ मिजाज शाखसोंसे इसल
 ह और दुकुरतीकी उम्मेद है मगर ऐसे लोगोंका गलती प
 कड़ना और बुकताचीनी करना कि जो रयासतोंकी नई
 और पुरानी अदरती हालत और सारकारी पुलिटिकल

जिम्मेवारी से अच्छी तरह वाकिफ नहीं इस किताब के हक में कोई असर धेदा नहीं कर सकती। क्यों कि इसकी तमाम तहरीरों की बुनियाद तवारीरवी हालात और पुलिटिकल मामलात के ऊपर रखी गई है -

नोट

१२१

यह किताब सन १८७५ मुताबिक सम्वत १९३१ में राजपूताने की मौजूदा हालत पर बनाई गई थी जिसमें अब तक कि १८ बरस का असर होता है बहुत कुछ बहारी और बुझती हो चुकी है और उम्मेद है कि इसी तरह आयदाजी राजपूताना रफतार बहुत कुछ तरकी करेगा और जो बातें कि उस दिन की इस किताब में लिखी हुई हैं वे आखिर की १ दिन पुरानी बातों के नमूने के तौर पर रह जावेंगी और अब सबक छली हालत का मुकाबिला करने की दासते बहुत काम आवेंगी :-

विद्याभूषण यंत्रालय

हमारे यंत्रालय में नागरी फारसी अरबी इत्यादि में सब प्रकारके चिक विल फार्म सस्त और अति शीघ्र छापे जाते हैं। वृषा पूर्वक सञ्चल महाशय हमारे कार्य की एक बार परीक्षा करें। इसके अतिरिक्त इस कार्यालय से सितारह-हिन्दू करनेल सप्ताहिक और नगभंशन्दलीष व भारत प्रकाश मासिक पत्र निकलते हैं। अधिक् वतान्त हमसे पूछो मनेजर विद्याभूषणप्रेस भुरदाबाद N.W.P

تقریر خط منظر ہم

خواجہ راجستان حضرت مولانا محمد علی صاحب صاحب القلم اور تاریخ اوس کی نگاری میں چینیہ کی
 جامعہ زاد شاہ شمسیر میں برقیال ناظر نازک خیال مولوی سید محمد صاحب صاحب کلمہ حضرت الرشید
 صاحب مولانا محمد علی صاحب صاحب شہر ٹونک

<p>مفتی فاضل دو لکھنؤ و تاریخ داو ب قوم کو اون سے شرف نکات کو اون سے عزت خوب سے فکس نگاری میں ہر بات ہی انہیں پر لیکل خواب کے لکھنے میں کیا طرفہ کنال کی سب سے بہنو در راجستان و رعایا کے سب سے میں ہر بات کی تھا نہت دو لکھنؤ سفید نگاری میں چینی اب فائدہ ہوگا زاید مست اور غیبی تاریخ میں اس طرح کی بہت شکر ہے اس سبب شہر کی ہر کا ہو قبول</p>	<p>مولوی پر شاہی وہ شکر ہے جن کی شکر بخت میں اون کے کیا ناک ہند کہ شکر ناک ناول رقمی اون کی ہے گویا جاگیر زاپو تانہ کے اجال کی اپنی تصویر فکر صاحب سے خود ہند سے اپنی تہمیر مگر اون سب میں جو شکر ہے سب سے شکر پرہ کے کم علم ہی ہر جا میں کے سب بند تاریخ تقریر سے ہے - خواب صداقت تصویر ہند و دولت اقبال زمین دا مست</p>
---	---

اشتہاد

کم واعظم پر شکر کا حکم

ہمارے مطلع میں اردو فارسی - عربی و ناگری وغیرہ کی کتابیں اشہار زمینداروں کے فارم فخر نامے خط
 لکھنے کے کاغذ اور تصویریں وغیرہ ہر رنگ ہر قسم اور ہر وضع کے کاغذ بکنایت نہایت عبات اور صفائی کے ساتھ چھاپا
 جا سکے ہیں۔ شایقین قدر دان فرمائیں۔ اور اس کا زمانہ سے دو اخبار ہی شائع ہوتے ہیں۔ شادہ جنت جکی قیمت ہر
 سالانہ اور اخبار کی مثل جو کہ ایک خط لکھا پر یہ ہر جکی قیمت ہر سالانہ ہے۔ یہ دونوں پر یہ ہر جنت ہر شائع ہوتے
 ہیں۔ نقشہ عند سبب نگار شادہ ماہر شائع ہوتا ہے قیمت ہر خط ہر سالانہ عدم ہے۔ در خواست ہر ذیل براتی
 چاہیے۔

مطلع بدیا ہوشن مراد آباد کوٹھی خاص محلہ ذاب پورہ معرفتہ غیر فتی لکھتا پر شاہ و مطلع ہر شادہ

इस किताबके ऊपर जो राय बलराम मधुर और तु
लसीपुर के राहुलक अथवा के महाराजा श्री स
रदिग विजयसिंघ साहब बहादुर के सी, ऐस, आ
ईने लिखवा कर इनायत कर माई थी उस
का तरजुमा उरदू से हिन्दी में यही किताब
के शुरू में लिखा जाता है और बहयूह है.

यह किताब खान राजस्तान मेरे देरवने में आई इस
के बनाने वाले को जो नाक फियत राजपूताने की रया
सतों के हालात और ईसों के चालचलन से है और जो
लियाकत उसने इस किताब का मजसून पैदा करने में
दिरवलाई है वही सीतारों के लायक है कि अपने को
लाई खुल से बचा कर समने के परदे में जो अच्छा पुरा
हाल था उसको साफ़ तौर पर जतला दिया है और इस
से उनकी नेक नियती और साफ़ दिलीजा हिर है क्यों
कि सच्चा दोस्त और खेर साहब वही है कि जो सच्ची बात
मुँह पर कह देवे और भूखटी बाहवाह करके खराब न करे
अगर कोई खराबी उन खराबियों में से कि जिनका स
पना इस किताब बनाने वाले को आया है किसी रया
सत में किसी वजह से मोजूद हो और उस रयासत के
रईस को उसकी खबर न हो तो अथवा की न है कि वे खुद
ही खबरदार होकर उसको दूर करेंगे.

फिर किताब बनाने वाले के बयानों से साबित हो
ता है कि वे कानून ज्ञान वाले और काम किये हुये-

नीहें उन्होंने जो कुछ इस किताबमें लिखा है वह अगर रवे
 रखा ही से लिखा है तो वे अपनी इस नैक नियती की तारीफ
 के हकदार हैं और तबे बड़े ईश्वर तुम्हें उनकी कदर फारमावेगे :-
 यह किताब हमारे यहां इस वास्ते आई है कि इसके ऊपर
 परायण लिखी जावे जो हमको इस कदर इतिफाक राखे है
 कि कुछ रईसों को चाहे वे राजपूताने के हीं चाहे दूसरे सु
 लकों के, जरूर है कि अपनी जात से रजसत के कामों की
 संचालन करवें और कामदारों के काम देखते रहें कि वह
 परमेश्वर की तरफ से उनको ऊपर फरज है अदालत के वा
 स्ते १ रवाना वक्त मुकर्रिद कर लेवे कि उस वक्त खुद नैक
 रईयत का हुनसाफ़ किया करें और कारदों की कार गुजारी
 और दयानतदारी का इमतिहान यहिले ले लिया करें और
 उनको वे काम दिया करें कि जो उनकी लिखा कत के सा
 फ़िक हीं और फिर उनके हालात को जाहिर और पोशीदा
 तहकीक करत रहें जो ऐसा करेंगे और आप अपने कामों
 को देखते रहेंगे तो तमाम खोट और कसर आपसे आष
 निकलती जावेगी और अहलकार ची हो शायर रहेंगे सा
 लिक की गफारत से बाजे अहलकारों को रईयत के ऊपर
 जुल्म और जादती करने का सैका मिल जाता है और जब
 मालिक खुद सुनेगा तो फिर कोई किसी पर जुल्म नही कर
 सक्ता और न कोई बद इन्त जासी और वैबन्दो वस्ती उन
 की रयासतों में ही सक्ती है दाना लोगों ने कहा है कि नोक
 रोंको ऐसी हालत में रखें कि बिडर हो जावें और काम में

गफलतनकरे और हकवाजी करने से बूंह न छोड़े :-

दूसरे रिशवत बगेर की अच्छी तरह से मौजूफ कर दें-
कि जिन कामों में मौजूफ कर देना सबके नज़दीक जायज़ है
और यह सब काम रियासत के सियासत से हुलाफ़ पर च
ले हैं जो अपने ऊपर सियासत (शासन) न करके गफल
त और आरामत लवी से रह्यत और मोकरो के हाल से
खबरदार न रहेगा वह हूलदों पर क्या सियासत करेगा :-

अब रही यह बात कि इन साफ़ और अदालत के वास्ते
कौन सा तरीका और कानून फसंद किया जावे सो देखना
चाहिये कि इन्तजाम की ३ सूरीतें हैं :-

१. कानून के मुताबिक चारेअं २. रिवाज मुल्क के मुताबिक
गरेजी हो चारै शास्त्र वयौरा ३. रिवाज कौम के बयूजिब

रिवाज मुल्क और कौम का लिहाज अंगरेजी कानून में
जी रखा गया है सो अपने मुल्क और अपनी कौम के रिवा
ज की तरफ़ जियादान ज़रूर रवनी चाहिये और अपनी रह्य
यत के मुकदमे उसी के न्यातजात के पंचदुतर फारजामे
दी से लगा कर पंचायत से फसल कर दिये नाया कौंस
में रह्यत जी राजी रहेगी और बादशाह वक़्त की खुशहो
गा और काम की साफ़ लज़र आवेगा और जो फगडे मज़
हवी मसलों के ऊपर हों तो उन के फसले के वास्ते शरै औ
र शास्त्र काफी हैं अंगरेजी कानून की वन्ही की रयायत रव
ते हैं गरज जो मुकदमा जिस कौम का हो उसका फसलाम
सी के शास्त्र और रिवाज की रूसे कराया जाये :-

ती सरे माल का इन्तजाम तो इसके वास्ते सरकार अ
 गरेजी के पुरवता बंदो बस्त से बहतर और कोई कायदा दि
 रवाई नहीं देता है सो यह अपनी रयासतों में भी हो सक
 ता है और जो लोग कि इस काम को अच्छी तरह से जान
 ते हैं वे हर जगह मिल सकते हैं मगर रईयत के ऊपर नरणी
 की नजर रहै और रईयत से हासिल लेने की तैदाजी
 शास्त्र में लिखी है और खुर्दों की सजा भी दरज है फिर रा
 जनीति की किताबों में भी कुछ वाकी नहीं छोड़ है उन
 को देखना और देख कर वाकि फहीना जरूर है और दि
 ल विकाने रख कर अपने मिजाज की संजाल रख वाञ्छी
 रदी कवक्त पर सब कामों की देख जाल करना सुना सि
 व है बरे कसूर की दड़ी सजा और अच्छे काम का इरा इनाम
 देना भी लाजिम है अगर कहीं कुछ दिखायत पैदा हो स
 कती है तो इन्हीं बातों के छोड़ने से ही ती है इस वास्ते अप
 ना चोक स रहना जरूर है और वस फकत :

किताबकी फहरिसतया सूची			
क्र.सं.	मजसून	पृ.सं.	मजसून
१	दी वाचसाचामिका	१	६ सपनादेखनेवालेका तो १३
२	सपनादेखनेवालेकी दिन इत्या	२	७ और विचार फराशीका काम नजानने से और द
३	सपनेका तबाशा और स पनादेखनेवालेकी हा लत और उसके रव्या लात	३	८ डाका उसकी तसलीक सा कि हमारी रयास्तोंमें बड़े २ इलमवालों का इ मतिहान नहीं लिया जाता
४	सपनादेखनेवाला अंधे रेले जजालेकी तरफ र वाने होकर हिन्दुस्तानी खयालातके भाफिक इतने डरते एकाएकी उरोंके पास जा पहुंचा	७	९ राजाओंका आना और रूप नदेखनेवालेका हाडार ज शतसे बूछना और उस का जवाब देना किरयास तोंके इन्तजामकी सत्ताह के वास्ते आये हैं
५	बैलवारोंकी लागडोट और एक हाडा राजपूत की जलमनसी का बया न जिसने सपनादेखनेवा लेको फराशदना कर ए क डैरेके पीछे खड़ा कर दिया	५	६ राजपूत राजाओंके कदी नी भगडोंका बयान जो बलक आपसकी दोस्तीको रोकते हैं
			७ जाना हाडा राजपूतका रागजीकी खबर लेने की और आना रागजी

क्र.सं.	मजसून	क्र.सं.	मजसून	क्र.सं.
	काञ्चीरसबरईसोका उसडेरमें जभाहोना कि जिसके पीछे सपना दे- खनेवाला खड़ा था :-		१६ राणा राजसिंघके खत का बयान :-	१७
१७	बैठक का बयान :-	१६	१७ राजपूतोंने मुगलोंके खुफाबलेमें राणाजी का साधन ही दिया :-	१८
१८	राणाजीकी तकरीर जि समें नीचे लिखे मतल बोपर बहस की गई	१७	१८ अंगरेजोंकी शुकु रगु जारी मरहटोंको निक ल देने के बाबत :-	१९
१९	१९ पृथ्वीराजके खत कुल राजपूतानेके रईस एक जलसेमें कनी जमा हुये थे-	१९	१९ राजपूतोंनेका अंगले जमानोंसे खुका खिला	२०
२०	२० राणाजीके वापदादोंने राजपूतोंकी आमहमद रदी जलाई और राजपू तानेकी आज्ञा दी केलि येरबूब २ जानमासीकी है-	२०	२० तुरकोंके वक्तमें राजपू तोंकी बचा हालत थी :-	२१
२१	२१ राणा प्रतापसिंघकी मज बूती और मुसीबतोंका बयान	२१	२१ मुगलोंने राजपूतोंको महरबानीसे सर कर के कायदा उढाया :-	२२
२२	२२ राणा राजसिंघने का खड़ा को औरंगजेब से बचाया	२२	२२ मुगलोंकी ताबेदारीमें राजपूतोंका बचा हाल हुआ -	२३
		२३	२३ मुगलोंने राजपूतोंको आपसमें जीलड़ाया -	२४
		२४	२४ जयपुर और जोधपुरवा	२५

क्र.सं.	मजसून	क्र.सं.	क्र.सं.	मजसून	क्र.सं.
	लोंनेराया अमरतिंध			खुशामदसे-	
२४	लेअहदकरकेतोउअला	२४	२४	रईसोकीगफलतइ	२४
२५	मरहोनेवाजसुतानिको	२५	२५	तजानकेजावमें-	
	रखनिचौजा-		२६	रईसोकीचाजवलन	२६
२६	खुसलमानोसिमहिलेस	२६		तकाबधान-	
	जसुतोकीक्याहालतथी-		२७	राणाजीकीरायहन्ता	२७
२७	बीसलदेवचोहाणओ	२७		जामकेलियेऔरखन	
	रहखीराजनैउदयसुस			कीतकरीरकारवातमा	
	वालोंकोकिसकिसतर		२८	बूंदीकेरावरजापनाहि	=
	कीवसेसरकिया			बनेराणाजीकीराय	
२८	हखीराजकेवादराजपु	"		कीतादेदकी-	
	तोंपरक्यागुजरी		२९	अलवरकेरावराजास	२९
२९	हालकेआरामआजादी	३०		हिवनेइतिफाकनकिया	
	औरसुगलोंकेजमाने		३०	कोदेकेमहाराजजीनेज	"
	कीसुशकिलोंऔरताबे			बकीताईदऔरतरका	
	वारियोंकाबधान			रीइखलहोनेकीशि	
३०	अबराजोंकीहालतउ	३०		कायतकी-	
	नकेनुजुर्गोंकीहालत		३१	जोयदुरमहाराजासना	३१
	सेअच्छीहै-			हिलनेसकलारकेरसब	
३१	अंगरेजीहाकिमरन्त	३१		रतावकावअनकिया	
	जामकेखुशहोतेहैंज			किजोअनकेफारऔर	
				बाटेकेइसतनेथा-	

क्र.सं.	मजमून	पृ.सं.	सं.सं.	मजमून	पृ.सं.
३९	नवाबनाहिबदोंकनेअं गरेजीसकिनोंकोना खुदाखवनेकीकबाह तोंकेसहूलमेंअपनेका फकेवहीसेउतारेजाने काहवालादिया	३३	४२	पदखुले ^{राज} साहिब नेईसकेनाबालिम रहनेपरसरकारीनिग रानीकाहवालादेकर उरखलाजामकेवाकी नरहनेकेबाबतबइसकी	३६
४०	जयपुरकेमहाबाजासा हिबनेअनजामकोरि जेअंगरेजीकाफदोंको परइकरकेनेलडीकेरा जाकाहवालादियाजि सकीखुदाइलाजामी कीतासीकतादेजाए नासाहिबनेतोथी	॥	४३	सिरोहीकेराबजीनेरा जरारासाहिबकीताई दकरकेअंगरेजीकाय दोंऔरफावनेकेनह नोंपरइलाजामजारी करनेकीराबही	३८
४१	बूंदीकेराबनासाहिब नेअंगरेजोंकीराहपरइ जनेकीरायलेइतिफा फनकरकेअपशाख केअखलपरइलाजाम काअमकरनेकीरवाहि शजाहिरवी	३९	४४	किशनगढकेमहाबा जासाहिबनेमोज्द इलाजामकोहीअच्छ बताया	॥
			४५	एकरईसनेकरनेजु रुकासाहिबकीरगीदक हवालादेकरयहबया नकिंधाकिअंगरेजहिं नुत्तानियोकीलिचा कतोंकोहरगिजमसं दनहीकरते	॥

क्र.सं.	मजहून	क्र.सं.	मजहून	क्र.सं.
४७	एक और रईसने कहा कि हमको अब तारवा लीनेनाएकवदजाएक रससाहे और अंगरेज हमारे काममें क्यों देख लदेतेहैं उनको खुशाम दीतवारीरबलिरबनेवा लेहुमायूंवाइशाहपर लीनेसबबकंधारलेजे नेकाइलजामलवाते हैं और अंगरेजोंको न हीसमझालेकिअहद नामोंके दिखनाफरव्या लोंके मानलोंमें क्यों देखलदेतेहैं-	४८	की तरफसे जवाब देकर जसराखातर करने के लिये बूंदी के रावराजा से कहा कि अब एक सा लिस्तकी जरूरत है--	
		४९	उस वक्त हाडा राज इतने सपना देखनेवाले का जिक्र किया और राणाजीने उसको बुलवाया उसने राजपूत सरदारोंके कायम मिजाज न होने का हवाला देकर जानेमें ढीलकी-	४९
		५०	चहुद्वारा बुलवाया गया और उसको बूट उतारनेकी तकलीफ गई-	५०
४८	वह बात अकसर रईसोंको पसंद आई और मजलिसमें तरह तरह की तकरीरें होने लगी--	५१	बूंदी के रावराजा साहिबने सपना देखनेवालेको अपनी सलाहमें शामिल करनेसे यह दिखले उससे अपनी भीतर	५१
४९	राणाजीने उन लोगोंकी सरकार अंगरेजी	५२		५२

क्र. सं.	मजमूल	क्र. सं.	मजमूल	क्र. सं.	
५२	सम और अंगरेजी का बून की वाकफियत का इमतिहान किया - सपना देखने वाले ने खूनहर रफराजा के रवा नदान की तवारीख ब याज की उनमें से नवा हमे इन्हें अली रवांते गद्दी खेतारे जाने के हा जात को तफसील वार और करीब कयात हो ने के सबब से सब रर सोने बहुत पसंद किया - रही सो की लिजा कल और	५५	जमलदारी और असूल इन्तजाम और कानून और अंगरेजी हाकिमों की का बूनी पाबंदी का कुछ खरब यान किया जिसमें अक- सर रईसों ने ताजी रात हि दकी इजारे हे सियत च रफी के दफों में बहुत गोर की और उसकी वजे सप ना देखने वाले को रवयाल में यह झाई कि शायद अ बवार वालों पर ना लि श करने के लिये गोर क र रहे हैं -	५७	नाइ इसके सपना देख ने वाले ने शरि मोहम्मदी के असूल वयान किले और राजा जाहिल बूंदी ने घुसलवानों के लमत सबु फयानी निदा त को फरमाइश करके सु ना:
५३	रही सो की लिजा कल और	५६	नाइ इसके सपना देख		
५४	रही लमियत का वयान - फिर सपना देखने वाले ने बूंदी के राजा जाहिल की फरमाइश से धर्मशा स्त्र में इमतिहान दिया -	५७	ने वाले ने शरि मोहम्मदी के असूल वयान किले और राजा जाहिल बूंदी ने घुसलवानों के		
५५	फिर सलतनत अंगरेजी के बंदोबस्त और उसकी		लमत सबु फयानी निदा त को फरमाइश करके सु ना:		

संख्या	मन्थन	संख्या	मन्थन	संख्या
५०	रई सोनेयह सब बाते सु नकर सयनादेखने वा लेकी निरुबत अस दुकद मिभे जो दर पेस छा उल दातौर पर युफत गू कर ने और राय देने के वा व तहत मी नान किया और न वा व साह न टों कने उ सकी तारीफ और म द द की	५०	ले फेन ले दो लिये वा यत ल व की सपना देखने वाले ने क हा कि सरकार अपने अ बदनामों पर कायम है और वहरया सतों को व दरुदर अजाद और खुद मुखतार सवा नाहती है	६०
५१	सपना देखने वाले का करवा और उजर	५१	पर लके महा राणी ने रई सोंको गोद लेने का अरव तियार दे दिया है जो और जी रया सतों की मजबू ती का सब बहो गया है	६१
५२	राणाजीने उस जनसे की रूप दाद नयान कर के कहा कि बाजे साहि ब अलवर और कोटे में दरद लहोने के सब न सर कार की तरफ से दिल में धु कड़ पु कड़ कर रहे हैं और रजन की सुरदा लिफत क रीदों का हवाला दे कर स पना देखने वाले से उस	५२	रई सके नांवा लिग हो ने पर जो सरकार की तरफ से रया सत की निगरा नी होती है वह अहदना मों की मनशा दो रिबला फन ही ऐजंटी के हो जाने से रया सतों में बहुत कुछ डुरु स ती हो जाती है	६२

क्र.सं.	सजगून	क्र.सं.	सजगून	क्र.सं.	
६४	जयानजन फवापदों का जो रयासत जयपुर को ऐजंटी के बंदोखत हुये	६५	सरकारने निगरानी की हालतमें कभी किसी रयासतके अंदर अपने कानून और अमलदरा मदको हासिल नहीं किया और न कभी उसकी आमदनी से एक कोड़ी ली-	६६	वैटे नाराज वलिक नारी होगये और सरकार को फसाद दूर करने की मदद से वहां अजंटी लुकर करनी पड़ी
६५	उदयपुर और जयपुर के रईसों ने इस बात की तसदीक और नवानसाहिदों के जे उसकी तशरीह की अगर अलवर के रावराजा साहिब लुप हो गये :-	६६	अलवर के रावराजा साहिब से वहस और उन की रचरावकार रवाईयों का बयान जिससे आई	६७	रावसुरतान बूंदी नाम लेकी भिसाल जो बसवव नाराज दरवनेना ई बेटों के निकाला गया था-
६६	अलवर के रावराजा साहिब से वहस और उन की रचरावकार रवाईयों का बयान जिससे आई	६७	कोटे के महारावजी से वहस और उन की गफलत और बद्धस्त जामियों का जिद जिससे सरकारने उन की रयासतमें एक हिंदु राजा की युंत जिय मुकरे कर दिया और महारावजी अजंटी अपने आपकी बेदरबलस भक्त कर रयासत के कार्यों से हाथु रेंचें बंदे-	६८	

क्र.सं.	मजमून	पृ.सं.	क्र.सं.	मजमून	पृ.सं.
७०	रयासतकोटेकीहलत औरसरकारकीइनायत काबयान	६९		जसमेंरयासतकोटेकीब दहन्तजामीकाबयान- औरवहांकेअहलकारों कीतारीफजिन्होंनेधो कादेकरसाहिबरजीडं टकेखरीतेकामजमून कुछकाकुछमहाराजकी कोसमझादिया-	
७१	महाराजकीनेपाटणकी बाबतअपनाकदीमीगि हनाछेडाऔरमहाराजा पाटनकोबहालतलाब लदीसरकारसेअहदना मेकोखिलाफइजाजत होजानेकेबाबतवहस कीजिसमेंदरअसलम हादवजीकीतरफसेब डीबफलतहुईहै-	७१	७४	ईसोंकेइबुदकामनक रनेऔरउनकेअहल- कारोंकेजियादाअरब तियारपाजानेकीबजू हातकाबयान-	७९
७२	महाराजापाटनसेवहस गोदलेनेकेसामलेमेंऔ रजालमसिंधकीविरास तकीनजरसानीऔरउ समेंसरकारीकिफालत केबेजाहोनेकीशिकायत-	७२	७५	जयपुरकीकोन्सलके बाबतलोगोंकेखयाला त	८१
७३	मोजूदाइन्तजाधकोपसं दकरनेवालोंसेवहसऔर	७६	७६	रयासलोंकाइन्तजाम दुरुस्तीकेकाविलहैऔ रवहलगातारफेरफार होनेसेविगडगयाहै-	८१
			७७	अगलेराजधूतलाय कऔरबंदोबस्तकरने	८२

क्र.सं.	यत्न	क्र.सं.	मजहून	पृ.सं.
	वाले होते थे जैसा कि चंद कवी और राजल समरसी की साहित्यद्विरी और हिफत अमली की तारीफ लिखता है -	७२	ओहदेदार जी लिया कल वाले नहीं होते वे सिर्फ महर बानी से बड़े बड़े ओह दे पाजाते हैं :-	७४
७५	रयासतों के इन्तजाम में मुगलों और मरेयों की देखा दे रवी से बहुत सी उलट फेर हो गई है -	७३	मोरुती जागीरदारों की ओलाद वे फिकरी की वजह से वे इल्म रह कर राज के कार्यों में खलल डालती हैं -	७५
७६	राजहस्ताने में जितनी लकलीद (देखा दे रवी) अंगरेजों की फाज के मामलों में हुई है उतनी मुलकी इन्तजाम के बाब में नहीं हुई -	७४	महानों को काम देने के उकसान :-	७६
७७	मोजूदा इन्तजाम की कैफियत -	७५	राजहस्ताने में ओहदेनी लाभ होते हैं :-	७७
७८	राजालोगरे रामे पड़क र वे इल्म रह जाते हैं उनमें राजसंजा लले और इन्तजाम करने की लया कत बहुत कम होती है -	७६	राजहस्ताने में रिशवत आग तोर पर ली जाती है -	७८
		७७	जयपुर के ओहदेदारों की रिशवत पूजा की वक्त ही जाती है -	७९
		७८	भारती रफतरी से राज इताने के इन्तजाम में खतरा निशः	८०
		७९	राजहस्ताने किमें कैमिस	९०

क्र. सं.	मजसून	क्र. सं.	मजसून	क्र. सं.
	लखने और हुकम देने का बयान	१०	करनल किटिंग साहिब और करनल पेली साहिब राजहमाने के पोलिटि कलदफतरों की हिंदी हर मोमें सुनत किल कर ना चाहते है-	१३
९०	लखधीर सिंघ की नकल	१०	रयासतों के कानून-	१३
९१	बाकुर समदर कर लका कोल-	११	रयासतों की तहसील की रक रावियां-	१४
९२	एक और बाकुर साहिब की गलती फारसी लफ्त जके न लमजने से-	११	बुरखता इराजाम का बयान	१६
९३	अदालतों में हिन्दी दफतर होने और वे इलमहा किमों के बदल दिये जाने की राय-	११	इल साफ का हारत	१७
९४	डिग्री के बाहुष की नकल	१२	दीवानी और फौजदारी अदालतों और उन की कारर वाहियां-	१८
९५	जोधपुर के एक हाकिम की नकल	१२	लुटेरों को दूरी सजान ही मिलती	१९
९६	राणा साहिब ने एक फरेवर राजने के सबब से अपने दफतरों की फारसी तहरीर भोड़ फ कर दी	१३	चोरी के कुछ मोमें चरबी तरह से तहकीकात नहीं होती-	२०
९७	गवरनमेंट की हिन्दी दफतर रखना चाहती है-	१३	रयासतों के इन्तजाम की बाबत मरावरा कि	२१

क्र.सं.	व्यंजन	क्र.सं.	क्र.सं.	व्यंजन	क्र.सं.
	उनमें जियादातर अब तरियों के हो जाने से अंगरेजी दरबल हो जाने का अंदेश है - " " " "		११	राजाजीका सवाल का मत तरी के इन्तजाम के और उसके जमाने में हुजारा अंगरेजी इन्तजाम की पैरवी की राय और खयाल उन वस्तु हात के कि जिनसे अंगरेज खुश हो सकते हैं - " " " "	१२
२०९	हिन्दुस्तानी ईशों से अंगरेजी के अखतिया रात ले लेने की राय अकसर दी जाती है - " " " "	१०			
१०९	रयासतों का बंदोबस्त अंगरेजी इन्तजाम के अखल पर होना चाहिये - " " " "	१००	१११	एक राजा साहिब की दरवास्त सपना देखने वाले से उन की रयासत का इन्तजाम करने के लिये और इस के बाद एक दूसरे राजा साहिब से नोक चोक - " " " "	१०२
१०९	इन्तजाम के लिये लायक शख्सों को छोटना चाहिये = " " " "	१०१			
११०	रईस और इन्तजाम के लीचों के अजंड का कफी ख (जामन) होना सुना भिन्न है - " " " "		११६	राजा साहिब ने सपना देखने वाले की तारीफ की और सपना देखने वाले ने उन के हुकम से मुजकदारी के अखल आनी राजनीती के काय दे बयान किये - " " " "	१०३
१११	अजंड की किफालत के कायदे जो रईस के हुकम में बहुत बहत हैं - " " " "				

मजमून	क्र. सं.	सं.	मजमून	क्र. सं.
<p>१०५ हाडा राज हुतने राजाजी को याद दिजाई किरात ब हुत थोड़ी रह गई है और राजाजी ने सब मह फिरोवा लों काम बसा दरवा फल किया-</p>	१०५		<p>किया किरात बोहे में साहब रजी हुंटर राज हुताने से स लाह पूछें और उसी वक्त सपना देखने वाले को अपने जले आद मियो के सा</p>	
<p>१०६ एकर ईसने कहा कि हम तो सपना देखने वाले को अपनी रखासत का काम है तो है-</p>	१०६		<p>थ उत्तर फरवाने किया और आप दरवार दरवा सत कर के अपने अपने मुज्को को सिधारे-</p>	
<p>१०७ राजाजी ने कहा कि इनको कुल राज हुताने का युक्त जिम बनावै कि हर जगह की अवतरियों को डुरु सत करें वूदी और जय सु रके रईसों ने उनकी ता ईद की तब सपना देखने वाले से पूछा गया उस</p>		१०७	<p>१०७ सपना देखने वाला जून की सवारी की धूम धाम से चोंक पडा और उसकी आंख खुल गई- फलत-</p>	१०७
<p>१०८ आरि रस बराज ओने इस बात पर इति फा क</p>	१०८		<p>१०८ रवातमा</p> <p>१०९ नोट</p> <p>यह १२१ मत लख जो इस सूची पत्र में मिनाये गये हैं किताब में जहां जहां आयें हैं वहां उन के नम्बर पढ़ने वालों को सुचीते के वारते दे दिये हैं मगर गलती से सके २५ तक रह गये हैं-</p>	१०८

